वेदमंत्र अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता समारोह

संस्कृत भाषा में निहित वेद विश्व के श्रेष्ठ साहित्य है - डॉ0 लक्ष्मीश्वर झा
वेदमंत्रों को याद करने के लिये प्रतियोगिता सबसे उत्तम माध्यम है - डॉ0 जीतराम भट्ट
वेद भारतीय संस्कृति के रक्षक हैं - स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

दिनांक 15.11.2018

वेदों का वृहद् इतिहास है। वेद कई पीढ़ियों तक श्रुति के रूप में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक चलते रहे । इस परम्परा में वेद कई पीढ़ियों तक चलते रहे। वेद श्रुति के आधार पर अपने मूल स्वरूप में चलने के बाद लिखित रूप में हमारे समक्ष हैं । वेदों में निहित सभी मंत्र एक वैज्ञानिक सूत्र की तरह कार्य करते हैं । जिनमें बहुत ताकत होती है ।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय, गौतम नगर, नई दिल्ली में आयोजित वेदमंत्र अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता समारोह के मुख्य अतिथि श्री लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ के पूर्व कुलपति प्रो0 लक्ष्मीश्वर झा ने व्यक्त किये । प्रो0 झा ने कहा कि वेदों के माध्यम से विज्ञान में शोध हो रहा है । हमें वेदों पर इतना शोध करना चाहिये कि कोई भी इण्टर नेशनल कम्पनी आ कर हमारे वेद के विद्वानों को अपनी कम्पनी में रोजगार दे । ये समय बहुत जल्दी ही आने वाला है ।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ0 जीतराम भट्ट ने कहा कि संस्कृत भाषा के सम्यग् ज्ञान लिये वेदों का अध्ययन आवश्यक है । वेदों की शिक्षा सामान्य विद्यालयों के छात्रों के लिये भी हर कक्षा में किया जाना चाहिये । चारों वेद अपने आप में विशिष्ट ज्ञान के भण्डार से निहित है । विश्व में कोई भी ज्ञान ऐसा नहीं है जो वेदों में वर्णित न हो । वेद मंत्रों में विज्ञान के अनेक सूत्रों से सम्बन्धी महत्वपूर्ण तथ्यों का समावेश है । इस प्रकार की प्रतियोगिता के माध्यम से प्रतिभागी छात्रों में वेदों के मंत्रों को याद करने की जिज्ञासा बनेगी ।

इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय के संस्थापक आचार्य श्री स्वामी प्रवणानन्द सरस्वती ने कहा कि भारतीय संस्कृति का प्रारम्भ वेदों से ही हुआ है । वेदों में भारतीय संस्कृति के सभी पहलू निहित हैं । दिल्ली संस्कृत अकादमी संस्कृत भाषा में निहित सभी विषयों को जन सामान्य के बीच ले जाने के लिये अनेक कार्यक्रमों का आयोजन करती है जिसमें लागों की सहभागिता मिलती रहती है । अकादमी दिल्ली में संस्कृत को लोकप्रिय बनाने के लिये निरन्तर प्रयास करती रहेगी ।

प्रतियोगिता दो स्तरों पर आयोजित की गई मध्यमा स्तर पर एवं स्नातक स्तर पर। इस अवसर पर

मैत्रेयी महाविद्यालय के पूर्व आचार्या डॉ0 शशि तिवारी ने कहा कि संस्कृत भाषा के प्रचार प्रसार एवं संस्कृत भाषा को सजीव रखने एवं वेदों के लिये समर्पित यह गुरुकुल कई वर्षों से दिल्ली एवं दिल्ली के अतिरिक्त अन्य प्रदेशों में भी संस्कृत गुरुकुलों का संचालन कर रहा है । संस्कृत भाषा की उपयोगिता हर क्षेत्र में है । इसमें निहित ज्ञान विज्ञान का उपयोग सभी लोग कर रहे हैं ।

इस अवसर पर श्री लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ के के आचार्य डॉ0 हरिहर त्रिवेदी ने प्रतियोगिता में आये सभी प्रतिभागियों के प्रति स्नेह व्यक्त किया और उनकी सफलता की कामना की । इस अवसर पर श्री लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ के वेद विभाग के आचार्य डॉ0 रामानुज उपाध्याय ने भी अपने विचार व्यक्त किये । इस अवसर पर अनेक संस्कृत प्रेमी महानुभाव एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे ।

संस्कृत वेदमन्त्रान्त्याक्षरी प्रतियोगिता वर्ष 2018–19
(मध्यमा स्तरीय)
स्थान :– श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय, गौतम नगर, नई दिल्ली–49

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	प्रतिभागी का नाम	प्राप्त स्थान	पुरस्कार राशि
1.	श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय, 119 गौतम नगर, नई दिल्ली–49	रोबिन	प्रथम	2000/–
2.	शारदा देवी संस्कृत विद्यापीठ, तिराहा बेरमखाँ चौक, दरियागंज, नई दिल्ली–02	हरिओम शुक्ला	द्वितीय	1800/–
3.	महर्षि वेदव्यास गुरुकुल विद्यापीठ, आनन्दधाम आश्रम, बक्करवाला मार्ग, नांगलोई–नजफगढ़ रोड, दिल्ली–41	सुदर्शन तिवारी	तृतीय	1500/–
4.	श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय, 119 गौतम नगर, नई दिल्ली–49	दीपांशु आर्य	चतुर्थ	1200/–
5.	श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय, 119 गौतम नगर, नई दिल्ली–49	सुमित कुमार	प्रोत्साहन	500/–

व्याकरण सूत्र अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता समारोह

संस्कृत साहित्य का इतिहास बहुत प्राचीन है – स्वामी महेशानन्द गिरि
संस्कृत भाषा अपने व्याकरणीय गुण के कारण ही विश्व की श्रेष्ठ भाषा है-डॉ0जीतराम भट्ट
अष्टाध्यायी के सूत्रों में व्याकरण एवं भाषा शास्त्र सम्बन्धी अनेक महत्त्वपूर्ण तथ्यों का समावेश है ।- डॉ0 बलराम शुक्ल

दिनांक 17.11.2018

संस्कृत साहित्य का इतिहास बहुत प्राचीन है । इस भाषा के साहित्य को सही स्वरूप देने के लिये संस्कृत व्याकरण का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है । पाणिनि से पूर्व भी संस्कृत साहित्य में व्याकरण के लिये अनेक पद्धतियों का प्रचलन रहा है । किन्तु पाणिनि और उनके द्वारा प्रणीत अष्टाध्यायी ही इसका केन्द्र बिन्दु है । पाणिनि ने अष्टाध्यायी में 3995 सूत्रें की रचना कर संस्कृत भाषा के नियमों को व्यवस्थित किया जिसमें वाक्यों में पदों का संकलन, पदों का प्रकृति, प्रत्यय एवं पदों की रचना आदि प्रमुख तत्त्व हैं । इन नियमों की पूर्ति के लिये धातु पाठ, गण पाठ तथा उणादि सूत्र भी पाणिनि ने बनाये । संस्कृत भाषा को वैज्ञानिक स्वरूप बनाये रखने में संस्कृत व्याकरण का महत्त्वपूर्ण योगदान है । संस्कृत भाषा अपने व्याकरणीय गुण के कारण ही विश्व की श्रेष्ठ भाषा है ।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा श्रीविश्वनाथ संस्कृत महाविद्यालय ,बेला राड़, दिल्ली में आयोजित संस्कृत विद्यालयों के मध्यमा स्तरीय प्रतिभागियों के लिये आयोजित संस्कृत व्याकरण सूत्र अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता समारोह के मुख्य अतिथि महाविद्यालय संरक्षक स्वामी महेशानन्द गिरि ने व्यक्त किये ।

इस अवसर पर संस्कृत अकादमी के सचिव डॉ0 जीतराम भट्ट ने कहा कि संस्कृत भाषा के लिये संस्कृत भाषा का व्याकरण का अध्ययन करना आवश्यक है । महर्षि पाणिनि ने वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत दोनों के लिये अष्टाध्यायी की रचना की। अष्टाध्यायी में लगभग चार हजार सूत्रों में महर्षि पाणिनि ने सम्पूर्ण संस्कृत भाषा के निर्माण की पद्धति बना ली । इन सूत्रों में व्याकरण एवं भाषा शास्त्र सम्बन्धी अनेक महत्त्वपूर्ण तथ्यों का समावेश है । इस प्रकार की प्रतियोगिता के माध्यम से प्रतिभागी छात्रों में संस्कृत व्याकरण के सूत्रों को याद करने की जिज्ञासा बनेगी ।

इस अवसर पर दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के आचार्य डॉ0 बलराम शुक्ल ने कहा कि संस्कृत भाषा के लिये महर्षि पाणिनि की अष्टाध्यायी बहुत महत्त्व की ही । किस प्रकार से शब्द एवं वाक्यों की रचना होती है ये इससे हमें मिलता है । संस्कृत भाषा का साहित्य इतना सुदृढ़ है कि जिसके कारण ये एक वैज्ञानिक भाषा है ।

इस अवसर पर दिल्ली शिक्षा निदेशालय के पूर्व प्रधानाचार्य डॉ0 भास्करानन्द पाण्डेय ने कहा कि पाणिनि व्याकरण के अतिरिक्त संस्कृत के जो अन्य व्याकरण इस समय उपलब्ध हैं वे सभी पाणिनि शैली से प्रभावित हैं। पाणिनि व्याकरण पर आज अनेक भाष्य लिखे गये हैं । संस्कृत का स्वरूप नियमबद्ध होने में संस्कृत व्याकरण का ही योगदान है ।

इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान श्रीविश्वनाथ संस्कृत महाविद्यालय के श्री नारायण धिमिरे को, द्वितीय स्थान श्रीनिवास संस्कृत विद्यालय के श्री धर्मराज दुलाल को, तृतीय स्थान माता सुन्दरी देवी संस्कृत गुरुकुल के श्री सत्य प्रकाश को, चतुर्थ स्थान माता सुन्दरी देवी संस्कृत गुरुकुल के श्री बालकृष्ण आचार्य को तथा पंचम स्थान श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय के श्री नितेश मिश्रा को प्राप्त हुआ । इसके अतिरिक्त 4 प्रतिभागियों को प्रोत्साहन पुरस्कार दिये गये । प्रतियोगिता में कुल 28 प्रतिभागियों ने भाग लिया अन्य प्रतिभागियों को प्रतिभागिता राशि प्रदान की गई। इस अवसर पर अनेक संस्कृत प्रेमी महानुभाव एवं क्षेत्र के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे ।

संस्कृत व्याकरणसूत्रान्त्याक्षरी प्रतियोगिता वर्ष 2018–19
(मध्यमा स्तरीय)

स्थान :– श्री विश्वनाथ संस्कृत महाविद्यालय, सिविल लाइन्स, दिल्ली–54

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	प्रतिभागी का नाम	प्राप्त स्थान	पुरस्कार राशि
1.	श्री विश्वनाथ संस्कृत महाविद्यालय, बेला रोड, सिविल लाईन्स, दिल्ली–54	नारायण धिमिरे	प्रथम	2000/–
2.	श्रीनिवास संस्कृत विद्यापीठम्, 174 रामानुज मार्ग, इब्राहिमपुर, दिल्ली–36	धर्मराज दुलाल	द्वितीय	1800/–
3.	माता सुन्दरी देवी संस्कृत गुरुकुल, नजफगढ़, दिल्ली–43	सत्यप्रकाश तिवारी	तृतीय	1500/–
4.	माता सुन्दरी देवी संस्कृत गुरूकुल, नजफगढ़, दिल्ली–43	बालकृष्ण आचार्य	चतुर्थ	1200/–

5.	श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय, ए-487/3, रघुवीर नगर, नई दिल्ली-27	नितेश मिश्रा	पंचम	1000/-
6.	श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय, ए-487/3, रघुवीर नगर, नई दिल्ली-27	अनिरू) पाण्डेय	प्रोत्साहन-1	500/-
7.	श्री विश्वनाथ संस्कृत महाविद्यालय, बेला रोड, सिविल लाईन्स, दिल्ली-54	ओम प्रकाश अवस्थी	प्रोत्साहन-2	500/-
8.	श्रीमद्दयानन्द वेदार्षा महाविद्यालय, 119 गौतम नगर, नई दिल्ली-49	रोबिन	प्रोत्साहन-3	500/-
9.	श्रीनिवास संस्कृत विद्यापीठम्, 174 रामानुज मार्ग, इब्राहिमपुर, दिल्ली-36	आकाश तिवारी	प्रोत्साहन-4	500/-

संस्कृत वाद-विवाद प्रतियोगिता समारोह

संस्कृत भाषा में जीवन के सभी मूल्य निहित हैं -डॉ0 जीतराम भट्ट

संस्कृत के कार्यक्रमों में भाग लेने से जीवन को नई दिशा मिलती है। -मदन लाल गुप्ता

दिनांक 24.11.2018

संस्कृत भाषा में मानव जीवन के सभी जीवन मूल्य निहित हैं । संस्कृतभाषा भाषा नहीं ज्ञान विज्ञान का स्रोत है । आज सूचनाओं एवं ज्ञान विज्ञान को लोगों तक ले जाने के अनेक माध्यम हैं इन का प्रयोग करते हुय संस्कृत को जन जन तक ले जाना जरूरी है । संस्कृत भाषा में वर्णित ज्ञान विज्ञान को विभिन्न माध्यमों से लोगों तक ले जाना आवश्यक है ।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा शारदा देवी संस्कृत विद्यापीठ, दरियागंज में मध्यमा स्तरीय छात्रों के लिये आयोजित ''संस्कृत वाद-विवाद प्रतियोगिता'' समारोह का शुभारम्भ करते हुये दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव डॉ0 जीतराम भट्ट ने कहा कि महाविद्यालयों संस्कृत विद्यालयों एवं विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के द्वारा प्रतियोगिताओं में आने से यह अहसास होता है कि संस्कृत के भविष्य आगे बहुत उज्ज्वल हैं । प्रतिभागी छात्र-छात्रायें किसी अपने लक्ष्य को सामने रखत हुये संस्कृत में ज्वलन्त विषयों पर अपने विचार प्रगट कर रहे हैं । सफलता के लिये गहरे चिन्तन की जरूरत है। यदि बहुत आगे जाना है तो अपने आप पर विश्वास रखने से बहुत आगे बढ़ने में मदद मिलेगी । प्रतियोगिता में आये सभी प्रतिभागियों को दिल्ली संस्कृत अकादमी की ओर से शुभकामना है। डॉ0 भट्ट ने आगे कहा कि जब आप लक्ष्य निर्धारित करोगे तो तभी उसे पाने का प्रयास करोगे । थोडी सी प्रतिभा

और आपके लक्ष्य को पाने की प्रबल जिज्ञासा परिणाम को सार्थक बना देती है । संस्कृत भाषा के सभी युवा वर्ग के प्रतिभागियों के लिये यह बात याद रखनी चाहिये कि बिना लक्ष्य के सफलता नहीं मिलती है ।

इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये शारदा देवी संस्कृत विद्यापीठ के प्रबन्धक श्री मदन लाल गुप्ता ने कहा कि दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा दिल्ली के युवा छात्र-छात्राओं को संस्कृत से जोड़ने के लिये संस्कृत में अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन कर रही है । आज दिल्ली के महाविद्यालयों के छात्र-छात्राओं के लिये संस्कृत वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है । सभी प्रतिभागी छात्र/छात्रायें अपने अपने महाविद्यालयों का प्रतिनिधित्व कर पुरस्कार प्राप्त करेंगे । इस प्रकार की प्रतियोगिताओं से सभी को लाभ मिला होगा । वाद-विवाद में प्रतिभागियों को अपने विचारों से अन्य प्रतिभगियों को परिचित कराने का अवसर मिलता है । इस प्रकार के कार्यक्रमों के माध्यम से संस्कृत भाषा को मजबूती मिलती है ।

इस अवसर पर दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व आचार्या डॉ0 प्रवेश सक्सेना ने कहा कि संस्कृत भाषा भारत की आत्मा है । भारतीय संस्कृति का आधार, 'संस्कृत' किसी एक धर्म, सम्प्रदाय या क्षेत्र की भाषा नहीं, अपितु सभी धर्मों, जातियों तथा सम्प्रदायों को साथ लेकर चलने वाली, समस्त मानव जाति की भाषा है । संस्कृत भाषा अनेकता में एकता का सन्देश सदियों से देती आयी है । यह भाषा मानव सभ्यता के प्राचीनतम इतिहास से जुड़ी है । प्रतियोगिता में प्रथम स्थान शारदा देवी संस्कृत विद्यापीठ के छात्रों को मिला ।

इस अवसर पर डॉ0 यतीन्द्र कुमार शर्मा, सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे । कार्यक्रम शारदा देवी संस्कृत विद्यापीठ के संयोजन में आयोजित किया गया ।

संस्कृत वाद-विवाद प्रतियोगिता वर्ष 2018-19

(मध्यमा स्तरीय)

स्थान :- शारदा देवी संस्कृत विद्यापीठ, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

दिनांक :- 24.11.2018

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	प्रतिभागी का नाम	प्राप्त स्थान	पुरस्कार राशि
1.	शारदा देवी संस्कृत विद्यापीठ, तिराहा बेरमखाँ चौक, दरियागंज, नई दिल्ली-02	सौरभ पोखरियाल	प्रथम	2000/-

2.	शारदा देवी संस्कृत विद्यापीठ, तिराहा बेरमखाँ चौक, दरियागंज, नई दिल्ली-02	शुभम नौडियाल	प्रथम	2000/-
3.	महर्षि वेदव्यास गुरुकुल विद्यापीठ, आनन्दधाम आश्रम, बक्करवाला मार्ग, नांगलोई नजफगढ़ रोड, दिल्ली-41	हिमांशु मिश्र	प्रोत्साहन-1	600/-
4.	महर्षि वेदव्यास गुरुकुल विद्यापीठ, आनन्दधाम आश्रम, बक्करवाला मार्ग,नांगलोई नजफगढ़ रोड, दिल्ली-41	अनुराग शर्मा	प्रोत्साहन-2	600/-

संस्कृत एवं पाली भाषा का अन्तः सम्बन्ध विषय पर परिचर्चा

भारतीय इतिहास जानने के लिये पाली साहित्य जानना आवश्यक है।- प्रो0 उपेन्द्र राव

पाली प्राचीन भारत की भाषा है पाली का शाब्दिक अर्थ, पवित्र रचना है।

- डॉ0 जीतराम भट्ट

दिनांक 25.11.2018

साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब है। पाली भाषा के महत्त्व को समझते हुये भाषा के विकास की समग्र नीति बनाई जानी चाहिये । आज हम पाली एवं प्राकृत भाषा का महत्त्व जानने के लिये हमें स्वध्याय के साथ सरकार को भी आगे आना चाहिये । ज्यों-ज्यों समाज बदलता जाता है साहित्य भी अपना नया रूप ग्रहण करता जाता है। काल परिवर्तन के साथ भाषा बदल जाती है और भाषा तथा समाज के परिवर्तन के साथ साहित्य बदल जाता है। कइ वर्षों तक पाली भाषा का समाज के साथ बहुत अधिक जुड़ाव रहा परन्तु बीच में कुछ परस्थितियों के कारण पाली भाषा का विकास नहीं हो पाया । 'पाली' भाषा हमारे देश की प्राचीन भाषा है जो संस्कृत भाषा के समान्तर ही है ।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार द्वारा करोलबाग, नई दिल्ली में संस्कृत एवं पाली भाषा का परस्पर सम्बन्ध विषय पर आधारित परिचर्चा के मुख्य अतिथि जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के संस्कृत एवं प्राच्य विद्या विभाग के आचार्य प्रो0 उपेन्द्र राव ने व्यक्त किये । प्रो0 राव ने आगे कहा कि पाली दीर्घकाल तक राज्य भाषा के रूप में भी गौरवान्वित रही है। भगवान बुद्ध ने पाली भाषा में ही उपदेश दिये थे। अशोक के समय में इसकी बहुत उन्नति हुई। उस समय इसका प्रचार भी विभिन्न बाह्य देशों में हुआ। अशोक के समय सभी लेख पाली भाषा में ही लिखे गए थे। भारत में पाली भाषा अपने चरम पर थी लेकिन भारत में बौद्ध धर्म के ह्रास के साथ ही पाली भाषा का ह्रास होना शुरू हो

गया। यह कई देशों जैसे लंका, वर्मा आदि देशों की धर्म भाषा के रूप में सम्मानित हुई।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ0 जीतराम भट्ट ने कहा कि दिल्ली में पाली भाषा के जिज्ञासुओं की मांग को देखते हुये अकादमी ने इस वर्ष दिल्ली में पाली भाषा अध्ययन केन्द्र स्थापित किया । जिसमें अनेक लोगों ने पाली भाषा को सीखा । सभी भाषाओं का पारस्परिक सम्बन्ध होना आवश्यक है । सभी भाषाओं को आपस में जोड़ने के लिये हर भाषा के साहित्य को दूसरी भाषाओं में अनुवाद होना चाहिये जिससे सभी भाषाओं का विकास हो सके । आज इस केन्द्र में दिल्ली में पाली भाषा के जिज्ञासुओं को पाली सीखने का मौका मिला है । डॉ0 भट्ट ने आगे कहा कि 'पाली' भाषा का उद्‌भव गौतम बुद्ध से लगभग तीन सौ वर्ष पहले ही हो चुका था, किन्तु उसका प्रारम्भिक साहित्य का पता नहीं लगता। प्रत्येक भाषा का अपना साहित्य प्रारम्भिक अवस्था में कथा, गीत, पहेली आदि के रूप में रहता है और उसकी रूपरेखा तब तक लोगों को जबानी याद रहती है जब तक कि वह लेखबद्ध हो या ग्रंथाबद्ध न हो जाए। इस काल में पाली भाषा की जैसे उत्पत्ति हुई वैसे ही विकास भी हुआ। प्रारंभ से लेकर लगभग तीन सौ वर्षों तक पाली भाषा जन साधारण के बोलचाल की भाषा रही, किन्तु जिस समय भगवान बुद्ध ने इसे अपने उपदेश के लिए चुना और इसी भाषा में उपदेश देना शुरु किया, तब यह थोड़े ही दिनों में शिक्षित समुदाय की भाषा होने के साथ राजभाषा भी बन गई। 'पाली' शब्द का सबसे पहला व्यापक प्रयोग हमें आचार्य बुद्धघोष की पटकथाओं में मिलता है।

इस अवसर पर प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये गये । इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति एवं पाली भाषा के जिज्ञासु उपस्थित थे ।

एकल श्लोक संगीत प्रतियोगिता समारोह

भारतीय ज्ञान विज्ञान पर शोध कार्य निरन्तर प्रयासरत है । - डॉ0 अर्चिका

अकदमी संस्कृत के युवा वर्ग को हर स्तर पर प्रोत्साहन देने के लिए निरन्तर प्रयासरत है।

-डॉ0 जीतराम भट्ट

दिनांक 28.11.2018

संस्कृत के माध्यम से देश के अनेक छात्र-छात्राएँ अपना भविष्य बना रहे हैं । संस्कृत साहित्य सभी साहित्यों की आत्मा है । संस्कृत एवं संगीत से साहित्य में जीवन का संचार होता है । अभी तक संस्कृत भाषा को याद करने की परम्परा से पढ़ाया एवं पढ़ा जाता रहा है । परन्तु आज के कम्प्यूटर युग में इस पर लोगों का ध्यान हट गया है । जो कि किसी भी विषय के लिये सही नहीं है । संस्कृत को याद

करने की परम्परा को यदि जीवित रखना है तो इस प्रकार की प्रतियोगिताओं का किया जाना आवश्यक है। । इस परम्परा से प्रतिभागियों को श्लोक याद करने की क्षमता बढ़ेगी ।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा महर्षि वेद व्यास संस्कृत विद्यापीठ, आनन्दधाम, नई दिल्ली में मध्यमा स्तरीय ''एकल श्लोक संगीत प्रतियोगिता समारोह'' का शुभारम्भ करते हुए कार्यक्रम की मुख्य अतिथि विश्वजागृति मिशन की उपाध्यक्षा योग ध्यान गुरु डॉ0 अर्चिका जी ने व्यक्त किये । डॉ0 अर्चिका जी ने आगे कहा कि विश्व में भारतीय ज्ञान विज्ञान पर शोध कार्य निरन्तर चल रहा है जिसके परिणाम भी सकारात्मक है । संस्कृत के अनेक क्षेत्र हैं हम एक क्षेत्र को केन्द्रित कर अपना ज्ञान अर्जित करें तो इसमें हम सफल जल्दी हो सकते हैं । सफलता के लिये डर को दिल से हटाना जरूरी है ।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ0 जीतराम भट्ट ने कहा कि दिल्ली संस्कृत अकादमी संस्कृत के युवा वर्ग को हर स्तर पर प्रोत्साहन देने के लिये निरन्तर प्रयासरत है । आप लोग दिल्ली संस्कृत अकादमी की वेब-साईट या अन्य किसी भी माध्यम से अकादमी की गतिविधियों की जानकारी ले सकते हैं । अकादमी व्यक्तिगत रूप से दिल्ली के युवा वर्ग को संस्कृत से जोड़ने के लिये अनेक संस्कृत विषयक कार्यक्रमों का आयोजन करती आ रही है । प्रति वर्ष निर्धारित कार्यक्रमों के अलावा नये कार्यक्रमों को भी शामिल करती है । पिछले वर्ष अकादमी द्वारा युवा छात्रों को विभिन्न विषयों पर अपने विचार रखने के लिये दिल्ली के विज्ञान भवन में तीन दिवसीय संस्कृत सम्मेलन का आयोजन किया था। जिसमें दिल्ली के महाविद्यालयों के संस्कृत के छात्र-छात्राओं ने बहुत बड़ी संख्या में भाग लिया था । इसी प्रकार अकादमी प्रति वर्ष दिल्ली के युवा प्रतिभाशाली प्रतिभागियों को अपन प्रतिभा दिखाने के लिये दिल्ली में अनेक प्रकार की संस्कृत विषयक प्रतियोगिताओं का आयोजन करती है इसी क्रम में आज विद्यालयीय स्तर के प्रतिभागियों के लिये ''एकल श्लोक संगीत प्रतियोगिता'' का आयोजन किया गया है । दिल्ली के लगभग संस्कृत विद्यालयों के 20 छात्र-छात्राओं ने आज इस प्रतियोगिता में भाग लेकर संस्कृत के भविष्य को उज्ज्वल बनाने का प्रयास किया है ।

इस अवसर पर प्रधान श्री दौलतराम कटारिया ने कहा कि संस्कृत विश्व की प्रथम भाषा है। जब विश्व में कोई पढ़ना लिखना ही नहीं जानता था उस समय भारत में वेद लिख दिये गये थे । आज भारतीय ज्ञान विज्ञान एवं दर्शन के लिये और भारतीय मान-सम्मान, गौरव, अस्मिता, संस्कृति, सभ्यता आदि की रक्षा हेतु हमें संस्कृत की आवश्यकता है।

इस अवसर पर डॉ0 भास्करानन्द पाण्डेय ने कहा कि दिल्ली के इस गुरुकुल से शिक्षा एवं अन्य क्षेत्रों में अनेक उत्कृष्ट संस्कृत छात्र दे रहे हैं यहां के संस्थापक स्वामी सुधांशु महाराज जी ने भारत के अनेक प्रान्तों में संस्कृत गुरुकुलों की स्थापना कर रहे है जो संस्कृत शिक्षा के क्षेत्र में

अपना योगदान दे रहे हैं। यह गुरुकुल भारत के उच्चकोटि के शिक्षा संस्थाओं में आता है।

कार्यक्रम महर्षि वेदव्यास संस्कृत विद्यापीठ के सान्निध्य में हुआ। जिसमें आचार्यों का अथक प्रयास रहा। कार्यक्रम के अन्त में सभी विजेता प्रतिभागियों की घोषणा की गई। प्रतिभागियों का पुरस्कार एवं अन्य सम्मान आगामी समय में एक भव्य कार्यक्रम आयोजित कर दिया जायेगा।

इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

संस्कृत एकल श्लोक संगीत प्रतियोगिता वर्ष 2018-19

(मध्यमा स्तरीय)

स्थान :- महर्षि वेदव्यास गुरुकुल विद्यापीठ, बक्करवाला, दिल्ली-41

दिनांक :- 28.11.2018

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	प्रतिभागी का नाम	प्राप्त स्थान	पुरस्कार राशि
1.	महर्षि वेदव्यास गुरुकुल विद्यापीठ, आनन्दधाम आश्रम, बक्करवाला मार्ग, नांगलोई-नजफगढ़ रोड, दिल्ली-41	माधव कुमार प्रजापति	प्रथम	2000/-
2.	श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय, एफ-487/3, रघुवीर नगर, नई दिल्ली-27	शिवम डोबरियाल	द्वितीय	1800/-
3.	श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय, एफ-487/3, रघुवीर नगर, नई दिल्ली-27	लो. रमेश सिंह	तृतीय	1500/-
4.	महर्षि वेदव्यास गुरुकुल विद्यापीठ, आनन्दधाम आश्रम, बक्करवाला मार्ग, नांगलोई-नजफगढ़ रोड, दिल्ली-41	श्याम झा	चतुर्थ	1200/-
5.	शारदा देवी संस्कृत विद्यापीठ, तिराहा बेरमखाँ चौक, दरियागंज, नई दिल्ली-02	शुभम पन्त	प्रोत्साहन	500/-

श्लोक अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता समारोह

संस्कृत भाषा में स्थित ज्ञान विज्ञान विश्व में प्रवाहित हो रही हैं। -हरीश अवस्थी ।

संस्कृत संस्कारों की भाषा है। शिक्षा को संस्कारों जोडना आवश्यक है ।

- डॉ0 जीतराम भट्ट ।

दिनांक 01.12.2018

भारतीय संस्कृति आज भी पूरे विश्व में अपने गौरव और महत्त्व के साथ विराजमान है, क्योंकि इसके मूल में संस्कृत भाषा है । यह सर्वविदित है कि संस्कृत विश्व की अत्यन्त प्राचीन भाषा के साथ सबसे नवीन भाषा है । माता एवं पिता सबके प्रथम गुरु होते हैं। जीवन में एक समय ऐसा होता है जब हम माता-पिता के नाम से जाने जाते है। परन्तु व्यक्ति जब जीवन में धीरे धीरे आगे बढ़ता है तो एक समय ऐसा आता है कि हमारे नाम से माता-पिता को जाना जाता है। यही भारतीय संस्कृति है । संस्कृत भाषा में स्थित ज्ञान विज्ञान की अनन्त धाराएं ऋग्वेद काल से लेकर आज तक अबाध गति से विश्व में प्रवाहित होती रही हैं ।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा श्री महावीर संस्कृत विश्व विद्यापीठ पश्चिम विहार में आयोजित दिल्ली के शास्त्री एवं आचार्य स्तरीय श्लोक अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता समारोह की मुख्य अतिथि पूर्व निगम पार्षद एवं शिक्षाविद् श्री हरीश अवस्थी ने व्यक्त किये ।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ0 जीतराम भट्ट ने कहा कि संस्कृत सस्कारों की भाषा है । शिक्षा को संस्कारों से जोड़ना आवश्यक है । मानव-सभ्यता के आचार-विचार, रहन-सहन, धर्म-कर्म आदि के रहस्यों को भली भांति जानने के लिए संस्कृत परक ज्ञान परमावश्यक है। जीवन में सुयोग्य बनने के लिये किसी एक क्षेत्र में निपुणता प्राप्त कर लेना पर्याप्त नहीं है । शारीरिक एवं मानसिक शक्तियों के साथ बुद्धि का भी विकास होना चाहिये । प्रतिभा विकास होने से व्यक्ति अपने देश का नाम रोशन करता है ।

इस अवसर पर दिल्ली सरकार के कला संस्कृति एवं भाषा विभाग के उप सचिव श्री संजय जैन ने कहा कि संस्कृत शिक्षा समाज का आधार है । भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान विज्ञान को स्रोत है संस्कृत साहित्य में वर्णित ज्ञान । इस पर शोध किया जा रहा है । विज्ञान भारतीय संस्कृति एवं दर्शन पर शोध कार्य कर रहा है ।

इस अवसर पर अकादमी की उपाध्यक्षा डॉ0 कान्ता भाटिया ने कहा कि प्रतिभा विकास के लिये इस प्रकार के कार्यक्रमों के माध्यम से संस्कृत का विकास किया जा सकता है । समय एक गति है, एक बहाव है जो अनवरत बहता रहता है । इस अमूल्य समय की धारा को पहचान कर छात्र सफलता के उच्च शिखर तक पहुँच सकते है।

इस अवसर पर महाविद्यालय के प्रबन्धक श्री रोशन लाल जैन ने कहा कि सफलता आपकी योग्यता को निखारती है, सफलता आपको उत्साहित करती है सफलता आपको सरल लोगों की पंक्ति में बैठाती है सफलता आत्म विश्वास जागता है। यही इस प्रतियोगिता की शिक्षा है।

इस अवसर पर विश्वविद्यापीठ के अध्यक्ष श्री ललन जैन ने कहा कि हमार संस्कृत विद्यालय संस्कृत के युवा छात्रों को शिक्षा देने के लिये निरन्तर प्रयत्नशील है। इस महाविद्यालय में प्रथमा से लेकर शिक्षा शास्त्री तक शिक्षण की व्यवस्था है। छात्रों को निशुल्क छात्रावास की व्यवस्था एवं भोजन व्यवस्था विद्यापीठ के प्रबन्धकों द्वारा किया जाता है।

इस अवसर पर महाविद्यालय की प्राचार्या श्रीमती सुमित्रा ने बताया कि दिल्ली के सभी संस्कृत विद्यालयों को इस प्रतियोगिता के लिये आमंत्रित किया गया था। प्रतियोगिता में दिल्ली के विभिन्न संस्कृत महाविद्यालय के 25 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में संस्कृत श्लोकों की प्रस्तुति की जानी थी। प्रतियोगिता 3 घण्टे तक चलती रही। प्रतिभागियों ने संस्कृत श्लोकों की प्रस्तुतियाँ की।

प्रतियोगिता में प्रथम स्थान श्रीनिवास संस्कृत विद्यापीठ के श्री विनायक शर्मा को, द्वितीय स्थान श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय के श्री अजीत कुमार प्रजापति को, तृतीय स्थान श्री रामऋषि संस्कृत विद्यालय कराला के श्री आशुतोष तिवारी को, चतुर्थ स्थान श्री रामऋषि के श्री शिवाकान्त तिवारी को कराला के श्री चिन्तामणि मिश्र को प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त 2 प्रतिभागियों को प्रोत्साहन पुरस्कार तथा अन्य सभी प्रतिभगियों को प्रतिभागिता पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम श्री महावीर विश्वविद्यापीठ के सौजन्य से हुआ। विश्वविद्यापीठ के सभी संस्कृत आचार्यों का इस कार्यक्रम के संयोजन में पूर्ण योगदान दिया। इस अवसर पर डॉ0 प्रवेश सक्सेना, डॉ0 अनन्त आनन्द वेताल एवं डॉ0 शंकर दत्त पाण्डेय सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

संस्कृत श्लोकान्त्याक्षरी प्रतियोगिता वर्ष 2018-19

(शास्त्री/आचार्य स्तरीय)

स्थान :- श्री महावीर विश्व विद्यापीठ, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-63

दिनांक :- 01.12.2018

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	प्रतिभागी का नाम	प्राप्त स्थान	पुरस्कार राशि
1.	श्रीनिवास संस्कृत विद्यापीठम्, 174 रामानुज मार्ग, इब्राहिमपुर, दिल्ली-36	विनायक शर्मा	प्रथम	2000/-

2.	श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय, ए-487/3, रघुवीर नगर, नई दिल्ली-27	अरविन्द	प्रथम	1800/-
3.	श्री रामऋषि संस्कृत महाविद्यालय, कराला, दिल्ली-81	आशुतोष तिवारी	तृतीय	1500/-
4.	श्री रामऋषि संस्कृत महाविद्यालय, कराला, दिल्ली-81	शिवाकान्त तिवारी	चतुर्थ	1200/-
5.	श्री रामऋषि संस्कृत महाविद्यालय, कराला, दिल्ली-81	चिन्तामणि मिश्र	पंचम	1000/-
6.	श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय, ए-487/3, रघुवीर नगर, नई दिल्ली-27	अजीत कुमार प्रजापति	प्रोत्साहन-1	500/-
7.	श्री विश्वनाथ संस्कृत महाविद्यालय, बेला रोड, सिविल लाईन्स, दिल्ली-54	मेघराज घिमिरे	प्रोत्साहन-2	500/-

संस्कृत सद्य: निबन्ध लेखन प्रतियोगिता समारोह

संस्कृत साहित्य में वर्णित ज्ञान सदियों से समाज को नई दिशा दे रहा है

- डॉ0 कान्ता भाटिया

आज के आधुनिक युग में युवा संस्कृतज्ञों को अपडेट रहना जरूरी है

-डॉ0 जीतराम भट्ट

दिनांक 03.12.2018

संस्कृत भाषा में विज्ञान का अपार ज्ञान सदियों से समाज को नई दिशा दे रहा है । संस्कृत साहित्य में वर्णित ज्ञान की कोई सीमा नहीं है । इस पर गहन शोध एवं चिन्तन की आवश्यकता है । आज की वैज्ञानिक गणना और हमारे संस्कृत सहित्यों में निकाली जाने वाल गणना में कोई अन्तर नहीं है । केवल गणना करने की प्रक्रिया अलग है । संस्कृत भाषा को कोश विश्व की सबसे समृद्ध भाषा कोशों में से है । संस्कृत भाषा का विशाल क्षेत्र है विश्व के अनेक देश में संस्कृत भाषा का पठन पाठन करवा रहे हैं। संस्कृत को विश्व स्तर की भाषा बनाने के लिये हमें और अधिक प्रयास करने की जरूरत है । आज के

आधुनिक युग में शिक्षा के क्षेत्र में अनेक आधुनिक विद्यालय, महाविद्यालय संस्कृत पढ़ने के लिये बच्चों को प्रोत्साहित कर रहे है ।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार द्वारा झण्डेवालान, करोल बाग, नई दिल्ली में संस्कृत विद्यालयों के प्रतिभागियों के लिये आयोजित संस्कृत सद्य: निबन्ध लेखन प्रतियोगिता समारोह की मुख्य अतिथि दिल्ली संस्कृत अकादमी की उपाध्यक्षा डॉ0 कान्ता भाटिया ने व्यक्त किये ।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ0 जीतराम भट्ट ने कहा कि विज्ञान के क्षेत्र में किये जा रहे अनुसंधान कार्यों में संस्कृत में वर्णित ज्ञान विज्ञान का लाभ हमें मिलता है । हमें संस्कृत को बढ़ावा देने की आवश्यकता नहीं हैं बल्कि संस्कृत में लिखित ज्ञान विज्ञान को विश्व के समक्ष आधुनिक रूप से रखने की ओर कार्य होना चाहिये । डॉ0 भट्ट ने कहा कि सेल विज्ञान का वर्णन अगस्त्य ऋषि ने इस पर पहले से ही अपने ग्रन्थों में किया है । चिकित्सा के क्षेत्र में योग को सभी चिकित्सक अपना रहे है इसके माध्यम से बिना मेडिसन के इलाज किया जा रहा है । दिल्ली संस्कृत अकादमी प्रति वर्ष दिल्ली में संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार के लिये अनेक कार्यक्रमों का आयोजन करती है विशेष रूप से युवा प्रतिभागियों को किस प्रकार से संस्कृत से जोड़ा जाय इसी क्रम में आज यह प्रतियोगिता आयोजित की गई । इस प्रतियोगिता में दिल्ली के विभिन्न महाविद्यालयों के प्रतिभागियों ने भाग लिया । इस प्रतियोगिता की विशेषता यह थी कि प्रतिभागी को प्रतियोगिता स्थल पर ही विषय दिया गया । इस पर प्रतिभागी को अपने विचार संस्कृत प्रस्तुत करने होते हैं। हर प्रतिभागी को भाषण का अलग अलग विषय दिये गये । प्रतियोगिता में दिल्ली के संस्कृत विद्यालयों के अनेक प्रतिभागियों ने भाग लिया ।

इस अवसर सेण्ट स्टीफन्स महाविद्यालय के संस्कृत विभाग के आचार्य डॉ0 पंकज मिश्र ने कहा कि भारतीय सभ्यता विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं विशिष्ट सभ्यताओं में गिनी जाती है। इस के मूल में वेद-वेदांग, उपनिषद, दर्शन, महाभारत, रामायण आदि विशाल भारतीय संस्कृत साहित्य का योगदान है । संस्कृत भाषा भारत की आत्मा है । यह भाषा मानव सभ्यता के प्राचीनतम इतिहास से जुड़ी है। सद्य: भाषण में प्रतिभागी की वास्तविक विवेक का पता चलता है यहा पर किस विषय पर निबंध लिखना होता है ।

प्रतियोगिता में प्रथम स्थान श्रीनिवास संस्कृत विद्यापीठ के श्री दण्डपाणि आचार्य को, द्वितीय स्थान श्री रामऋषि संस्कृत महाविद्यालय के श्री अभिषेक कुमार को, तृतीय स्थान श्रीनिवास संस्कृत विद्यापीठ के श्री धर्मराज को, चतुर्थ स्थान शारदा देवी संस्कृत विद्यापीठ के श्री राकेश कुमार झा को प्राप्त हुआ ।

इस अवसर पर डॉ0 क्षेमचन्द्र, धन्जयमणि त्रिपाठी सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे ।

संस्कृत सद्यः निबन्ध लेखन प्रतियोगिता वर्ष 2018-19

(मध्यमा स्तरीय)

स्थान :- दिल्ली संस्कृत अकादमी सभागार, झण्डेवालान, नई दिल्ली-05

दिनांक :- 03.12.2018

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	प्रतिभागी का नाम	प्राप्त स्थान	पुरस्कार राशि
1.	श्रीनिवास संस्कृत विद्यापीठम्, 174 रामानुज मार्ग, इब्राहिमपुर, दिल्ली-36	दण्डपाणि आचार्य	प्रथम	2000/-
2.	श्री रामऋर्षि संस्कृत महाविद्यालय, कराला, दिल्ली-81	अभिषेक कुमार	द्वितीय	1800/-
3.	श्रीनिवास संस्कृत विद्यापीठम्, 174 रामानुज मार्ग, इब्राहिमपुर, दिल्ली-36	धर्मराज दुलाल	तृतीय	1500/-
4.	शारदा देवी संस्कृत विद्यापीठ, तिराहा बेरमखाँ चौक, दरियागंज, नई दिल्ली-02	राकेश कुमार झा	चतुर्थ	1200/-
5.	महर्षि वेदव्यास गुरुकुल विद्यापीठ, आनन्दधाम आश्रम, बक्करवाला मार्ग, नांगलोई-नजफगढ़ रोड, दिल्ली-41	अनुराग शर्मा	प्रोत्साहन-1	500/-

श्लोक अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता समारोह

संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है। - सुखवीर सिंह दलाल

श्लोकों को याद करने से स्मरणशक्ति का विकास होता है। - डॉ0 जीतराम भट्ट

दिल्ली में स्थित गुरुकुलों एवं संस्कृत विद्यालयों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये। - कान्ता भाटिया

दिनांक 08.12.2108

दिल्ली में संस्कृत विद्यालयों एवं गुरुकुलों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये । संस्कृत साहित्य के रक्षा के लिये गुरुकुल शिक्षा के महत्त्व को समझने की आवश्यकता है । संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है। यूरोप एवं भारतीय भाषाओं की जननी है। थोड़े प्रयास से संस्कृत

भाषा को आसानी से सीखा जा सकता है । इस प्रकार की प्रतियोगिताओं का मुख्य उदेश्य संस्कृत भाषा में युवा वर्ग को प्रोत्साहित करना है । संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है ।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली द्वारा श्रीरामऋषि संस्कृत महाविद्यालय कराला में आयोजित ''श्लोक अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता समारोह'' के मुख्य अतिथि दिल्ली विधानसभा सदस्य श्री सुखबीर दलाल ने व्यक्त किये । श्री दलाल ने आगे कहा कि दिल्ली में स्थित गुरुकुलों एवं संस्कृत विद्यालयों की अनेक समस्यायें हैं जिनसे मैं भी परिचित हूँ। मुख्य रूप से गुरुकुलों की परीक्षाओं एवं मान्यता का प्रश्न है उस पर दिल्ली सरकार कोई सकारात्मक व्यवस्था अवश्य करेगी । इसके अतिरिक्त संस्कृत विद्यालयों के लिये जो भी बुनियादी सुविधाओं की आवश्यकता है उस पूरा किया जाना चाहिए ।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ0 जीतराम भट्ट ने बताया कि दिल्ली में 25 संस्कृत विद्यालय एवं गुरुकुल हैं। इन गुरुकुलों के छात्रों के विकास के लिये अकादमी अनेक स्तर पर कार्य करती है। जिसमें इन विद्यालयों के छात्र विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेते हैं। संस्कृत भाषा में रोजगार के अनेक अवसर हैं तथा नये नये अवसर बन रहे हैं केवल प्रयास यह है कि इनको किस रूप में प्रस्तुत किया जाय । हिन्दी के सीरियलों में सभी कहानियाँ संस्कृत साहित्यों पर आधारित होती हैं। उन को नया रूप दिया जा सकता है । दिल्ली के संस्कृत विद्यालय या गुरुकुल प्रबन्धन समिति द्वारा संचालित होते हैं । सभी प्रबन्ध समिति के सदस्य संस्कृत के उत्थान के लिये प्रयासरत हैं।

इस अवसर पर समारोह की अध्यक्षता करते हुए दिल्ली संस्कृत अकादमी की उपाध्यक्षा डॉ0 कान्ता भाटिया ने कहा कि आज शिक्षा और विद्या में अन्तर है वर्तमान शिक्षा पद्धति में हम शिक्षा ग्रहण कर रहे है विद्या नहीं । क्योंकि विद्या के लिये उचित वातावरण की आवश्यकता होती है । शिक्षा अर्थ से शुरू होती है और अर्थ पर ही समाप्त हो जाती है । जबकि विद्या में कल्याण को सर्वोपरि माना गया है । इस प्रकार की प्रतियोगिताओं से यह स्पष्ट है कि दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली के संस्कृत विद्यालयों के प्रति जागरूक है ।

इस अवसर पर विद्यालय के प्रबन्धक श्री जानकी प्रसाद गुप्ता ने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में संस्कृत विद्यालयों से दूरी बनाकर सर्वांगीण शिक्षा प्राप्त नहीं हो सकती है। शिक्षा का पहला लक्षण संस्कारित जीवन होता है। हमारा विद्यालय लगभग 150 वर्षों से संस्कृत के क्षेत्र में कार्य कर रहा है । आजादी से पूर्व से हम संस्कृत गुरुकुल को चला रहे हैं।

इस अवसर पर पूर्व प्राचार्य डॉ0 अशोक डबराल ने कहा कि देश की आजादी में संस्कृत का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है । आज हमारी संस्कृति एवं सभ्यता संस्कृत के कारण ही विश्व में अग्रसर है ।

विश्व हमें जगतगुरु से जाना जाता है । अमेरिका एवं योरोपीय देशों में प्रारम्भिक स्तर से ही संस्कृत शिक्षा देने का प्रयास किया जा रहा है। संस्कृत की सबसे बढ़ी विशेषता है कि हमारे ग्रन्थों में पहले से ही विश्व को एक परिवार के रूप में माना गया है । हम विश्व को मातृ देवो भवः, पितृ देवो भवः का ज्ञान देते हैं ये ज्ञान विश्व की किसी संस्कृति में नही है । देश भक्ति संस्कृत की ही देन है ।

इस अवसर पर डॉ0 भास्करानन्द पाण्डेय ने कहा कि संस्कृत गुरुकुलों का स्थिति को सुधारा जाना चाहिये । वर्तमान प्रमाण पत्रीय शिक्षा लार्ड मैकाले की देन है इस प्रमाण पत्रीय शिक्षा के लिय दिल्ली के संस्कृत विद्यालय जगह जगह मान्यता के लिये भटक रहे हैं ।

इस अवसर पर दिल्ली स्थित संस्कृत विद्यालयों के प्राचार्य एवं शिक्षकों के अतिरिक्त अनेक गणमान्य व्यक्ति उपथित थे ।

संस्कृत श्लोकान्त्याक्षरी प्रतियोगिता वर्ष 2018-19

(मध्यमा स्तरीय)

स्थान :- श्री रामऋषि संस्कृत महाविद्यालय, कराला, दिल्ली-81

दिनांक :- 08.12.2018

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	प्रतिभागी का नाम	प्राप्त स्थान	पुरस्कार राशि
1.	श्री रामऋषि संस्कृत महाविद्यालय, कराला, दिल्ली-81	दीपांशु	प्रथम	2000/-
2.	श्रीनिवास संस्कृत विद्यापीठम्, 174 रामानुज मार्ग, इब्राहिमपुर, दिल्ली-36	लक्ष्मण न्यौपाने	द्वितीय	1800/-
3.	श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय, एफ-487/3, रघुवीर नगर, नई दिल्ली-27	नितेश मिश्रा	तृतीय	1500/-
4.	श्री रामऋषि संस्कृत महाविद्यालय, कराला, दिल्ली-81	रोहित मिश्रा	चतुर्थ	1200/-
5.	श्री रामऋषि संस्कृत महाविद्यालय, कराला, दिल्ली-81	दिवेश शर्मा	पंचम	1000/-
6.	बंसत ग्राम आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, बसन्त गांव, बसन्त विहार, नई दिल्ली-57	पुष्पराज द्विवेदी	प्रोत्साहन-1	500/-

7.	श्री विश्वनाथ संस्कृत महाविद्यालय, बेला रोड, सिविल लाईन्स, दिल्ली-54	श्रवण पाण्डेय	प्रोत्साहन-2	500/-
8.	श्री मोतीनाथ संस्कृत महाविद्यालय, रमेश नगर, नई दिल्ली-15	अमन चमोली	प्रोत्साहन-3	500/-

योग प्रशिक्षण केन्द्र

शरीर, मन और आत्मा का समत्व ही योग है- सेवाराम शर्मा

स्वस्थ जीवन के लिये योग आवश्यक है -डॉ0 कान्ता भटिया

भारत योग दर्शन की जन्म भूमि है - डॉ0 जीतराम भट्ट

दिनांक 11.12.2018

योग भारतीय दर्शन का महत्त्वपूर्ण अंग है । आध्यात्मिक प्रक्रिया को योग कहते हैं। योग की उत्पत्ति भारत में हुई है। शरीर, मन और आत्मा को एक साथ लाने को योग कहते हैं । भारत से बौद्ध धर्म के साथ योग चीन, जापान, तिब्बत, दक्षिण पूर्व एशिया और श्रीलंका में फैला और वर्तमान में सारे विश्व में योग शरीर को निरोग रखने के लिये जाना जाता है । संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी योग के महत्त्व को समझा और इसे हर साल 21 जून को योग दिवस के रूप में मनाया जाने लगा जिसमें विश्व के सभी देश भाग लेते हैं । गीता में कहा गया है कि योग: कर्मसु कौशलम् (कर्मो में कुशलता को योग कहते हैं)। कुछ विद्वान् जीवात्मा और परमात्मा के मिल जाने को योग कहते हैं ।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा अकादमी के सभागार में योग प्रशिक्षण केन्द्र का शुभारम्भ करते हुए पूर्व मुख्य सचिव गोवा श्री सेवा राम शर्मा ने व्यक्त किये ।

इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये दिल्ली संस्कृत अकादमी की उपाध्यक्षा डॉ0 कान्ता भाटिया ने कहा कि योग के माध्यम से हम अपने दैनिक जीवन को सुधार सकते हैं । शरीर स्वस्थ है तो सभी कार्य अपने आप पूर्ण होते हैं । शरीर को निरोग रखने के लिये योग की जरूरत है । भारतीय योग दर्शन की बहुत बढ़ी सीमा है । इसका दर्शन अनन्त है। आज इस केन्द्र के माध्यम से जो लोग शिक्षण लेगे वे योग के महत्त्व को जन सामान्य तक ले जाने का प्रयास करेंगे ।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ0 जीतराम भट्ट ने कहा कि योग को महर्षि पतंजलि ने सूत्रों के रूप प्रस्तुत किया । योग के लिये अलग अलग परिभाषायें दी गई हैं जिसमें पतंजलि योग दर्शन, सांख्य दर्शन, विष्णुपुराण श्रीमद्भगवतगीता आदि में योग का विस्तृत वर्णन मिलता है । योग के 8 अंग

होते हैं । जिसमें यम, नियम, आसन, प्रणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान एवं समाधि हैं । योग से अनेक रोग ठीक हो जाते हैं नियमित योग करने से शरीर में रोग होता ही नहीं है । इस लिये हमें प्रतिदिन योग के लिये अवश्य समय निकालना होगा । अकादमी का इस वर्ष यह प्रयास है कि योग को उसमे निहित सभी विधाओं का ज्ञान प्रशिक्षार्थियों को दिया जाये । भारत योग दर्शन की जन्म भूमि है ।

इस अवसर पर भारतीय योग संस्थान के योगाचार्य श्री रामेश्वर दत्त शर्मा ने योग के बारे में विस्तार से बताते हुये कहा कि इस योग आज हर घर की जरूरत है इसे हर घर में अपनाने की जरूरत है । यदि सदाचार से जीवन व्यतीत किया जाय तो वही योग है । योग को जानने के लिये संस्कृत भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है ।

इस अवसर पर श्री लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ के योग विभाग के निदेशक प्रो0 महेश प्रसाद सिलोड़ी ने कहा कि इस केन्द्र के माध्यम से प्रतिभागियों को योग के विशेष आसनों का प्रशिक्षण दिया गया जो कि नियमित रूप से हमारे जीवन में काम आते हैं और जिसे हम लोगों को आसानी से सीख सकें और दूसरों को भी सिखा सकें । योग को सुचारु रूप से चलाने के लिये इसके निरन्तर अभ्यास की जरूरत होती है । जितना अभ्यास होगा योग में आप उतने ही दक्ष होंगे । प्रतिभागियों को सरल एवं कठिन दोनों प्रकार के आसनों क बारे में बताया जायेगा । इसके अतिरिक्त अष्टांग योग के विषय में विस्तार से चर्चा की गई ।

इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे ।

अक्षर श्लोक प्रतियोगिता समारोह

इस प्रकार के कार्यक्रमों के माध्यम से संस्कृत भाषा को मजबूती मिलती है ।

-प्रो0 भागीरथी नन्द

संस्कृत भाषा अनेकता में एकता का सन्देश सदियों से देती आयी है ।

- डॉ0 जीतरामभट्ट

दिनांक 15.12..2018

संस्कृत भाषा को जन सामान्य की भाषा बनाने के लिये अनेक स्तर पर प्रयास करने की जरूरत है । जिसमें सबसे पहले संस्कृत को अपने मूल स्वरूप में रखने पर काय किया जाना चाहिये। अकादमी पूरे वर्ष दिल्ली में प्रतियोगिताओं के माध्यम से संस्कृत भाषा को युवा वर्ग एवं आम लोगों के बीच ले जाने के लिये निरन्तर प्रयास कर रही है । भारतीय संस्कृति का मूल आधार संस्कृत भाषा एवं उसमें निहित

ज्ञान विज्ञान है । इस भाषा के साहित्य में सभी विषयों का ज्ञान निहित है । संस्कृत साहित्य में अनेक ऐसे विषय है जिसमें आधुनिक विषयों का सम्पूर्ण ज्ञान वर्णित है ।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा वसन्त ग्राम आदर्श संस्कृत विद्यालय, नई दिल्ली में आयोजित अक्षर श्लोक प्रतियोगिता समारोह (मध्यमा स्तरीय) का शुभारम्भ करते हुये श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय) के साहित्य संकाय के विभागाध्यक्ष प्रो0 भागीरथी नन्द ने व्यक्त किये ।

इस अवसर दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव डॉ0 जीतराम भट्ट ने कहा कि संस्कृत भाषा को पुनः अपना गौरव प्रदान करने के लिये युवा वर्ग को संस्कृत के प्रति लगाव होना आवश्यक है । संस्कृत के लिये एक इस प्रकार का दौर चला जिस में कुछ लोगों ने संस्कृत को समाप्त करने के लिये अनेक प्रकार के संसाधानों का प्रयोग किया जिसमें भ्रम फैलाना मुख्य रहा कि संस्कृत में रोजगार नहीं है ये पूजा पाठ की भाषा है संस्कृत आधुनिक भाषा नहीं है । परन्तु संस्कृत के गुरुकुलों एवं संस्कृत के विद्वानों ने विपरीत परस्थितियों में भी संस्कृत की रक्षा की आज पूरा विश्व संस्कृत के महत्त्व को जानता है । आज के समय में प्रतिकूल परस्थितियां हैं इस स्थिति में आप लोग संस्कृत को विश्वस्तर पर ले जाने के लिये जो निरन्तर प्रयास कर रहे हैं वे अपने आप में प्रशंसनीय है । संस्कृत भाषा अनेकता में एकता का सन्देश सदियों से देती आयी हैं । यह भाषा मानव सभ्यता के प्राचीनतम इतिहास से जुड़ी है ।

इस अवसर पर अतिथि के रूप में की दिल्ली संस्कृत अकादमी के सदस्य डॉ0 क्षेमचन्द्र ने कहा कि संस्कृत विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों से प्रति वर्ष अनेक विद्यार्थी संस्कृत भाषा का गौरव बढ़ा रहे हैं । आज के आधुनिक युग में शिक्षा के क्षेत्र में अनेक आधुनिक गुरुकुल संस्कृत पढ़ने के लिये बच्चों को उत्साहित कर रहे हैं ।

इस अवसर पर विद्यालय के पूर्व प्राचार्य आचार्य शिव नारायण झा ने कहा कि संस्कृत को यदि ध्यान से पढ़ा जाय तो यह विश्व की सबसे सरलतम भाषाओं में से एक भाषा है ।

इस अवसर पर वसन्त ग्राम आदर्श संस्कृत विद्यालय, के प्राचार्य श्री अनिरुद्ध मिश्र ने समारोह में आये सभी प्रतिभागियों एवं विद्वानों का स्वागत करते हुये कहा कि संस्कृत की सेवा के लिये जो भी अवसर इस विद्यालय को दिया जाता है विद्यालय उसे पूरा करने में अपना पूरा योगदान देता है ।

इस प्रतियोगिता में दिल्ली के 6 संस्कृत विद्यालयों के प्रतिभागियों ने भाग लिया । इस प्रतियोगिता का संयोजन बसन्त ग्राम आदर्श संस्कृत विद्यालय द्वारा किया गया । इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थिमत थे ।

संस्कृत अक्षर श्लोक प्रतियोगिता वर्ष 2018-19
(मध्यमा स्तरीय)
स्थान :- बसन्त ग्राम आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, बसन्त विहार, दिल्ली-57
दिनांक :- 15.12.2018

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	प्रतिभागी का नाम	प्राप्त स्थान	पुरस्कार राशि
1.	श्री रामऋषि संस्कृत महाविद्यालय, कराला, दिल्ली-81	दीपांशु	प्रथम	1000/-
2.	श्री रामऋषि संस्कृत महाविद्यालय, कराला, दिल्ली-81	रोहित मिश्रा	प्रथम	1000/-
3.	श्री रामऋषि संस्कृत महाविद्यालय, कराला, दिल्ली-81	कृष्ण कान्त मिश्र	प्रथम	1000/-
4.	श्री रामऋषि संस्कृत महाविद्यालय, कराला, दिल्ली-81	अभिशेक कुमार	प्रथम	1000/-
5.	श्री रामऋषि संस्कृत महाविद्यालय, कराला, दिल्ली-81	रोहित मिश्र	प्रथम	1000/-
6.	श्री रामऋषि संस्कृत महाविद्यालय, कराला, दिल्ली-81	संदीप कुमार झा	प्रथम	1000/-
7.	बंसत ग्राम आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, बसन्त गांव, बसन्त विहार, नई दिल्ली-57	पुष्पराज द्विवेदी	द्वितीय	850/-
8.	बंसत ग्राम आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, बसन्त गांव, बसन्त विहार, नई दिल्ली-57	दीपक द्विवेदी	द्वितीय	850/-
9.	बंसत ग्राम आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, बसन्त गांव, बसन्त विहार, नई दिल्ली-57	नितीश ठाकुर	द्वितीय	850/-
10.	बंसत ग्राम आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, बसन्त गांव, बसन्त विहार, नई दिल्ली-57	निलेश कुमार झा	द्वितीय	850/-
11.	बंसत ग्राम आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, बसन्त गांव, बसन्त विहार, नई दिल्ली-57	अंकित दुबे	द्वितीय	850/-
12.	बंसत ग्राम आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, बसन्त गांव, बसन्त विहार, नई दिल्ली-57	लोहित कुमार झा	द्वितीय	850/-

13.	शारदा देवी संस्कृत विद्यापीठ, तिराहा बेरमखाँ चौक, दरियागंज, नई दिल्ली-02	आलोक कुमार	प्रोत्साहन-1	350/-
14.	शारदा देवी संस्कृत विद्यापीठ, तिराहा बेरमखाँ चौक, दरियागंज, नई दिल्ली-02	राकेश कुमार झा	प्रोत्साहन-1	350/-
15.	शारदा देवी संस्कृत विद्यापीठ, तिराहा बेरमखाँ चौक, दरियागंज, नई दिल्ली-02	शुभम नौड़ियाल	प्रोत्साहन-1	350/-
16.	शारदा देवी संस्कृत विद्यापीठ, तिराहा बेरमखाँ चौक, दरियागंज, नई दिल्ली-02	अनुज धास्माना	प्रोत्साहन-1	350/-
17.	शारदा देवी संस्कृत विद्यापीठ, तिराहा बेरमखाँ चौक, दरियागंज, नई दिल्ली-02	पंकज कुमार शुक्ला	प्रोत्साहन-1	350/-
18.	शारदा देवी संस्कृत विद्यापीठ, तिराहा बेरमखाँ चौक, दरियागंज, नई दिल्ली-02	अतुल पाण्डेय	प्रोत्साहन-1	350/-

संस्कृत लघुकथा रचना कार्यशाला

संस्कृत साहित्य में लघुकथाओं का प्रचलन साहित्य को लोकप्रिय बनाता है -

-डॉ0 कान्ता भाटिया

संस्कृत भाषा में विश्व सबसे बड़ा शब्द भण्डार हैं - डॉ0 जीतराम भट्ट

लघुकथाओं के लिखने के लिये अनेक परस्थितियों पर विचार किया जाता है

-डॉ0 आशुतोश माथुर

दिनांक 17.12.2018

संस्कृत विश्व की सभी भाषाओं की जननी है। इस भाषा में दर्शन, व्याकरण के साथ विश्व का आधुनिक विज्ञान निहित है। संस्कृत भाषा से हर किसी व्यक्ति के मन में एक विशेष अनुराग पैदा हो जाता है यह हमारे संस्कृत के प्रति विशेष लगाव को दिखाता है। लघुकथा लेखन के लिये कल्पना शक्ति का विकसित होना जरूरी है। कथाओं के लिये छोटी कहानियों के समान आप अपने चारों ओर घटित हो

रहे घटनाक्रम से प्रेरणा ले सकते हैं । सामान्यत: लघुकथाओं से समाज को शिक्षा मिलती है ।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार द्वारा अकादमी के सभागार में आयोजित ''संस्कृत लघुकथा रचना कार्यशाला'' की मुख्य अतिथि दिल्ली संस्कृत अकादमी की उपाध्यक्षा डॉ0 कान्ता भाटिया ने व्यक्त किये । डॉ0 भाटिया ने आगे कहा कि संस्कृत साहित्य में लघुकथाओं का प्रचलन साहित्य को लोकप्रिय बनाता है । युवा वर्ग को संस्कृत में संस्कृत साहित्य में लघुकथाओं को लिखने का प्रयास करना चाहिये । लघुकथाओं के लेखन से ही संस्कृत के विशाल साहित्य को नया आयाम मिलेगा ।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ0 जीतराम भट्ट ने कहा कि संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है। संस्कृत भाषा में अनेक साहित्यों को लिखा जा रहा है । जिसमें संस्कृत में लघुकथाओं पर विशेष ध्यान देने के लिये अकादमी द्वारा दिल्ली स्तरीय लघुकथा लेखन रचना कार्यशाला आयोजित किया गया। जिसमें भाग लेने वाले प्रतिभागियों को लघुकथा रचना के बारे में अनेक विधियों के बारे में बताया जा रहा है । संस्कृत भाषा में विश्व सबसे बड़ा शब्द भण्डार है। संस्कृत में एक ही शब्द के लिये अनेक शब्द हैं । लघुकथाओं के लेखन से आपकी कुशलता का विकास होगा । मस्तिष्क को परिपक्व बनाने के लिये लघुकथाओं का बहुत बडा योगदान है । लघुकथाओं के लेखन के लिये आप जितनी लघुकथाओं को पढ़ेंगे उतना ही अधिक आप लघुकथा लेखन के लिये विषय वस्तु तैयार करेंगे । आपकी उपस्थिति से संस्कृत साहित्य के लिये युवा वर्ग का उत्साह सहारनीय है ।

इस अवसर पर सेण्ट स्टीफन्स कालेज के संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ0 आशुतोष दयाल माथुर ने कार्यशाला के माध्यम से प्रतिभागियों को कथा लेखन के बारे में बताया कि संस्कृत साहित्य लेखन के लिये संस्कृत में लघुकथाओं के लिखने से बडा कथाकार बना जा सकता है । जब आप लोग संस्कृत में लघुकथा लिखने के लिये तैयार हों तो सबसे पहले उसके लिये आप पहले कथा के लिये आवश्यक तत्त्वों की एक सूची अपने दिमाग में बना कर तैयार रखें । कथा का पात्र एक प्रभाव छोड़ता है, जिसको पाठक वर्ग कथा पढ़ने के बहुत बाद तक याद रखता है । लघुकथा में पात्रों को सामित रक्षा जाता है । लघुकथा लिखने के लिये समय वातावरण एवं आयुवर्ग को भी ध्यान में रखा जाता है ।

इस अवसर पर डॉ0 पंकज कुमार मिश्र ने भी प्रतिभागियों को कथा लेखन के बारे में विस्तार से बताते हुये प्रतिभागियों को कथा के शीर्षक के बारे में विस्तार से बताया कि शीर्षक कथा का मूल होता है । इसी से पाठक पढ़ने के लिये अभिप्रेरित होता है । कथा का कथानक जीवन्त होना चाहिये अभिरुचि कथा का पहलू है । अच्छी कहानी में औचित्य का एक तत्व होता है । कथा का अंत हमेशा सुखान्त होना आवश्यक नहीं है । परन्तु कहानी से सन्देश अवश्य जाना चाहिये ।

इस अवसर पर डॉ0 क्षेमचन्द्र ने भी संस्कृत लेखन के बारे में प्रतिभागियों को अवगत कराया कि छोटी कहानियों की प्रेरणा किस प्रकार मिलती है और किस प्रकार से इसे कहानी के रूप में लिखा जा सकता है । हर कहानी के पीछे एक सन्देश होता है । जो लोगों को आकर्षित करता जिससे लोग बार बार उस कहनी को पढ़ते हैं ।

अकादमी द्वारा आयोजित इस कार्यशाला में 50 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लेकर कथा लेखन के बारे में ज्ञान लिया इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे ।

संस्कृत एकांकी नाटक प्रतियोगिता समारोह

संस्कृत एकांकी नाटकों का समाज को बदलने में बहुत उपयोगी भूमिका है ।

-रवीन्द्र गुप्ता

नाटकों से समाज को नई दिशा दी जा सकती है -डॉ0 जीतराम भट्ट

दिनांक-23.12.2018

संस्कृत साहित्य में प्राचीन काल से ही अनेक महर्षियों द्वारा संस्कृत भाषा में उच्च कोटि के नाटकों का लेखन हुआ है । नाटकों को उच्च कोटि का बनाने के लिये इसमें संगीत, शास्त्रीय नृत्य एवं साहित्य का समावेश बहुत महत्त्वपूर्ण हैं । संस्कृत नाटकों के मंचन एवं लेखन की परम्परा बहुत प्राचीन हैं ।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय रघुवीर नगर नई दिल्ली में आयोजित संस्कृत एकांकी नाटक प्रतियोगिता समारोह के मुख्य अतिथि श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय के अध्यक्ष श्री रवीन्द्र गुप्ता ने व्यक्त किये ।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ0 जीतराम भट्ट ने कहा कि एकांकी नाटकों का अपना अलग महत्त्व है । एकांकी नाटकों से ही नाटकों की ओर अग्रसर हुआ जाता है । एकांकी नाटकों के मंचन के लिये कम पात्रों एवं समय की आवश्यकता होती है । **भास** संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध नाटककार थे । अकादमी द्वारा समाज को संस्कृत साहित्य में निहित विषयों के माध्यम से किस प्रकार से लाभान्वित किया जाय इस विषय में जानकारी के इस संगोष्ठी का आयोजन किया गया । डॉ0 भट्ट ने कहा कि आज समाज को जागृत करने की जरूरत है जिसके लिये संस्कृत नाटकों का सहारा ले कर समाज को नई दिशा दी जा सकती है । एकांकी नाटक किसी नाटक के एक अंक ही चित्रण किया जाना होता है जिससे इसे बड़ी आसानी से लोगों को एक समय में एक संदेश दिया जा सकता है ।

इस अवसर पर दिल्ली शिक्षा निदेशालय के उप शिक्षा निदेशक डॉ0 वीरेन्द्र शास्त्री ने कहा कि एकांकी नाटकों के माध्यम से समाज में बहुत बढ़े स्तर पर सामाजिक चेतना जागृत की जा सकती है । इस

प्रकार समय समय पर अन्य संस्कृत विषयक नाटकों, एकांकी नाटकों, नुक्कड़ नाटकों से लोगों को परिचित कराने का कार्य निरन्तर किया जाना चाहिये । एकांकी नाटकों को सरल भाषा में एवं आधुनिक तकनीकी का प्रयोग करते हुए इन्हें अन्य भाषाओं में भी रूपान्तरित करके मंचित किये जाने की जरूरत है ।

इस अवसर पर डॉ0 शशि तिवारी ने कहा कि भरतमुनि द्वारा विरचित नाट्य शास्त्र 200 ईसवी पूर्व लिखा गया था । नाट्य शास्त्र में 36000 श्लोक जो कि गन्धर्व वेद पर आधारित हैं । गन्धर्व वेद की कोई प्रति वर्तमान समय में उपलब्ध नहीं पर नाट्य शास्त्र के श्लोकों को मौखिक परम्परा से समय समय पर अलग अलग विद्वानों द्वारा लिखे गये । नाट्य शास्त्र में शरीर की गतिविधियों को कई श्रेणियों में समझाया गया है ।

इस अवसर पर हनुमान संस्कृत महाविद्यालय के प्रबन्धक श्री कीमती लाल ने कहा कि दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा दिल्ली के संस्कृत प्रेमियों के लिये संस्कृत एकांकी नाटकों पर संगोष्ठी आयोजन कर लोगों के नाटक की अभिरुचि को पूर्ण करने का कार्य किया है और आज इस विषय में संगोष्ठी में आये विद्वान जो इस क्षेत्र से जुड़े हैं उनके विचारों और अनुभवों को जाने को मौका मिला ।

इस अवसर पर उपायुक्त दिल्ली पुलिस श्री प्रताप सिंह यादव ने कहा कि मेडिकल साइन्स भी यह कह रही है कि संस्कृत थरेपी के माध्यम से रोगियों का उपचार किया जा सकता है । नाटकों में निहित विभिन्न अवतरणों में अलग अलग रसों का निष्पादन होता है जिससे शरीर के विभिन्न अंग काम करने लगते हैं । नाटकों का समाज पर बहुत जल्दी असर पढ़ता है । इस अवसर पर श्री सुनील सूरी एवं श्री रविशंकर तिवारी सहित अनेक संस्कृत प्रेमी महानुभाव उपस्थित थे ।

संस्कृत एकांकी नाटक प्रतियोगिता वर्ष 2018-19
(मधयमा स्तरीय)
स्थान :- श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय, रघुवीर नगर, नई दिल्ली-27

दिनांक :- 22.12.2018

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	प्रतिभागी का नाम	प्राप्त स्थान	पुरस्कार राशि
1.	श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय, एफ-487/3, रघुवीर नगर, नई दिल्ली-27	नितेश मिश्रा	प्रथम	600/-
2.	श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय, एफ-487/3, रघुवीर नगर, नई दिल्ली-27	सुमित तिवारी	प्रथम	600/-

3.	श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय, एफ-487/3, रघुवीर नगर, नई दिल्ली-27	सूरज शर्मा	प्रथम	600/-
4.	श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय, एफ-487/3, रघुवीर नगर, नई दिल्ली-27	मनीष पन्त	प्रथम	600/-
5.	श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय, एफ-487/3, रघुवीर नगर, नई दिल्ली-27	लोकमणी पोखरेल	प्रथम	600/-
6.	श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय, एफ-487/3, रघुवीर नगर, नई दिल्ली-27	मनीष मिश्रा	प्रथम	600/-
7.	श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय, एफ-487/3, रघुवीर नगर, नई दिल्ली-27	नन्द किशोर	प्रथम	600/-
8.	श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय, एफ-487/3, रघुवीर नगर, नई दिल्ली-27	हर्षित पाण्डेय	प्रथम	600/-
9.	श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय, एफ-487/3, रघुवीर नगर, नई दिल्ली-27	प्रशान्त झा	प्रथम	600/-
10.	श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय, एफ-487/3, रघुवीर नगर, नई दिल्ली-27	आशुतोष शर्मा	प्रथम	600/-
11.	श्री मोतीनाथ संस्कृत महाविद्यालय, रमेश नगर, नई दिल्ली-15	दीपचन्द्र कोटिया	द्वितीय	850/-
12.	श्री मोतीनाथ संस्कृत महाविद्यालय, रमेश नगर, नई दिल्ली-15	शिवांकर	द्वितीय	850/-
13.	श्री मोतीनाथ संस्कृत महाविद्यालय, रमेश नगर, नई दिल्ली-15	अमन चमोली	द्वितीय	850/-
14.	श्री मोतीनाथ संस्कृत महाविद्यालय, रमेश नगर, नई दिल्ली-15	रामेन्द्र द्विवेदी	द्वितीय	850/-

15.	श्री मोतीनाथ संस्कृत महाविद्यालय, रमेश नगर, नई दिल्ली-15	सुज्ञांत शर्मा	द्वितीय	850/-
16.	श्री मोतीनाथ संस्कृत महाविद्यालय, रमेश नगर, नई दिल्ली-15	हर्ष वर्धन	द्वितीय	850/-
17.	श्री महावीर विश्व विद्यापीठ, ए-6, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-63	विजय कुमार झा	प्रोत्साहन-1	300/-
18.	श्री महावीर विश्व विद्यापीठ, ए-6, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-63	संजय कुमार झा	प्रोत्साहन-1	300/-
19.	श्री महावीर विश्व विद्यापीठ, ए-6, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-63	अनिल कुमार मिश्रा	प्रोत्साहन-1	300/-
20.	श्री महावीर विश्व विद्यापीठ, ए-6, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-63	आदर्श वशिष्ठ	प्रोत्साहन-1	300/-
21.	श्री महावीर विश्व विद्यापीठ, ए-6, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-63	राहुल शर्मा	प्रोत्साहन-1	300/-
22.	श्री महावीर विश्व विद्यापीठ, ए-6, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-63	राहुल शर्मा	प्रोत्साहन-1	300/-
23.	श्री महावीर विश्व विद्यापीठ, ए-6, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-63	पीयूश	प्रोत्साहन-1	300/-

वास्तु शास्त्र संस्कृत अध्ययन केन्द्र

संस्कृत अकादमी में वास्तु शास्त्र अध्ययन केन्द्र का शुभारम्भ -डॉ० जीतराम भट्ट

संस्कृत साहित्य में निहित ज्ञान विज्ञान एक दूसरे के पूरक होते हैं - वनीशा (वाणी)

दिनांक 26.12.2018

वास्तु शास्त्र संस्कृत साहित्य में निहित पूर्णरूप से निहित भारतीय विज्ञान है । वास्त शास्त्र की उत्पत्ति भारत में हुई है । भारतीय ज्ञान विज्ञान भारतीय शिक्षा केन्द्रों के माध्यम से चीन, जापान, तिब्बत, दक्षिण पूर्व एशिया और श्रीलंका में फैला और वर्तमान में सारे विश्व में प्रचलित होने लगा है। वास्तु पर

विश्व में अनेक प्रकार का शोध कार्य हो रहा है । आधुनिक तकनीकी शिक्षा में वास्तु का महत्वपूर्ण योगदान है । किसी भी स्थान पर कोई निर्माण कार्य करने से पहले उस स्थान के गुण दोषों को वास्तु के माध्यम से दूर किया जा सकता है ।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा अकादमी के सभागार में आयोजित वास्तु शास्त्र संस्कृत अध्ययन केन्द्र का शुभारम्भ करते हुआ दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव डॉ0 जीतराम भट्ट ने व्यक्त किये । डॉ0 भट्ट ने आगे कहा कि ये कक्षायें अकादमी परिसर में सोमवार से शुक्रवार को चलायी जायेंगी। इन कक्षाओं में उच्च कोटि के शिक्षकों के द्वारा प्रतिभागियों को शिक्षण दिया जाता है। इस वर्ष के इन शिक्षार्थियों की संख्या से यह लगता है कि इस अध्ययन केन्द्र के माध्यम से उपस्थित प्रेमियों ने वास्तु शास्त्र के सिद्धान्त को सीखने में जन सामान्य की बहुत रुचि है ।

इस अवसर पर कनाडा देश की निवासी उवं वर्तमान में संस्कृत संवादशाला मंडोली में रहने वाली वनीशा (वाणी) ने कहा कि संस्कृत साहित्यों में निहित अनेक विषय विश्व को नये विज्ञान का ज्ञान देता है । इस में वास्तु शास्त्र भी एक ऐसा ही विषय है कि इस में विज्ञान के सभी तत्त्व निहित हैं जो किसी भी स्थान के विषय में सम्पूर्ण जानकारी देता है । इसी के अनुसार उस स्थान को उपयोग किया जाना चाहिये । मैं एक आर्किटैक्ट हूँ भारतीय वास्तुशास्त्र को जानने के लिये भारत आया हूँ । संस्कृत साहित्य में निहित ज्ञान विज्ञान एक दूसरे के पूरक होते हैं । ज्योतिष, आयुर्वेद, योग, वास्तुशास्त्र आदि विषयों का ज्ञान एक दूसरे में समाहित है । एक विषय का दूसरे विषय से पूर्ण रूप से सम्बन्ध है ।

इस अवसर पर रूस देश से आये जेहरलको आन्द्रे ने कहा कि मैं विगत 10 वर्षों से संस्कृत अध्ययन कर रहा हूँ राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान से नव्यव्याकरण में शोध कर रहा हूँ । मेरे पिता जी ने अनेक संस्कृत भाषा के ग्रन्थों को रूसी भाषा में अनुवाद किया है । संस्कृत विश्व की सबसे समृद्ध संस्कृति की पोशक होने के कारण में इस भाषा को सीखना चाहता हूँ । संस्कृत भाषा पढ़ने के अन्य अनेक कारण भी हैं जिससे के कारण में संस्कृत का अध्ययन कर रहा हूँ ।

इस अवसर पर आचार्य राज कुमार द्विवेदी ने कहा कि शिक्षा के सभी विकल्पों में वास्तु शास्त्र सबसे वैज्ञानिक परक विषय है । वास्तु भारतीय प्राचीन विज्ञान है । इसकी गणना आज भी वैज्ञानिकों के लिये आश्चर्य का विषय है । परन्तु यह आश्चर्य नहीं विज्ञान है । ये हमारे ऋषियों द्वारा गहन अध्ययन के बाद इसे इस रूप में विकसित किया है । वास्तु में कई क्षेत्र हैं भवन निर्माण, दुकान का स्वरूप, फैक्ट्री निमार्ण एवं स्थान का चयन आदि । इसके अलावा भी कई विषयों की वैज्ञानिकता को लिये हुये है जिसमें से कई विषय ऐसे है कि जो अब उपलब्ध ही नहीं है परन्तु यदि शोध किया जाय व पुरातत्व आदि अन्य क्षेत्रों से सहयोग लेकर कार्य किया जाय तो संस्कृत में अनेक विषय मिल जायेंगे ।

इस अवसर पर श्री सुनील जोशी, श्री हिमांशु रतूडी सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे ।

व्यावहारिक संस्कृत अध्ययन केन्द्र

संस्कृत व्यावहारिक अध्ययन केन्द्र से इस क्षेत्र की जानता को संस्कृत सीखने का अवसर है।

- अजेश यादव

संस्कृत भाषा में निहित है हमारी संस्कृति - बिजेन्द्र यादव

जनसामान्य के लिये संस्कृत व्यावहारिक केन्द्र का शुभारम्भ किया गया - डॉ0 जीतराम भट्ट

दिनांक 29.12.2018

भारत को विश्व में भारतीयों के आदर्श मूल्यों के कारण ही जाना जाता है । ये मूल्य हमारी संस्कृति में संस्कृत साहित्यों में निहित ज्ञान से ही आये हैं । संस्कृत में वर्णित ज्ञान विज्ञान से ही भारतीय संस्कृति, संस्कार एवं संस्कृत भाषा विश्व में सबसे प्राचीन एवं आज भी सबसे अहम भाषा हैं । संस्कृत आज हर वर्ग की जरूरत है । हर व्यक्ति को यदि संस्कृत की महानता के बारे में निरन्तर बताया जाय तो समाज में फैल रहे असामजिक वातावरण पर अंकुश आ सकता हैं । संस्कृत के कारण ही हमारी संस्कृति की पहचान है । संस्कृत के बिना भारतीय संस्कृति की बात करना बेकार है । संस्कृत भाषा की विशेषता है कि हर शब्द का अर्थ है ।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा बादली, दिल्ली में आयोजित व्यावहारिक संस्कृत अध्ययन केन्द्र का शुभारम्भ करते हुये मुख्य अतिथि के रूप में दिल्ली विधानसभा सदस्य श्री अजेश यादव ने व्यक्त किये । श्री यादव ने आगे कहा कि दिल्ली सरकार के माननीय मुख्यमंत्री एवं उप मुख्यमंत्री ने दिल्ली के नागरिकों को हर प्रकार की सुविधायें देने का कार्य किया है । जहां शिक्षा स्वास्थ्य बिजली पानी को आम लोगों तक पहुँचाई जा रही वही कला, संस्कृति एवं भाषा को भी आम लोगों तक पहुँचाया जा रहा है । आज बादली गाँव में संस्कृत सीखने वालों के लिये संस्कृत का केन्द्र खोल कर इस भाषा को जन सामान्य तक पहुँचाने का प्रयास किया जा रहा है। ।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ0 जीतराम भट्ट ने कहा कि दिल्ली सरकार दिल्ली की विविध संस्कृतियों से परिचित है सभी भाषाओं एवं संस्कृति के विकास के लिये प्रयासरत है । सरकार हर संस्कृति एवं भाषा के लोगों को उनकी संस्कृति की जड़ों से जोड़ना चाहती है । सरकार भाषा एवं संस्कृति को लोगों तक जोड़ने के लिये निरन्तर प्रयासरत है । संस्कृत साहित्य में निहित ज्ञान एवं सांस्कृतिक चिन्त ही विश्व के लिये भारतीय सबसे बड़ी देन है । अकादमी के इस केन्द्र के माध्यम से संस्कृत भाषा में दैनिक प्रयोग में आने वाले मंत्रों को प्रयोग जब हम करते हैं तो उसके बारे में आम लोगों को पता होता चाहिये कि जो मंत्र या पूजा हम कर रहे हैं उसका अर्थ क्या है । इसी को लोगों तक पहुँचाने के लिये दिल्ली सरकार संस्कृत अकादमी के माध्यम से संस्कृत के ज्ञान के साथ-साथ लोगों को

आम प्रयोग में आने वाले मंत्रों के बारे में ज्ञान हो सके । इस के लिये दिल्ली के सभी विधानसभा क्षेत्रों में संस्कृत शिक्षण केन्द्रों का संचालन किया जायेगा । संस्कृत भारतीय संस्कृति के आधार है । आज जिस व्यावहारिक संस्कृत अध्ययन केन्द्र का शुभारम्भ हो रहा है इस केन्द्र में इस क्षेत्र के सभी संस्कृत सीखने वाले लोग आकर संस्कृत का अध्ययन कर सकते हैं । अकादमी का प्रयास है कि इस प्रकार के केन्द्रों के माध्यम से संस्कृत को अधिक से अधिक लोगों के बीच पहुँचाया जा सके । वर्तमान में संस्कृत को आम लोगों तक ले जाने के लिये अनेक स्तर पर प्रयास किये जा रहे है । अध्ययन केन्द्रों के माध्यम से आम लोगों को संस्कृत के प्रति प्रेरित करना एक श्रेष्ठ कार्य है । इस केन्द्र के माध्यम से सभी जिज्ञासुओं को संस्कृत के पढ़ना लिखना एवं बोलना सिखाया जायेगा ।

इस अवसर पर इस क्षेत्र के नगर निगम पार्षद श्री बिजेन्द्र यादव ने कहा कि आज जीवन मूल्यों को यदि देखा जाय तो ये संस्कृत साहित्य में लिखे ग्रन्थ रामायण एवं महाभारत आदि अनेक ग्रन्थ लिखे गये हैं। इस व्यावहारिक संस्कृत अध्ययन केन्द्र के माध्यम से इस क्षेत्र के सभी शिविरार्थियों को संस्कृत बोलने के साथ साथ क्रियान्वित करने का अवसर मिलेगा। इस केन्द्र के माध्यम से हम दैनिक रूप से जो भी संस्कृत के मंत्रों का प्रयोग करते हैं उसके बारे में इस केन्द्र में समझाया जायेगा कि इस मंत्र का क्या अर्थ है । मुझे आशा है इस क्षेत्र के लोग इस के महत्त्व को समझते हुए केन्द्र से लाभान्वित होंगे।

इस अवसर पर केन्द्र संचालन के लिये स्थान उपलब्ध कराने वाले रॉयल पब्लिक स्कूल के प्रबन्धक श्री पुरुषोतम शर्मा ने कहा कि संस्कृत के प्रचार लिये हर व्यक्ति को अपनी अपनी जिम्मेदारियां लेनी होगी । हम सब मिल कर संस्कृत को आम लोगो तक पहुँचाने का प्रयास करें संस्कृत का जितना अधिक प्रचार प्रसार होगा जीवन मूल्य उतने ही सुरक्षित रहेगे । हमें आशावादी के साथ निरन्तर प्रयास शील रहना चाहिये । मेरा पूरा प्रयास रहेगा कि हम इन दिनों में यहां पर शिक्षण ले रहे सभी प्रतिभागियों को संस्कृत बोला सिखाऊँगा।

इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया जिसमें अनेक गणमान्य व्यक्ति एवं संस्कृत प्रेमी संस्कृत महानुभाव भी उपस्थित थे ।

संस्कृत शिक्षण कार्यशला

संस्कृत भाषा का साहित्य अनेक अमूल्य ग्रन्थों का सागर है- विशेष रवि

इस कार्यशाला में 450 से अधिक संस्कृत शिक्षकों ने अपना पंजीकरण कराया है

-डॉ० जीतराम भट्ट

शिक्षकों को विषय विशेषज्ञों के माध्यम से संस्कृत शिक्षण की नई विधियों से अवगत कराया जायेगा । डॉ० जीतराम भट्ट

दिनांक 01.01.2019

संस्कृत भाषा का साहित्य अनेक अमूल्य ग्रन्थों का सागर है, इतना समृद्ध साहित्य किसी भी दूसरी भाषा का नहीं है और न ही किसी अन्य भाषा की परम्परा अविच्छिन्न प्रवाह के रूप में इतने दीर्घ काल तक नहीं चल पाई है । संस्कृत भाषा अति प्राचीन होने पर भी इस भाषा में शब्द निर्माण की क्षमता सबसे प्रबल है ।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा करोलबाग, नई दिल्ली में दिल्ली के संस्कृत शिक्षकों के लिये आयोजित 'पांच दिवसीय संस्कृत शिक्षण कार्यशाला का शुभारम्भ करते हुये दिल्ली विधानसभा के सदस्य श्री विशेष रवि ने व्यक्त किये । श्री विशेष रवि ने आगे कहा कि दिल्ली सरकार द्वारा दिल्ली में आयोजित किये जा रहे इस इस पांच दिवसीय संस्कृत शिक्षण कार्यशाला में दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा दिल्ली के विभिन्न विद्यालयों में नियुक्त संस्कृत शिक्षकों के लिये विशेष रूप से ये कार्यशाला आयोजित की गई है । इस कार्यशाला में आये सभी संस्कृत शिक्षकों को संस्कृत शिक्षण के नये आयामों से अवगत कराया जायेगा । अपने विद्यार्थी जीवन मैं मैंने संस्कृत को बहुत महत्त्व दिया है । संस्कृत के श्लोकों को याद कर संस्कृत में निहित ज्ञान विज्ञान के आधार पर आज भी जीवन को जीने का प्रयास करता हूँ । जिससे मुझे काफी सफलता भी मिलती है ।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ0 जीतराम भट्ट ने कहा कि संस्कृत शिक्षकों के सर्वांगीण विकास के लिये समय समय पर संस्कृत शिक्षकों के लिये इस प्रकार की कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है । प्रति वर्ष शिक्षा के क्षेत्र में नई नई प्रविधियों का प्रयोग किया जा रहा है । इस प्रकार की कार्यशालाओं के माध्यम से अकादमी संस्कृत शिक्षकों के ज्ञान को नवीन करना चाहती है । इस कार्यशाला में पांच दिनों तक संस्कृत शिक्षकों को विभिन्न प्रकार की संस्कृत शिक्षण की तकनीकियों पर प्रशिक्षण दिया जायेगा कि किस प्रकार से संस्कृत शिक्षा को आधुनिकता से जोड़ा जा रहा है और आप शिक्षक इन तकनीकी माध्यमों का प्रयोग कर छात्रों को लाभान्वित होंगे। अकादमी द्वारा दिल्ली के विभिन्न विद्यालयों में वर्तमान में 50 संस्कृत शिक्षक शिक्षिकायें कार्य कर रहे हैं । इस के लिये इन शिक्षकों के तकनीकी विकास के लिये ये कार्यशालायें आवश्यक है। ।

इस अवसर पर दिल्ली संस्कृत अकादमी की सहायक लेखा अधिकारी श्री भारत भूषण ने कहा कि संस्कृत भाषा के विपुल साहित्य को इतना समृद्ध साहित्य बनाने में अनेक संस्कृत विद्वानों का योगदान है जो अपने त्याग एवं चिन्तन के कारण इस भाषा को इस मुकाम तक ले जा सकें । कार्यशाला में आये सभी शिक्षक-शिक्षकाओं का दिल्ली संस्कृत अकादमी की ओर से स्वागत है । आप को विषय विशेषज्ञों के माध्यम से संस्कृत शिक्षण की नई विधियों से अवगत कराया जायेगा । इस अवसर पर अनेक संस्कृत

संस्कृत शिक्षण कार्यशाला समापन समारोह

शिक्षको को नई ऊर्जा देने का कार्य करती है कार्यशालायें - डॉ0 जीतराम भट्ट

शिक्षकों को विषय विशेषज्ञों के माध्यम से संस्कृत शिक्षण की नई विधियों से अवगत कराया गया । डॉ0 जीतराम भट्ट

दिनांक 05.01.2019

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा करोलबाग, नई दिल्ली में दिल्ली के संस्कृत शिक्षकों के लिये आयोजित 'पांच दिवसीय संस्कृत शिक्षण कार्यशाला, का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारम्भ 01.01.2019 को दिल्ली विधानसभा के सदस्य श्री विशेष रवि द्वारा किया गया था । इस पांच दिवसीय संस्कृत शिक्षण कार्यशाला के समापन के अवसर पर पर दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव डॉ0 जीतराम भट्ट ने कहा कि द्वारा दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा दिल्ली के विभिन्न विद्यालयों में नियुक्त संस्कृत शिक्षकों के लिये विशेष रूप से ये कार्यशाला आयोजित की गई । इस कार्यशाला में आये सभी संस्कृत शिक्षकों को संस्कृत शिक्षण के नये आयामों से अवगत कराया गया । इस पांच दिवसीय कार्यशाला में इन शिक्षकों के लिये अलग अलग विषयों पर नई जानकारी दी गई जिसमें अनौपचारिक चर्चा, संस्कृत माध्यम से संस्कृत शिक्षण, प्रश्न पत्र का प्ररूप एवं आदर्श प्रश्न पत्र, अनुप्रयुक्त व्याकरण, अपठित गद्यांश, पद्यांश, पाठ्यक्रम शिक्षण, संस्कृत में रोजगार आदि विषयों पर अनेक प्रकार की प्रविधियों को बताया गया । प्रायोगिक संस्कृत शिक्षण के प्रकार एवं लाभ, निबन्ध एवं कहानी लेखन आदि पर भी प्रशिक्षण की जानकारी दी गई । जिसके लिये विशेष शिक्षकों को आमन्त्रित किया गया था । डॉ0 भट्ट ने आगे कहा कि मैंने अपने विद्यार्थी जीवन में मैंने संस्कृत को बहुत महत्त्व दिया है । संस्कृत के श्लोकों को याद कर संस्कृत में निहित ज्ञान विज्ञान के आधार पर आज भी जीवन को जीने का प्रयास करता हूँ । जिससे मुझे काफी सफलता भी मिलती है । संस्कृत भाषा का साहित्य अनेक अमूल्य ग्रन्थों का सागर है, इतना समृद्ध साहित्य किसी भी दूसरी भाषा का नहीं है और न ही किसी अन्य भाषा की परम्परा अविच्छिन्न प्रवाह के रूप में इतने दीर्घ काल तक नहीं चल पाई है । संस्कृत भाषा अति प्राचीन होने पर भी इस भाषा में शब्द निर्माण की क्षमता सबसे प्रबल है ।

डॉ0 जीतराम भट्ट ने कहा कि संस्कृत शिक्षकों के सर्वांगीण विकास के लिये समय समय पर संस्कृत शिक्षकों के लिये इस प्रकार की कार्यशालाओं का आयोजन किया गया है । प्रति वर्ष शिक्षा के क्षेत्र में नई नई प्रविधियों का प्रयोग किया जा रहा है । इस प्रकर की कार्यशालाओं के माध्यम से अकादमी संस्कृत शिक्षकों के ज्ञान को नवीन करना चाहती है । इस कार्यशाला में पांच दिनों तक संस्कृत शिक्षकों को विभिन्न प्रकार की संस्कृत शिक्षण की तकनीकियों पर प्रशिक्षण दिया गया कि किस प्रकार से संस्कृत

शिक्षा को आधुनिकता से जोड़ा जा रहा है और इन तकनीकी माध्यमों का प्रयोग कर आप शिक्षक एवं छात्र लाभान्वित हुए होंगे। अकादमी द्वारा दिल्ली के विभिन्न विद्यालयों में वर्तमान में 50 संस्कृत शिक्षक शिक्षिकाएँ कार्य कर रहे हैं । इसके लिये इन शिक्षकों के तकनीकी विकास के लिये ये कार्यशालाएँ आवश्यक थी ।

इस अवसर पर दिल्ली संस्कृत अकादमी के सभी शिक्षकों ने अपने अनुभवों को साझा किया और कार्यशाला में ली गई जानकारी के बारे में अवगत कराया । सभी शिक्षकों को कार्यशाला में प्रशिक्षण के लिये अकादमी की ओर से प्रमाण पत्र दिये गये ।

इस अवसर पर अनेक संस्कृत प्रेमी महानुभाव भी उपस्थित थे ।

महाविद्यालयीय संस्कृत एकांकी नाटकों का मंचन

एकांकी नाटकों की विधा संस्कृत में मंचित नाटकों के माध्यम से मिली -अमरीश त्यागी

एकांकी नाटकों से संस्कृत के छात्रों को रंगमंच के अभिनय से जोड़ना है

-डॉ0 जीतराम भट्ट

एकांकी नाटकों में साहित्य की गम्भीरता को देखने में मिलती है -डॉ0 साधना शर्मा

दिनांक 10.01.2019

साहित्य में नाटक विधा के माध्यम से समाज को नई दिशा दी जा सकती है । नाटकों के माध्यम से जहां समाज को शिक्षा मिलती हैं वही विश्व में अनेक क्रान्तियों की प्रेरणा नाटकों से मिली हैं । संस्कृत साहित्य में एकांकी नाटकों का लेखन एवं मंचन आदि काल से चली आ रहा है । विश्व के नाट्य निर्देशकों एवं मंचन कलाकारों को एकांकी नाटकों की विधा संस्कृत साहित्य में लिखित नाटको के मंचनों के माध्यम से ही मिली । अधिकतर नाट्य मंचन वाले नाटक से महत्त्वपूर्ण खण्ड को मंचित कर कम समय में लोगो को नाटक में निहित शिक्षा समाज को देने का कार्य करते हैं ।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय पंजाबी बाग नई दिल्ली में आयोजित ''महाविद्यालयीय संस्कृत एकांकी नाटकों के मंचन'' का उद्घाटन करते हुए श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय समिति के अध्यक्ष श्री अमरीश त्यागी ने व्यक्त किये । श्री त्यागी ने आगे कहा कि साहित्य को दृश्य एवं अभिनय विधा के माध्यम से लोगों को जल्दी से समझाया जा सकता है । नाटकों के मंचन से लेखकों, कलाकारों एवं इससे जुड़े अनेक क्षेत्र के लोगों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलता है ।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ0 जीतराम भट्ट ने कहा कि संस्कृत साहित्य में अनेक एकांकी नाटक उपलब्ध हैं जिनका मंचन किया जा सकता है । आज के धारावाहिक, फिल्म आदि भी

नाटकों के द्वारा ही आगे बढ़े हैं । अकादमी का प्रयास है कि एकांकी नाटकों के माध्यम से संस्कृत के छात्रों को रंगमंच की ओर आकृष्ट कराया जाये । यह रंगमंच से कलाकारों को जोड़ने के लिये यह एक बहुत ही सुगम माध्यम है । नाटकों को मंचित करने में अधिक कलाकारों एवं समय की आवश्यकता होती है जबकि एकांकी नाटकों में कम कलाकारों एवं कम समय में हर विषय की बात प्रस्तुत की जा सकती है । आज दिल्ली के 8 महाविद्यालय द्वारा संस्कृत में एकांकी नाटकों की प्रस्तुति की ।

इस अवसर पर कार्यकम की अध्यक्षता करते हुए श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ0 साधना शर्मा ने कहा कि नाटकों को हम तीन आयामों के माध्यम से देखते हैं । जिसमें सुनना, अभिनय करना एवं देशना प्रमुख है जिस कारण नाटकों के माध्यम से समाज को जल्दी प्रेरित किया जा सकता है । संस्कृत साहित्यों में लिखित नाटकों का अनुकरण करते हुए विश्व में लगभग हर भाषा में नाटकों का लेखन हुआ है । जिसमें कई नाटक की शिक्षाओं ने दूरगामी परिणम दिये हैं । जब हम एकांकी नाटकों को देखते हैं तो हमारा ध्यान अपने आप विषय वस्तु की ओर खिंचा चला जाता है । क्योंकि एकाकी नाटकों के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा वर्ण्य विषय वास्तविक रूप दिखाई देता है । एकांकी नाटकों में साहित्य की गम्भीरता को देखने में मिलती है ।

कार्यक्रम श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय के संस्कृत विभाग के संयोजन में किया गया । कार्यक्रम के बारे में श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय के संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ0 अमित कुमार शर्मा ने कहा कि हमारे महविद्यालय का ये वर्ष स्वर्ण जयन्ती वर्ष है । इस अवसर पर महाविद्यालय में संस्कृत एकांकी नाटकों का मंचन महाविद्यालय के लिये गौरव की बात है । संस्कृत विभाग इस स्वर्ण जयन्ती वर्ष पर अन्य कार्यक्रमों का भी आयोजन कर रहा है । कार्यक्रम का संचालन महाविद्यालय के संस्कृत विभाग के आचार्य डॉ0 ऋषिराज पाठक ने किया ।

इस अवसर पर डॉ0 बलदेवानन्द सागर, डॉ0 शशि तिवारी, डॉ0 रणजीत बेहरा सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति एवं संस्कृत प्रेमी महानुभाव उपस्थित थे ।

संस्कृत एंकाकी नाटक प्रतियोगिता वर्ष 2018-19

(शास्त्री/आचार्य/स्नातक/स्नातकोत्तर स्तरीय)

स्थान :- श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय, पश्चिमी पंजाबी बाग, दिल्ली-26

दिनांक :- 10.01.2019

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	प्रतिभागी का नाम	प्राप्त स्थान	पुरस्कार राशि
1.	लेडी श्रीराम महिला महाविद्यालय, लाजपत नगर-4, नई दिल्ली-24	निधि झा	प्रथम	रू. 667/-

	लेडी श्रीराम महिला महाविद्यालय, लाजपत नगर-4, नई दिल्ली-24	सहना	प्रथम	रू. 667/-
	लेडी श्रीराम महिला महाविद्यालय, लाजपत नगर-4, नई दिल्ली-24	देविना सिंह	प्रथम	रू. 667/-
	लेडी श्रीराम महिला महाविद्यालय, लाजपत नगर-4, नई दिल्ली-24	अकांक्षा	प्रथम	रू. 667/-
	लेडी श्रीराम महिला महाविद्यालय, लाजपत नगर-4, नई दिल्ली-24	चंचल	प्रथम	रू. 667/-
	लेडी श्रीराम महिला महाविद्यालय, लाजपत नगर-4, नई दिल्ली-24	स्वाति झा	प्रथम	रू. 667/-
	लेडी श्रीराम महिला महाविद्यालय, लाजपत नगर-4, नई दिल्ली-24	वंशिका	प्रथम	रू. 666/-
	लेडी श्रीराम महिला महाविद्यालय, लाजपत नगर-4, नई दिल्ली-24	अनामिका	प्रथम	रू. 666/-
	लेडी श्रीराम महिला महाविद्यालय, लाजपत नगर-4, नई दिल्ली-24	श्वेता पाठक	प्रथम	रू. 666/-
2.	श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय, पश्चिमी पंजाबी बाग, दिल्ली-26	नम्रता	द्वितीय	रू. 510/-
	श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय, पश्चिमी पंजाबी बाग, दिल्ली-26	अंजलि	द्वितीय	रू. 510/-
	श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय, पश्चिमी पंजाबी बाग, दिल्ली-26	निधि तिवारी	द्वितीय	रू. 510/-
	श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय, पश्चिमी पंजाबी बाग, दिल्ली-26	साक्षी	द्वितीय	रू. 510/-
	श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय, पश्चिमी पंजाबी बाग, दिल्ली-26	प्रतिभा	द्वितीय	रू. 510/-
	श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय, पश्चिमी पंजाबी बाग, दिल्ली-26	स्वेता	द्वितीय	रू. 510/-
	श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय, पश्चिमी पंजाबी बाग, दिल्ली-26	खुशबू	द्वितीय	रू. 510/-

	श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय, पश्चिमी पंजाबी बाग, दिल्ली–26	पल्लवी	द्वितीय	रू. 510/–
	श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय, पश्चिमी पंजाबी बाग, दिल्ली–26	साक्षी	द्वितीय	रू. 510/–
	श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय, पश्चिमी पंजाबी बाग, दिल्ली–26	अर्चिता	द्वितीय	रू. 510/–
3.	कालिन्दी महाविद्यालय, पूर्वी पटेल नगर, नई दिल्ली–08	दीपिका बिदुलान	तृतीय	रू. 467/–
	कालिन्दी महाविद्यालय, पूर्वी पटेल नगर, नई दिल्ली–08	अंजुम खान	तृतीय	रू. 467/–
	कालिन्दी महाविद्यालय, पूर्वी पटेल नगर, नई दिल्ली–08	वृद्धि बागड़े	तृतीय	रू. 467/–
	कालिन्दी महाविद्यालय, पूर्वी पटेल नगर, नई दिल्ली–08	लता	तृतीय	रू. 467/–
	कालिन्दी महाविद्यालय, पूर्वी पटेल नगर, नई दिल्ली–08	सुरभि	तृतीय	रू. 467/–
	कालिन्दी महाविद्यालय, पूर्वी पटेल नगर, नई दिल्ली–08	निकिता	तृतीय	रू. 467/–
	कालिन्दी महाविद्यालय, पूर्वी पटेल नगर, नई दिल्ली–08	तृप्ति उपाध्याय	तृतीय	रू. 466/–
	कालिन्दी महाविद्यालय, पूर्वी पटेल नगर, नई दिल्ली–08	मेकल सतरावल	तृतीय	रू. 466/–
	कालिन्दी महाविद्यालय, पूर्वी पटेल नगर, नई दिल्ली–08	किरण	तृतीय	रू. 466/–
	विवेकानन्द महाविद्यालय, विवेक विहार, दिल्ली–95	कु. पूजा	प्रोत्साहन–1	रू. 210/–
	विवेकानन्द महाविद्यालय, विवेक विहार, दिल्ली–95	पूजा	प्रोत्साहन–1	रू. 210/–
	विवेकानन्द महाविद्यालय, विवेक विहार, दिल्ली–95	आरती	प्रोत्साहन–1	रू. 210/–

	विवेकानन्द महाविद्यालय, विवेक विहार, दिल्ली–95	मनीषा	प्रोत्साहन–1	रू. 210/–
	विवेकानन्द महाविद्यालय, विवेक विहार, दिल्ली–95	रिशिका	प्रोत्साहन–1	रू. 210/–
	विवेकानन्द महाविद्यालय, विवेक विहार, दिल्ली–95	आँचल	प्रोत्साहन–1	रू. 210/–
	विवेकानन्द महाविद्यालय, विवेक विहार, दिल्ली–95	मानुषी	प्रोत्साहन–1	रू. 210/–
	विवेकानन्द महाविद्यालय, विवेक विहार, दिल्ली–95	सोनम	प्रोत्साहन–1	रू. 210/–
	विवेकानन्द महाविद्यालय, विवेक विहार, दिल्ली–95	साक्षी	प्रोत्साहन–1	रू. 210/–
	विवेकानन्द महाविद्यालय, विवेक विहार, दिल्ली–95	शिवानी सिंघल	प्रोत्साहन–1	रू. 210/–

संस्कृत भाषण प्रतियोगिता समारोह

संस्कृत भाषा एवं साहित्य युवा वर्ग को विचारों एवं चिन्तन की नई दिशा देती है।

–प्रो0 उपेन्द्र राव

संस्कृत भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया – डॉ0 जीतराम भट्ट

संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है और भारतीय संस्कृति का आधार है

– डॉ0 हरप्रीत कौर ।

दिनांक 11.01.2019

संस्कृत को विश्व स्तर पर ज्ञान विज्ञान की भाषा की भाषा बनाने के लिये हमें और अधिक प्रयास करने की जरूरत है । आज के आधुनिक युग में शिक्षा के क्षेत्र में अनेक विद्यालय, महाविद्यालय संस्कृत पढ़ने के लिये बच्चों को प्रोत्साहित कर रहे हैं । विश्व में अनेक विश्वविद्यालयों में संस्कृत को पढ़ाया जा रहा है । किसी भी देश को सशक्त बनाने में उस देश की युवा पीढ़ी का सबसे अधिक योगदान होता है । जिस देश में युवा वर्ग सबसे अधिक सशक्त एवं विचारशील हो वह राष्ट्र विकास की नई ऊँचाईयों को पाता है ।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा माता सुन्दरी महाविद्यालय नई दिल्ली में आयोजित महाविद्यालयीय संस्कृत भाषण प्रतियोगिता समारोह के मुख्य अतिथि जवाहर लाल नेहरू

विश्वविद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो0 उपेन्द्र राव ने व्यक्त किये । प्रो0 राव ने आगे कहा कि संस्कृत भाषा के विभिन्न आयामों में संस्कृत भाषण का अपना अलग महत्त्व है । भाषण के माध्यम से प्रतिभागी अपने विचारों को रखने की कला सीखता है जो आगे चलकर भविष्य में व्यक्ति के कौशल को निर्मित करने में सहायक होती हैं । देश के विकास में संस्कृत छात्रों, विद्वानों एवं संस्कृत साहित्य का हर समय योगदान रहा है और आगे भी रहेगा । संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है और भारतीय संस्कृति का आधार है ।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ0 जीतराम भट्ट ने कहा कि दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा दिल्ली के महाविद्यालयों एवं संस्कृत विद्यालयों के प्रतिभागियों की प्रतिभा विकसित करने के उद्देश्य से यह संस्कृत भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई । इस प्रतियोगिता में दिल्ली के लगभग सभी महाविद्यालयों एवं संस्कृत विद्यालयों के छात्र/छात्राओं ने भाग लिया । इसके लिये सभी प्रतिभागियों को स्वागत है । इस प्रकार के कार्यक्रमों के माध्यम से संस्कृत भाषा को मजबूती मिलती है ।

इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए माता सुन्दरी महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ0 हरप्रीत कौर ने कहा कि संस्कृत भाषा मानव सभ्यता के प्राचीनतम इतिहास से जुड़ी भाषा है । विज्ञान के सबसे समीप भाषा होने का गौरव भी संस्कृत भाषा को ही है । दिल्ली में अनेक संस्थायें निस्वार्थ भाव से संस्कृत के विकास एवं ज्ञान विज्ञान का कार्य कर रही है ।

इस अवसर पर लक्ष्मीबाई महाविद्यालय की संस्कृत विभाग की पूर्व आचार्या डॉ0 सावित्री गुप्ता ने कहा कि भाषण में प्रतिभागी के वास्तविक विवेक का पता चलता है । इसमें संस्कृत के बारे में किसी भी विषय पर प्रतिभागियों की क्या सोच होती है । यह भाषण के माध्यम से अनुभव किया जा सकता है ।

कार्यक्रम माता सुन्दरी महाविद्यालय के सान्निध्य में आयोजित हुआ। जिसमें महाविद्यालय के विभागाध्यक्ष ने सभी आये अतिथियों एवं प्रतिभागियों का अभिन्दन करते हुए संस्कृत के बारे में विस्तार से बताया । इस अवसर पर डॉ0 क्षेम चन्द्र सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे ।

संस्कृत भाषण प्रतियोगिता वर्ष 2018-19
(शास्त्री/आचार्य/स्नातक/स्नातकोत्तर स्तरीय)
स्थान :- माता सुन्दरी महिला महाविद्यालय, माता सुन्दरी लेन, दिल्ली-2

दिनांक :- 11.01.2019

क्र.सं.	महाविद्यालय का नाम	प्रतिभागी का नाम	प्राप्त स्थान	पुरस्कार राशि
1	श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, कटवारिया सराय, नई दिल्ली-16	आशीष शर्मा	प्रथम	रू. 2000/-

2.	लक्ष्मीबाई महाविद्यालय, अशोक विहार फेज-3, दिल्ली-52	ऋचा	द्वितीय	रू. 1800/-
3.	लेडी श्रीराम महिला महाविद्यालय, लाजपत नगर-4, नई दिल्ली-24	सहना. एल्	तृतीय	रू. 1500/-
4.	श्रीराम ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड संस्कृत महाविद्यालय, 358/4, मण्डावली, फाजलपुर, दिल्ली-92	अम्बिका प्रसाद दुबे	चतुर्थ	रू. 1200/-
5.	सेंट स्टीफन्स महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय परिसर, दिल्ली-07	हिमांशु भूषण	प्रोत्साहन-1	रू. 500/-

अखिल भारतीय संस्कृत कवि सम्मेलन

राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है गणतंत्र दिवस कवि सम्मेलन -प्रो0 रमेश कुमार पाण्डेय

राष्ट्रीय चेतना का संचार करता है गणतंत्र दिवस कवि सम्मेलन -कमाण्डो सुरेन्द्र सिंह

गणतंत्र दिवस कवि सम्मेलन से संस्कृत कवियों को नई पहचान दी है-डॉ0 जीतराम भट्ट

दिनांक 19.01.2019

''संस्कृत भाषा भारत की धरोहर है इस भाषा को आम लोगों तक इसके सही स्वरूप को ले जाने के लिये संस्कृत के अनेक विद्वान प्रयासरत हैं । दिल्ली संस्कृत अकादमी के माध्यम से मैं भी अनेक संस्कृत विषयक कार्यक्रमों एवं गतिविधियों में निरन्तर भाग लेता रहता हूँ जिससे मैं संस्कृत के विकास एवं प्रचार-प्रसार के लिये निरन्तर कार्य करने के लिये तैयार हूँ । दिल्ली सरकार संस्कृत भाषा एवं साहित्य के विकास एवं प्रचार-प्रसार के साथ लोकप्रिय बनाने के लिये अनेक प्रयास कर रही है । विगत वर्षों में जब से दिल्ली में आम आदमी की सरकार दिल्ली में आयी है दिल्ली सरकार ने संस्कृत अकादमी या अन्य संस्थाओं के माध्यम से संस्कृत के सभी क्षेत्रों को निरन्तर प्रोत्साहित कर रही है । जिससे संस्कृत भाषा एवं इसके विशाल साहित्य को विकास एवं ताकत मिले ।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित अखिल भारतीय संस्कृत कवि सम्मेलन के मुख्य अतिथि दिल्ली सरकार के विधायक कमाण्डो सुरेन्द्र सिंह ने व्यक्त किये । श्री सुरेन्द्र सिंह ने आगे कहा कि 26 जनवरी 1950 को हमारे देश में हमारा संविधान लागू हुआ। इसी दिन को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह दिन राष्ट्रीय पर्व के रूप में देश भर में मनाया जाता है। इस दिन को राष्ट्र के प्रति हर व्यक्ति का क्या दायित्व है राष्ट्र निर्माण में किसकी क्या आवश्यकता है इसका अवलोकन करने का अवसर है।

कार्यक्रम की प्रस्तावना में अकादमी के सचिव डॉ0 जीतराम भट्ट ने कहा कि जैसा कि सभी जानते ही हैं कि अकादमी प्रतिवर्ष गणतंत्र दिवस के अवसर पर अखिल भारतीय संस्कृत कवि सम्मेलन के माध्यम से देश को राष्ट्रप्रेम का संदेश दिया जाता ह । कविता की प्रथम भाषा संस्कृत है। दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा आयोजित इस राष्ट्रीय संस्कृत कवि सम्मेलन में देश के विभिन्न प्रदेशों से आये संस्कृत कविगणों का दिल्ली सरकार तथा कला संस्कृति एवं भाषा विभाग की ओर से अभिनन्दन है। संस्कृत अकादमी द्वारा आयोजित इस राष्ट्रीय संस्कृत कवि सम्मेलन से संस्कृत कवियों को नई पहचान मिली है ।

इस अवसर पर दिल्ली विधान सभा सदस्य श्री विशेष रवि ने कहा कि संस्कृत भाषा में स्थित ज्ञान विज्ञान की अनन्त धाराएँ प्राचीन काल से लेकर आज तक अबाध गति से विश्व में प्रवाहित होती रही है। विश्व की अनेक प्राचीन भाषाएँ, संस्कृतियां विलुप्त हो गई हैं, किन्तु भारतीय संस्कृति आज भी पूरे विश्व मे अपना गौरव और महत्त्व के साथ विद्यमान है। क्योंकि इस के मूल में संस्कृत भाषा है। संस्कृत मानव–सभ्यता के प्राचीनतम इतिहास से जुड़ी भाषा एवं संस्कृति है । विश्व में काव्य सर्वप्रथम इसी भाषा में हुआ है।

इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के कुलपति प्रो0 रमेश कुमार पाण्डेय ने कहा कि दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार द्वारा आयोजित इस प्रकार के कार्यक्रमों से दिल्ली वासियों को राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों को निभाने की प्रेरणा मिलेगी तथा दिल्ली के युवाओं को देश के प्रतिष्ठित संस्कृत कवियों को सुनने व उनके काव्यों जानने का अवसर मिलेगा।

इस अवसर पर पंजाब से प्रो0 जगदीश प्रसाद सेमवाल, अहमदाबाद से श्री हर्षदेव माधव, दिल्ली से डॉ0 रमाकान्त शुक्ल, श्री परमानन्द झा, डॉ0 बलराम शुक्ल, राजस्थान से श्री उमेश नेपाल, लखनऊ से डॉ0 संस्कृता मिश्रा, केरल से एच. पूर्णिमा आदि कवियों ने अपना काव्य पाठ किया । इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

दिल्ली राज्य स्तरीय केन्द्रीय संस्कृत प्रतियोगिता समारोह

संस्कृत भाषा पूरे ब्रह्माण्ड की भाषा है इसका न आदि है और न ही अन्त।

– डॉ0 सोनिया रावत

संस्कृत भाषा में निहित है सम्पूर्ण ज्ञान विज्ञान – डॉ0 जीतराम भट्ट

दिल्ली को संस्कृत नगर घोषित किया जाना चाहिये – डॉ0 सदानन्द दीक्षित

दिनांक 06.02.2019

भारतीय संस्कृति, संस्कार एवं संस्कृत भाषा का महत्त्व हमें विदेशों में दिखाई देता है । विश्व में

भारतीय संस्कृति सबसे श्रेष्ठ संस्कृति मानी जाती है । संस्कृत भाषा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की भाषा है । संस्कृत भाषा का न तो आदि है और न ही अन्त है यह भाषा शास्वत है । प्राचीन काल से ही भारत का इतिहास लम्बा एवं अनेक प्रतिभाओं से भरा हुआ है । भारतीय संस्कृति, संस्कार एवं संस्कृत भाषा विश्व में सब से प्राचीन एवं आज भी सबसे अहम हैं । हमारी संस्कृति विश्व को अनेक शिक्षायें देती आ रही है ।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा झण्डेवालान करोलबाग नई दिल्ली में आयोजित "दिल्ली राज्य स्तरीय केन्द्रीय संस्कृत प्रतियोगिता समारोह" की मुख्य अतिथि सर गंगाराम अस्पताल की चिकित्सिका डॉ0 सोनिया रावत ने व्यक्त किये । डॉ0 रावत ने आगे कहा कि विश्व में हमारी पहचान भारत ही है और भारतीय ही रहेगी । संस्कृत एवं हिन्दी का हमें निरन्तर बोलने एवं लिखने का प्रयास करना चाहिये । मैंनें 17 वर्षों तक इंग्लैण्ड में चिकित्सक का कार्य किया वहा यही पाया कि भारतीय संस्कृति ही सर्वोपरि है । यही संस्कृति मुझे वापस भारत लाई है ।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ0 जीतराम भट्ट ने कहा कि दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा दिल्ली के युवाओं के लिये विगत तीन दिनों से दिल्ली में युवा उत्सव के रूप में मनाया जा रहा है । इस युवा उत्सव में दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा दिल्ली शिक्षा निदेशालय के 13 मण्डलों में आयोजित संस्कृत की छ: प्रतियोगिताओं में मण्डल स्तर पर हर प्रतियोगिता के प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों के बीच आयोजित की जाती है । आज की प्रतियोगिता संस्कृत श्लोक संगीत एवं संस्कृत भाषण प्रतियागिता थी । श्लोक संगीत प्रतियोगिता में 22 विद्यालयों ने एवं संस्कृत भाषण प्रतियोगिता में 24 विद्यालयों के छात्र/छात्राओं ने अपनी प्रतिभा प्रस्तुत की । डॉ0 भट्ट ने आगे कहा कि भारत यदि विश्व में आज जाना जाता है ता वह भारतीय संस्कृति, संस्कार एवं संस्कृत भाषा के कारण जाना जाता है । हमें युवा पीढ़ी एवं आने वाली पीढ़ी के माध्यम से हम संस्कृतज्ञ संस्कृत, संस्कृति एवं संस्कार से जोड़ने के लिये निरन्तर प्रयास करते रहेंगे ।

इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए संस्कृत भाषा में प्रकाशित समाचार पत्र लोकभाषा सुश्री के सम्पादक डॉ0 सदानन्द दीक्षित ने कहा कि संस्कृत भाषा के कारण ही भारत में बोली जाने वाली विभिन्न भाषाओं में भारतीय संस्कृति एवं परम्पाओं का समावेश हुआ । दिल्ली संस्कृत अकादमी निरन्तर संस्कृत भाषा के प्रचार प्रसार के लिये कार्य कर रही है । दिल्ली में संस्कृत अकादमी गतिविधियों से दिल्ली का नाम संस्कृत नगर किया जाना चाहिये । संस्कृत विश्व कल्याण की समग्र भाषा है । 1994 में सर्वोच्च न्यायालय ने भी संस्कृत भाषा के महत्त्व को समझते हुए इसे तृतीय भाषा के रूप में पढ़ने के निर्देश दिये थे । प्राचीन काल से ही संस्कृत साहित्य विश्व को संस्कृति एवं ज्ञान विज्ञान की नई दिशा दे रहे हैं ।

इस प्रतियोगिता में काव्यालि प्रतियोगिता में प्रथम स्थान दिल्ली पब्लिक स्कूल, मथुरा रोड को, द्वितीय स्थान सर्वोदय कन्या विद्यालय यमुना विहार, दिल्ली को, तृतीय स्थान गार्गी सर्वोदय कन्या विद्यालय ग्रीनपार्क को, चतुर्थ स्थान अमृता विद्यालय सैक्टर-7 पुष्प विहार को तथा पंचम स्थान सुमेरमल जैन पब्लिक स्कूल जनकपुरी को प्राप्त हुआ । भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान सी.आर.पी.एफ पब्लिक स्कूल रोहिणी को, द्वितीय स्थान एम.एल.खन्ना पब्लिक स्कूल सैक्टर-6 द्वारका को, तृतीय स्थान सर्वोदय कन्या विद्यालय नं-2, नरेला को, चतुर्थ स्थान रामजस उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पूसा रोड को तथा पंचम स्थान वायु सेना उ0 मा0 विद्यालय लोक कल्याण मार्ग नई दिल्ली को प्राप्त हुआ । तीन दिनों तक चले इस युवा उत्सव 156 विद्यालयों के 600 से अधिक प्रतिभागी छात्र-छात्राओं ने भाग लिया । जिसमें से 30 विद्यालयों के 110 छात्र-छात्रओं ने पुरस्कार प्राप्त किये । अन्य छात्र-छात्राओं को प्रतिभागिता राशि से सम्मानित किया गया । इस अवसर पर अनेक संस्कृत प्रेमी महानुभाव भी उपस्थित थे ।

सरस्वती वन्दना प्रतियोगिता

इस वर्ष के सम्पूर्ण त्यौहारों का शुभारम्भ है सरस्वती पूजन -प्रो0 उपेन्द्र राव

सभी विद्याओं के प्रसार के कारण ही भारत को विश्वगुरु माना जाता रहा है।

-डॉ0 कान्ता भाटिया

वसन्त पंचमी सात्विकता के प्रसार का पर्व है -डॉ0 जीतराम भट्ट

दिनांक 09.02.2019

भारत सांस्कृतिक त्यौहारों की धरोहर है । हर त्यौहार का अपना अगल अलग महत्त्व है । तथा हर त्यौहार से कुछ न कुछ सीखने को मिलता है । सम्पूर्ण एशिया में वसन्त पंचमी का बहुत महत्त्व है । इस दिन विद्या दात्री माँ शारदा की आराधना कर विद्या एवं बुद्धि की कामना की जाती है। वसन्तऋतु की पंचमी तिथि को इस पावन पर्व को मनाये जाने के कारण पंचमी भी कहा जाता है। यह त्यौहार भारत के सभी भागों में मनाया जाता है। हलांकि भारत के अन्य क्षेत्रों में इसे अलग स्वरूप में मनाया जाता है । संस्कृत भाषा सरस्वती का प्रतिरूप है भाषाएँ सीखने से बुद्धि तीव्र होती है। संस्कृत भाषा बुद्धि, ज्ञान, ललित कला, साधन, विज्ञान और प्रौद्योगिकी की अपार सम्भावनाएँ हैं। जो संस्कृत भाषा के साहित्य में निहित है । संस्कृत भाषा एवं संगीत के माध्यम से समाज को नई दिशा दी जा सकती है ।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा झण्डेवालान में आयोजित सरस्वती पूजन के अवसर पर आयोजित ''सरस्वती वन्दना प्रतियोगिता'' के मुख्य अतिथि जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्राच्य विद्यापीठ के संस्कृत विभाग के आचार्य प्रो0 उपेन्द्र राव ने व्यक्त किये । प्रो0

राव ने आगे कहा कि कम्बोडिया में माधव पूजा के नाम से यह पर्व मनाया जाता है । इससे ठीक 40 दिन बाद होली का उत्सव मनाया जाता है । बसन्त पंचमी से त्यौहारों का प्रारम्भ हो जाता है जिसे वर्ष पर्यन्तम् निरन्तरता बनाये रखना है । आज के दिन ही सरस्वती का पृथ्वी पर अवतरण हुआ और शब्द नाद करके उत्पति हुई ।

इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये दिल्ली संस्कृत अकादमी की उपाध्यक्षा डॉ0 कान्ता भाटिया ने कहा कि ''संस्कृत जीवन का आधार है'' सर्वविदित है कि भारत को विश्वगुरु माना जाता रहा है। वस्तुतः वैदिक काल और वेदांग काल के साहित्य के आधार पर देखें तो ज्ञान-विज्ञान और संस्कृति-संस्कारों की सम्पन्नता में भारत से बढ़कर कोई अन्य देश नहीं था।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ0 जीतराम भट्ट ने कहा कि सरस्वती पूजन सात्विकता एवं पवित्रता का त्यौहार है। जिसमें माँ सरस्वती से बुद्धि एवं विवेक प्रदान करने की प्रार्थना की जाती है। इस अवसर पर अकादमी द्वारा सरस्वती वन्दना प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। इस प्रतियोगिता में प्रतिभागी छात्र/छात्राओं द्वारा माँ सरस्वती पर आधारित अलग-अलग वन्दनाओं का गायन किया जाता है। यह प्रतियोगिता दो स्तरों पर आयोजित की गई, विद्यालय स्तर एवं महाविद्यालय स्तर पर । इस प्रतियोगिता में दिल्ली के अनेक विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के प्रतिभागियां ने भाग लिया ।

जिसमें महाविद्यालय स्तर पर प्रथम स्थान, जानकी देवी महाविद्यालय दिल्ली को, द्वितीय स्थान भारती महाविद्यालय को, तृतीय स्थान लेडी श्रीराम कालेज को तथा चतुर्थ स्थान श्री लाल बहादुरशास्त्री संस्कृत विद्यापीठ को प्राप्त हुआ। विद्यालय स्तर पर महर्षि वेदव्यास गुरुकुल विद्यापीठ, बक्करवाला को प्रथम स्थान, द्वितीय स्थान ए.एस.एन, इण्टरनशनल स्कूल, मयूर विहार, दिल्ली, तृतीय स्थान एन.के बागड़ोदिया, सैक्टर-4, द्वारका तथा चतुर्थ स्थान दिल्ली कन्नड उ0मा0 विद्यालय, लोधी एस्टेट, नई दिल्ली-03 को प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर लेडी श्रीराम महाविद्यालय की प्राध्यापिका डॉ0 पंकजा घई ने कहा कि संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है । दुनिया के सभी शोधकर्ताओं ने संस्कृत को अन्य भाषाओं के समकक्ष अधिक वैज्ञानिक पाया है । यह सब संस्कृत का विशाल ज्ञान विज्ञान के कारण हुआ है ।

इस अवसर पर दिल्ली संस्कृत अकादमी के सदस्य डॉ0 बलदेवानन्द सागर ने कहा कि आप सभी शिक्षकों का संस्कृत के छात्रों को तैयार करने में बहुत बढ़ा योगदान है । आप लोग हृदय से वन्दनीय हैं ।

इस अवसर पर डॉ0 विभूतिनाथ झा, डॉ0 हेमा उनियाल सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति एवं संस्कृत प्रेमी महानुभाव भी उपस्थित थे ।

प्राचीन संस्कृत काव्य आधारित काव्यपाठ प्रतियोगिता समारोह

संस्कृत साहित्य को प्राचीन संस्कृत विद्वानों ने अपनी लेखनी से समृद्ध बनाया है ।

-डॉ0 जीतराम भट्ट

संस्कृत के प्राचीन कवियों ने समाज में जीवन मूल्यों को विस्तार देने का कार्य किया है ।

-डॉ प्रत्यूषवत्सला

संस्कृत भाषा विश्व की प्रथम भाषा है जिसमें सभी विषयों का समावेश है

- प्रो0 शारदा शर्मा

संस्कृत साहित्य में निहित ज्ञान मानव जीवन को प्रेरणा देता आ रहा है

- डॉ0 कान्ता भाटिया

दिनांक 13.02.2019

''संस्कृत भाषा एवं साहित्य में अनेक विषयों का समावेश है । प्राचीन संस्कृत साहित्य में संस्कृत कवियों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है । संस्कृत भाषा विश्व की प्रथम भाषा है जिसमें सभी विषयों का समावेश है । संस्कृत भाषा की विशेषता रही है कि इस भाषा ने आदि काल से ही समयानुकूल अपने आप को संजोया है । आज के वैज्ञानिक युग में भी यह भाषा कम्प्यूटर के लिये सबसे उपयुक्त भाषा है । किसी भाषा के विकास में उस भाषा के कवियों का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है । संस्कृत साहित्य को संस्कृत कवियों ने उसे लयबद्ध रूप से प्रस्तुत कर लोकप्रिय बनाया है । जिस कारण संस्कृत साहित्य के सभी प्राचीन ग्रन्थ आज भी विश्व साहित्य पटल पर सबसे अधिक सहज लगते हैं।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार द्वारा लक्ष्मीबाई महाविद्यालय नई दिल्ली में दिल्ली के महाविद्यालयों एवं संस्कृत विद्यालयों के लिये आयोजित ''प्राचीन संस्कृत काव्य आधारित काव्यपाठ प्रतियोगिता समारोह'' के मुख्य अतिथि दिल्ली विश्वविद्यालय की संस्कृत विभाग की अध्यक्षा प्रो0 शारदा शर्मा ने व्यक्त किये ।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ0 जीतराम भट्ट ने कहा कि वर्तमान समय में संस्कृत साहित्य के प्राचीन काव्यधारा को जन सामान्य तक पहुँचाने में अकादमी द्वारा प्राचीनकाव्य पर आधारित काव्यपाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । जिस में प्रतिभागी को महाकवि कालीदास, पण्डितराज जगन्नाथ, भर्तृहरि, भवभूति, भारवी, भास, श्रीहर्ष, वाल्मीकि और जयदेव के काव्यों को प्रस्तुत करना था । जिसमें प्रतिभागी को जिस कवि की प्रस्तुति की जा रही है उस के परिवेश को भी धारण करना था । जिससे जन-सामान्य को इन कवियों की स्मृति दिलाना था । संस्कृत साहित्य का काव्यपक्ष बहुत सबल है । इस के छन्दों में रचनायें आम लोगों को अपनी ओर तुरन्त आकर्षित कर लेती हैं । संस्कृत के कारण ही आज हमारा देश विश्व में अपनी पहचान रखता है ।

इस अवसर पर दिल्ली संस्कृत अकादमी की उपाध्यक्षा डॉ0 कान्ता भाटिया ने कहा कि संस्कृत साहित्य में निहित ज्ञान मानव जीवन को प्रेरणा देता आ रहा है । संस्कृत साहित्य में हर प्रकार के काव्यों की रचना हुई है इस पर निरन्तर कार्य भी हो रहा है । संस्कृत साहित्य में अनेक प्राचीन कवियों ने अविस्मरणीय काव्यों की रचनायें की हैं । इस विषय पर अकादमी द्वारा किया गया यह कार्यक्रम संस्कृत को नई दिशा देगा ।

इस अवसर पर लक्ष्मीबाई महाविद्यालय भारती महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ0 प्रत्यूषवत्सला ने कहा कि वाल्मीकि, श्रीहर्ष, भवभूति, कालिदास आदि सभी विद्वानों के काव्यों की वास्तव में आज जो प्रस्तुतियाँ हुई ये अपने आप में उल्लेखनीय है । लिए राष्ट्र की जड़े मजबूत होती है उस देश में समृद्धि होती है । आप देश के भावी रक्षक हो आप लोगों का दायित्व और अधिक हो जाता है ।

इस अवसर पर पूर्व प्राचार्य डॉ0 भास्करानन्द पाण्डेय ने कहा संस्कृत साहित्य के अनेक प्राचीन संस्कृत कवियों ने अपनी प्रतिभा के आधार पर इस को विश्व प्रसिद्ध बनाया है ।

प्रतियोगिता में दिल्ली विश्वविद्यालय के कई प्रतिभागियों ने भाग लिया । कार्यक्रम लक्ष्मीबाई महाविद्यालय के संस्कृत विभाग के सान्निध्य में हुआ । जिसमें संस्कृत विभाग की अध्यक्षा डॉ0 मीरा शर्मा ने कार्यक्रम का संचालन किया । इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे ।

दो दिवसीय गुरुकुलीय खेल प्रतियोगिता

संस्कृत विद्यालय के छात्र-छात्राओं के लिये दिल्ली राज्य स्तरीय खेलों का शुभारम्भ।

- डॉ0 जीतराम भट्ट

आदर्शता का प्रतीक होती है खेल प्रतियोगितायें - डॉ0 जीतराम भट्ट

इन खेलों में 400 से अधिक संस्कृत छात्रा-छात्रायें भाग ले रहे है - दौलतराम कटारिया

दिनांक 23.02.2019

दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार एवं डॉ0 गो0 गि0ला0शा0प्रा0 विद्या प्रतिष्ठान के संयुक्त तत्त्वावधान में महर्षि वेद व्यास संस्कृत विद्यापीठ बक्करवाला नई दिल्ली में दिल्ली में स्थित विभिन्न संस्कृत विद्यालयों के छात्रों के लिये आयोजित दो दिवसीय गुरुकुलीय खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है । इस प्रतियोगिता समारोह का शुभारम्भ दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव डॉ0 जीतराम भट्ट द्वारा किया गया । इस अवसर पर डॉ0 जीतराम भट्ट ने कहा कि अकादमी द्वारा दिल्ली के संस्कृत पढ़ने वाले छात्रों के मानसिक विकास के लिये दिल्ली में ही नहीं सम्पूर्ण देश में संस्कृत छात्रों के लिये खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन कर रही है । इससे छात्रों में खेल के प्रति उत्साह का वातावरण बनेगा । डॉ0 जीत राम भट्ट ने आगे कहा कि संस्कृत छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिये

दिल्ली संस्कृत अकादमी हर समय प्रयासरत है । इसी के क्रम में इस वर्ष संस्कृत खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है। खेलों से हमें यह शिक्षा मिलती है कि खेल को खेल की भावना से खेला जाय । संस्कृत विद्यालयों के छात्रों का देश में खेलों के प्रति कम योगदान है परन्तु कुछ वर्षों पूर्व कॉमन वेल्थ एवं ओलपिक खेलों में कुछ संस्कृत विद्यालय के छात्रों ने सुन्दर प्रदर्शन कर लोगों का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया है । संस्कृत विद्यालयों का खेलों से दूर रहने का कारण इन छात्रों को उचित व्यवस्था का अभाव है इसी लिये दिल्ली संस्कृत अकादमी इन छात्रों में छिपी खेल प्रतिभा को विकसित करने के लिये खेलों का आयोजन कर रही है ।

इस अवसर पर विद्यापीठ के प्रबन्धक श्री दौलत राम कटारिया ने कहा कि समय समय पर संस्कृत छात्रों के मानसिक एवं शाररिक विकास के लिये इस प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाना चाहिये है जिससे छात्र भी अपने आप को ऊर्जावान हो सकें । यह देखा गया कि संस्कृत विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्रों को खेलों में अपनी प्रतिभा दिखने का अवसर नहीं मिलता है । जिससे कारण इन प्रतिभागियों की छिपी हुई प्रतिभा निकल नहीं पाती है। संस्कृत विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों ने कई बार खेलों के द्वारा देश का नाम रोशन किया है ।

इस अवसर पर संस्कृत विद्यालय के सचिव श्री नरेन्द्र मदान कहा कि संस्कृत छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिये दिल्ली सरकार दिल्ली संस्कृत अकादमी के माध्यम से हर समय प्रयासरत है । हमारा विद्यालय बहुत समय से खेलों को राज्य स्तर पर आयोजन के लिये प्रयास कर रहा था दिल्ली सरकार ने अकादमी के माध्यम से इन खेलों को प्रारम्भ कर सार्थक कार्य किया है । संस्कृत पढ़ने वाले छात्रों के शाररिक विकास एवं कैरियर को आगे बढ़ाने के लिये इन छात्रों को खेलों से भी जोड़ना आवश्यक है । इसी बात को ध्यान में रखते हुये संस्कृत विद्यालय के छात्रों के लिये संस्कृत खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । आज की प्रतियोगिताओं में कब्बडी, खो-खो, बॉली-बाल 100, 200 एवं 400 मीटर दौड़ आदि थी । कल भी अन्य खेलों का आयोजन किया जायेगा । इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे ।

दो दिवसीय गुरुकुलीय खेल प्रतियोगिता समापन समारोह

दो दिवसीय संस्कृत विद्यालयीय छात्रों के लिये आयोजित खेलों का समापन ।

विभिन्न प्रतियोगिताओं मं 400 से अधिक छात्रों ने भाग लिया ।

दिनांक 24.02.2019

दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार एवं डॉ0 गो0 गि0ला0शा0प्रा0 विद्या प्रतिष्ठान के संयुक्त तत्त्वावधान में श्री वेद व्यास संस्कृत विद्यापीठ, बक्करवाला, नई दिल्ली में स्थित विभिन्न संस्कृत

संस्कृत विद्यालयों के छात्रों के लिये आयोजित दो दिवसीय खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। आज इन खेल इस प्रतियोगिताओं का समापन हुआ। समापन समारोह के अवसर पर सभी प्रतियोगिताओं के परिणाम घोषित किया गया।

समापन के अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ0 जीतराम भट्ट ने कहा कि संस्कृत छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिये दिल्ली संस्कृत अकादमी हर समय प्रयासरत है। यह देखा गया कि संस्कृत विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्रों को खेलों में अपनी प्रतिभा दिखने का अवसर नहीं मिलता है। जिस कारण इन प्रतिभागियों की समाई प्रतिभा निकल नहीं पाती है। संस्कृत विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों ने कई बार खेलों के द्वारा देश का नाम रोशन किया है। अकादमी ने महसूस किया कि इन छात्रों के शाररिक विकास एवं कैरियर को आगे बढ़ाने के लिये इन छात्रों को खेलों से भी जोड़ना आवश्यक है। इसी बात को ध्यान में रखते हुये संस्कृत विद्यालय के छात्रों के लिये संस्कृत खेल प्रतिगयोगिताओं का आयोजन किया गया।

प्रतियोगिताओं में टीम स्पर्दा में आयोजित प्रतियोगिताओं में परिणाम इस प्रकार से रहे :-

योग महिला वर्ग (कक्षा 6 से 9)

प्रथम स्थान – कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर तथा कन्या गुरूकुल नरेला की छात्राओं को द्वितीय स्थान-

कब्बडी प्रतियोगिता पुरुष वर्ग (कक्षा 6 से 9)

प्रथम स्थान – हनुमान संस्कृत महाविद्यालय रघुवीर नगर का, द्वितीय स्थान – महर्षि वेद व्यास आनन्दधाम को तृतीय स्थान टटेसर जौन्ती को प्राप्त हुआ।

कब्बडी पुरुष वर्ग (कक्षा 10 से 12)

प्रथम स्थान- महर्षि वेद व्यास आनन्दधाम को, द्वितीय स्थान हनुमान संस्कृत महाविद्यालय रघुवीर नगर को तथा तृतीय स्थान संस्कृत विद्यालय।

वालीबाल पुरुष वर्ग (कक्षा 10 से 12)

प्रथम स्थान विश्वनाथ संस्कृत महाविद्यालय, द्वितीय स्थान महर्षि वेद व्यास आनन्दधाम को, तथा तृतीय स्थान महावीर संस्कृत विश्वविद्यापीठ पश्चिम विहार को प्राप्त हुआ।

खो-खो पुरुष वर्ग (कक्षा 6 से 9)

प्रथम स्थान हनुमान संस्कृत महाविद्यालय को, द्वितीय स्थान वेदव्यास संस्कृत विद्यापीठ को तथा तृतीय स्थान रामऋषि महाविद्यालय को प्राप्त हुआ।

खो-खो पुरुष वर्ग (कक्षा 10 से 12)

प्रथम स्थान – हनुमान संस्कृत महाविद्यालय को द्वितीय स्थान वेदव्यास संस्कृत विद्यापीठ को तथा तृतीय स्थान मोतीनाथ संस्कृत महाविद्यालय को प्राप्त हुआ।

लम्बी कूद पुरुष वर्ग (कक्षा 6 से 9)
प्रथम स्थान महर्षि वेद व्यास संस्कृत विद्यापीठ को, द्वितीय एवं तृतीय स्थान हनुमान संस्कृत महाविद्यालय को प्राप्त हुआ।

लम्बी कूद पुरुष वर्ग (कक्षा 10 से 12)
प्रथम एवं द्वितीय स्थान महर्षि वेद व्यास संस्कृत विद्यापीठ को तथा तृतीय स्थान हनुमान् संस्कृत महाविद्यालय को प्राप्त हुआ।

लम्बी कूद पुरुष वर्ग (शास्त्री आचार्य)
प्रथम स्थान श्री लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ को द्वितीय स्थान शारदा देवी संस्कृत विद्यापीठ को तथा तृतीय स्थान श्री लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ को प्राप्त हुआ।

गोला फेंक पुरुष वर्ग (कक्षा 6 से 9)
प्रथम स्थान एवं द्वितीय स्थान हनुमान संस्कृत महाविद्यालय को तथा तृतीय स्थान वेदव्यास संस्कृत विद्यापीठ को प्राप्त हुआ।

गोला फेंक पुरुष वर्ग (कक्षा 10 से 12)
प्रथम स्थान एवं द्वितीय स्थान वेदव्यास संस्कृत विद्यापीठ को तथा तृतीय स्थान मोतीनाथ संस्कृत विद्यालय को प्राप्त हुआ।

100 मीटर रेस पुरुष वर्ग (6 से 9)
प्रथम स्थान श्री लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ को, द्वितीय स्थान शारदा देवी संस्कृत विद्यापीठ को तथा तृतीय स्थान श्री लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ को प्राप्त हुआ।

व्यक्तिगत स्पर्दा में जूनियर वर्ग तथा सीनियर वर्ग में 100 मीटर 200 मीटर तथा 400 मीटर दौड़ में प्रथम स्थान, द्वितीय स्थान एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर आनन्दधाम आश्रम के महामंत्री डॉ0 नरेन्द्र मदान ने कहा कि यह सर्वविदित है कि जो छात्र पढ़ने में होशियार होगा वह खेल में भी प्रतिभाशाली होगा। परन्तु कई बार यह देखा गया कि जिन छात्रों का पढ़ाई में ध्यान नहीं होता है वे खेलों में बहुत अच्छे होते हैं। खेलों से हमें यह शिक्षा मिलती है कि खेल को खेल की भावना से खेला जाय। संस्कृत विद्यालयों के छात्रों के देश में खेलों के प्रति कम प्रेरणा मिलती है इस का कारण इन छात्रों को उचित व्यवस्था का अभाव है इसी व्यवस्था को सुधारने के लिये दिल्ली संस्कृत अकादमी ने इन छात्रों में छिपी खेल प्रतिभा को विकसित करने के लिये इस प्रकार के खेलों का आयोजन किया है। इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

वास्तु शास्त्र एवं योग विषय पर आधारित विशिष्ट व्याख्यानमाला

भारतीय वास्तु शास्त्र को वैज्ञानिक पक्ष बहुत प्रबल है - डॉ0 जीतराम भट्ट

योग प्राचीन भारतीय शिक्षा का महत्त्वपूर्ण विषय रहा है -डॉ0 मौना कौशिक

दिनांक 02.03.2019

साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब है। संस्कृत भाषा में वर्णित ज्ञान विज्ञान के के महत्त्व को समझते हुये भाषा के विकास की समग्र नीति बनाई जानी चाहिये । संस्कृत साहित्य के आज के कार्यक्रम के विषय वास्तु शास्त्र एवं योग विश्व के लिये अद्‌भुत ज्ञान के विषय हैं । इन विषयों के महत्त्व को समझते हुये प्रत्येक भारतीय को आज के तकनीकी युग में भी इन का ज्ञान आवश्यक है । विदेशों में भारती प्राचीन ज्ञान के लिये अनेक अनुसंधान केन्द्रों पर कार्य चल रहा है । जिन पर किया गया शोध आधुनिक विज्ञान कहा जा रहा है ।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार द्वारा करोलबाग, नई दिल्ली में ''वास्तु शास्त्र एवं योग विषय पर आधारित विशिख्यानमाला के आयोजन के अवसर पर सैफिया विश्वविद्यालय बुल्गारिया की प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान की प्राध्यापिका डॉ. मौना कौशिक ने व्यक्त किये । डॉ0 मौना कौशिक ने आगे कहा कि ज्यों-ज्यों समाज बदलता जाता है साहित्य एवं तकनीकी ज्ञान भी अपना नया रूप ग्रहण करता जाता है। काल परिवर्तन के साथ ज्ञान एवं विज्ञान भी बदल जाता है परन्तु वास्तु एवं योग आज भी उसी रूप में उन्नत वैज्ञानिकता को लिये हुये हैं जो प्राचीन काल में रहे हैं ।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ0 जीतराम भट्ट ने कहा कि दिल्ली में वास्तु एवं योग के जिज्ञासुओं की मांग को देखते हुये अकादमी ने इस वर्ष दिल्ली में वास्तु शास्त्र एवं योग अध्ययन केन्द्र स्थापित किया । जिसमें अनेकों लोग इनके बारे में शिक्षा ले रहे हैं । सभी विषयों का पारस्परिक सम्बन्ध होना आवश्यक है । सभी विषयों को आपस में जोड़ने के लिये हर विषय के साहित्य को दूसरी भाषाओं के साहित्य में अनुवादित कर जन सामान्य तक अधिक से अधिक सरल रूप में पहुँचाया जाना चाहिए। डॉ0 भट्ट ने आगे कहा कि योग भारतीय दर्शन का महत्त्वपूर्ण अंग है । आध्यात्मिक प्रक्रिया को योग कहते हैं । योग की उत्पत्ति भारत में हुई है । शरीर, मन और आत्मा को एक साथ लाने को योग कहते हैं । भारत से बौद्ध धर्म के साथ योग चीन, जापान, तिब्बत, दक्षिण पूर्व एशिया और श्रीलंका में फैला और वर्तमान में सारे विश्व में योग शरीर को निरोगी रखने के लिये जाना जाता है । वास्तु में कई क्षेत्र हैं भवन निर्माण दुकान का स्वरूप, फैक्ट्री निर्माण एवं स्थान का चयन आदि । इसके अलावा भी कई विषयों की वैज्ञानिकता को लिये हुये है जिसमें से कई विषय ऐसे है कि जो अब उपलब्ध ही नहीं है परन्तु यदि शोध किया जाय व पुरातत्व आदि अन्य क्षेत्रों से सहयोग ले कर कार्य किया जाय तो संस्कृत में अनेक विषय मिल जायेंगे । इस अवसर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे ।

योग प्रशिक्षण केन्द्र समापन समारोह

शरीर, मन और आत्मा का समत्व ही योग है- डॉ0 जीतराम भट्ट

स्वस्थ जीवन के लिये योग एवं वास्तु आवश्यक है - राज कुमार द्विवेदी

भारत योग दर्शन की जन्म भूमि है - राकेश सिन्हा

दिनांक 08.03.2019

योग भारतीय दर्शन का महत्त्वपूर्ण अंग है । आध्यात्मिक प्रक्रिया को योग कहते हैं । योग की उत्पत्ति भारत में हुई है । शरीर, मन और आत्मा को एक साथ लाने को योग कहते हैं । भारत से बौद्धधर्म के साथ योग एवं वास्तुशास्त्र चीन, जापान, तिब्बत, दक्षिण पूर्व एशिया और श्रीलंका में फैला और वर्तमान में सारे विश्व में योग शरीर को निरोग रखने के लिये जाना जाता है । संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी योग के महत्त्व को समझा और इसे हर साल 21 जून को योग दिवस के रूप में मनाया जाने लगा जिसमें विश्व के सभी देश भाग लेते हैं । वास्तुशास्त्र को भी विश्व स्तरीय विषय की मान्यता जरूर मिलेगी । गीता में कहा गया है कि योग: कर्मसु कौशलम् (कर्मों में कुशलता को योग कहते हैं)। कुछ विद्वान् जीवात्मा और परमात्मा के मिल जाने को योग कहते हैं ।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार द्वारा अकादमी के सभागार में योग प्रशिक्षण केन्द्र के समापन के अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ0 जीतराम भट्ट ने व्यक्त किये । डॉ0 भट्ट ने आगे कहा कि वास्तु शास्त्र संस्कृत साहित्य में निहित पूर्णरूप से निहित भारतीय विज्ञान है । वास्तु शास्त्र की उत्पत्ति भारत में हुई है । वास्तुशास्त्र पर विश्व में अनेक प्रकार का शोध कार्य हो रहा है । आधुनिक तकनीकी शिक्षा में वास्तु का महत्त्वपूर्ण योगदान है । किसी भी स्थान पर कोई निर्माण कार्य करने से पहले उस स्थान के गुण दोषों को वास्तुशास्त्र के माध्यम से दूर किया जा सकता है ।

इस अवसर पर कार्यक्रम के बारे में बताते हुये वास्तु शास्त्र के प्रशिक्षक श्री राज कुमार द्विवेदी ने कहा कि योग के माध्यम से हम अपने दैनिक जीवन को सुधार सकते हैं । शरीर स्वस्थ है तो सभी कार्य अपने आप पूर्ण होते हैं । शरीर को निरोग रखने के लिये योग की जरूरत है । भारतीय योग दर्शन की बहुत बढ़ी सीमा है । इसका दर्शन अनन्त है । आज इस केन्द्र के माध्यम से जो लोग शिक्षण लेंगे वे योग के महत्त्व को जन सामान्य तक ले जाने का प्रयास करेंगे ।

इस अवसर पर योग प्रशिक्षक श्री सुनील कुमार जोशी ने कहा कि योग को महर्षि पतंजलि ने सूत्रों के रूप प्रस्तुत किया । योग के लिये अलग अलग परिभाषाएँ दी गई हैं जिसमें पतंजलि योग दर्शन, सांख्य दर्शन, विष्णुपुराण श्रीमद्भगवतगीता आदि में योग का विस्तृत वर्णन मिलता है । योग के ८ अंग होते हैं । जिसमें यम, नियम, आसन, प्रणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान एवं समाधि हैं । योग से अनेक रोग ठीक हो

जाते हैं नियमित योग करने से शरीर में रोग होता ही नहीं है । इस लिये हमें प्रतिदिन योग के लिये अवश्य समय निकालना होगा । अकादमी का इस वर्ष यह प्रयास है कि योग को उसमें निहित सभी विधाओं का ज्ञान प्रशिक्षार्थियों को दिया जाये । भारत योग दर्शन की जन्म भूमि है ।

इस अवसर पर श्री राकेश सिन्हा ने योग के बारे में विस्तार से बताते हुये कहा कि इस योग आज हर घर की जरूरत है इसे हर घर में अपनाने की जरूरत है । यदि सदाचार से जीवन व्यतीत किया जाय तो वही योग है । योग को जानने के लिये संस्कृत भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है ।

इस अवसर पर अकादमी के लेखा अधिकारी श्री भारत भूषण ने कहा कि शिक्षा के सभी विकल्पों में वास्तुशास्त्र सबसे वैज्ञानिक परक विषय है । वास्तु भारतीय प्राचीन विज्ञान है । इसकी गणना आज भी वैज्ञानिको के लिये आश्चर्य का विषय है । इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे ।

संस्कृत साहित्य में वर्णित गणतंत्र की अवधारणा

जनता की सहभागिता लोकतंत्र का आधार हैं - डॉ0 जीतराम भट्ट

भारत में शासन की शक्ति संविधान में निहित है जो जनता की शक्ति है-डॉ0 क्षमचन्द

दिनांक 16.03.2019

भारत में लोकतंत्र की जड़ें ईसा से तीन हजार वर्ष पूर्व वैदिक काल में दिखाई देती हैं। प्रतिनिधि संस्थाओं और सिद्धांतों का प्रथम निरूपण ऋग्वेद व अथर्ववेद में मिलता है। बाद में महाभारत, शुक्राचार्य के नीतिसार, बौद्ध साहित्य व कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी लोकतंत्र की झलक मिलती है। यूनान के प्रथम लोकंत्रात्मक नगर राज्यों से सदियों पूर्व ही भारत में गणराज्यों का जाल बिछा था। कह सकते हैं कि भारत ही लोकतंत्र का पालना रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी भारत में लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था को अपनाया गया और यह सफलतापूर्वक विश्व को अपना मार्गदर्शन दे रहा है । किसी भी देश में लोकतांत्रिक शासन पद्धति के कुछ मूलभूत आधार होते हैं जैसे संविधानवाद, स्वतंत्रता, सहिष्णुता, समानता एवं सहभागिता। यदि ये पांचों तत्त्व उस देश के शासन संचालन में मौजूद हों तभी वह देश लाकतान्त्रिक कहलाएगा। लोकतंत्र की अवधारणा वेदों की देन है। चारों वेदों में इस संबंध में कई सूत्र मिलते हैं और वैदिक समाज का अध्ययन करने के बाद यह और भी सत्य सिद्ध होता है। ऋग्वेद में सभा और समिति का जिक्र मिलता है जिसमें राजा, मंत्री और विद्वानों से विचार-विमर्श करने के बाद ही कोई फैसला लेता था।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार एवं डॉ0 गोस्वामी गिरधारी लाल शास्त्री प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के संयुक्त तत्त्वाधान में झण्डेवालान, करोलबाग में आयोजित ''संस्कृत साहित्य में वर्णित गणतंत्र की अवधारणा '' विषय पर आयोजित संगोष्ठी का शुभारम्भ करते हुये अकादमी के सचिव

डॉ0 जीतराम भट्ट ने व्यक्त किये । डॉ0 भट्ट ने आगे कहा कि भारत में गणतंत्र का विचार वैदिक काल से चला आ रहा है। गणतंत्र शब्द का प्रयोग ऋग्वेद में चालीस बार, अथर्व वेद में 9 बार और ब्राह्मण ग्रंथों में अनेक बार किया गया है। वैदिक साहित्य में, विभिन्न स्थानों पर किए गए उल्लेखों से यह जानकारी मिलती है कि उस काल में अधिकांश स्थानों पर हमारे यहां गणतंत्रीय व्यवस्था ही थी। महाभारत में भी लोकतंत्र के इसके सूत्र मिलते हैं।

इस अवसर पर शिक्षा निदेशालय के पूर्व आचार्या डॉ0 क्षेमचन्द्र ने कहा कि गणतंत्र का प्रभात भारत में आदि काल से ही रहा है । महाभारत के बाद बौद्धकाल में (450 ई.पू. से 350 ई.) में भी चर्चित गणराज्य थे। जैसे पिप्पली वन के मौर्य, कुशीनगर और काशी के मल्ल, कपिलवस्तु के शाक्य, मिथिला के विदेह और वैशाली के लिच्छवी का नाम प्रमुख रूप से लिया जा सकता है। इसके बाद अटल, अराट, मालव और मिसोई नामक गणराज्यों का भी जिक्र किया जाता है। बौद्ध काल में वज्जी, लिच्छवी, वैशाली, बृजक, मल्लक, मदक, सोमबस्ती और कम्बोज जैसे गणतंत्र संघ लोकतांत्रिक व्यवस्था के उदाहरण हैं। वैशाली के पहले राजा विशाल को चुनाव द्वारा चुना गया था। वर्तमान में गणतंत्र का तात्पर्य है सत्ता, व्यक्ति अथवा संस्था के द्वारा नहीं वरन संविधान द्वारा स्थापित विधियों के द्वारा चलायी जाएगी। भारत में सिद्धांतः शासन की शक्ति संविधान में निहित है तथा संविधान को यह शक्ति जनता ने दी है।

इस अवसर पर डॉ0 भास्करानन्द पाण्डेय ने कहा कि गणतंत्र के बारे में कौटिल्य के पहले पाणिनी ने कुछ गणराज्यों का वर्णन अपने व्याकरण में किया है। पाणिनी की अष्टाध्यायी में जनपद शब्द का उल्लेख अनेक स्थानों पर किया गया है, जिनकी शासनव्यवस्था जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों के हाथों में रहती थी। यूनान के गणतंत्रों से पहले ही भारत में गणराज्यों का जाल बिछा हुआ था। यूनान ने भारत को देखकर ही गणराज्यों की स्थापना की थी। यूनान के राजदूत मेगस्थनीज ने भी अपनी पुस्तक में क्षुद्रक, मालव और शिवि आदि गणराज्यों का वर्णन किया है। इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे ।

पर्यावरण संरक्षण के उपाय विषय पर संगोष्ठी

पर्यावरण शब्द परि और आवरण के संयोग से बना है - डॉ0 जीतराम भट्ट

आज वायु एवं जल प्रदूषण के साथ ही वायु प्रदूषण भी मानव के सम्मुख एक चुनौती है।

-डॉ0 भास्करानन्द पाण्डेय

दिनांक 17.03.2019

ऋग्वेदकाल से लेकर आज तक संस्कृत भाषा के माध्यम से सभी प्रकार के वाङ्मय का निर्माण होता आ रहा है। हिमालय से लेकर कन्याकुमारी के छोर तक किसी न किसी रूप में संस्कृत का अध्ययन

अध्यापन अब तक होता चल रहा है। इस भाषा में धार्मिक, साहित्यिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक वैज्ञानिक आदि प्रायः समस्त प्रकार के विषयों का अध्ययन अध्यापन कराया जाता था। पर्यावरण शब्द परि और आवरण के संयोग से बना है। 'परि' का आशय चारों ओर तथा 'आवरण' का आशय परिवेश है। दूसरे शब्दों में कहें तो पर्यावरण अर्थात् वनस्पतियों, प्राणियों और मानव जाति सहित सभी सजीवों और उनके साथ संबंधित भौतिक परिसर को पर्यावरण कहते हैं। संस्कृत साहित्य में पर्यावरण के प्रति जागरूकता के लिये प्राचीन काल से ऋषियों ने उसके महत्त्व को समझा है और अपने ग्रन्थों के द्वारा आम लोगों को जागरूक करने का प्रयास किया। वेद, पुराण उपनिषदों में पर्यावरण के बारे में बहुत कुछ लिखा गया है। वास्तव में पर्यावरण में वायु, जल, भूमि, पेड़-पौधे, जीव-जन्तु, मानव और उसकी विविध गतिविधियों के परिणाम आदि सभी का समावेश होता हैं। विज्ञान के क्षेत्र में असीमित प्रगति तथा नये आविष्कारों की स्पर्धा के कारण आज का मानव प्रकृति पर पूर्णतया विजय प्राप्त करना चाहता है। इस कारण प्रकृति का संतुलन बिगड़ गया है। वैज्ञानिक उपलब्धियों से मानव प्राकृतिक संतुलन को उपेक्षा की दृष्टि से देख रहा है। दूसरी ओर धरती पर जनसंख्या की निरंतर वृद्धि, औद्योगिकीकरण एवं शहरीकरण की तीव्र गति से जहाँ प्रकृति के हरे भरे क्षेत्रों को समाप्त किया जा रहा है।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार एवं डॉ0 गोस्वामी गिरधारी लाल शास्त्री प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के संयुक्त तत्त्वाधान में झण्डेवालान,करोल बाग में आयोजित ''पर्यावरण संरक्षण के उपाय'' विषय पर आयोजित संगोष्ठी का शुभारम्भ करते हुये अकादमी के सचिव डॉ0 जीतराम भट्ट ने व्यक्त किये। डॉ0 भट्ट ने आगे कहा कि अपने पर्यावरण को बेहतर बनाने के लिए हमें सबसे पहले अपनी मुख्य जरूरत 'जल' को प्रदूषण से बचाना होगा। कारखानों का गंदा पानी, घरेलू गंदा पानी, नालियों में प्रवाहित मल, सीवर लाइन का गंदा निष्कासित पानी समीपस्थ नदियों और समुद्र में गिरने से रोकना होगा। कारखानों के पानी में हानिकारक रासायनिक तत्त्व घुले रहते हैं जो नदियों के जल को विषाक्त कर देते हैं, परिणामस्वरूप जलचरों के जीवन को संकट का सामना करना पड़ता है।

इस अवसर पर शिक्षा निदेशालय के पूर्व आचार्या डॉ0 भास्करानन्द पाण्डेय ने कहा कि आज वायु प्रदूषण ने भी हमारे पर्यावरण को बहुत हानि होती है। जल प्रदूषण के साथ ही वायु प्रदूषण भी मानव के सम्मुख एक चुनौती है। माना कि आज मानव विकास के मार्ग पर अग्रसर है परंतु वहीं बड़े-बड़े कल-कारखानों की चिमनियों से लगातार उठने वाला धुआं, रेल व नाना प्रकार के डीजल व पेट्रोल से चलने वाले वाहनों के पाइपों से और इंजनों से निकलने वाली गैसें तथा धुआँ, जलाने वाला हाइकोक, ए.सी., इन्वर्टर, जनरेटर आदि से कार्बन डाइआक्साइड, नाइट्रोजन, सल्फ्यूरिक एसिड, नाइट्रिक एसिड प्रति क्षण वायुमंडल में घुलते रहते हैं।

इस अवसर पर श्री मृत्युञ्जय कुमार ने कहा कि सही मायनों में पर्यावरण पर हमारा भविष्य आधारित है, जिसकी बेहतरी के लिए ध्वनि प्रदूषण को और भी ध्यान देना होगा। अब हाल यह है कि महानगरों में ही नहीं बल्कि गाँवों तक में लोग ध्वनि विस्तारकों का प्रयोग करने लगे हैं। बच्चे के जन्म की खुशी, शादी-पार्टी सभी में डी.जे. एक आवश्यकता समझी जाने लगी है। जहां गाँवों को विकसित करके नगरों से जोड़ा गया है।

'' स्वच्छ जल एवं जल संरक्षण के उपाय '' विषय पर आधरित परिचर्चा

जल से ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की सृष्टि हुई है तथा जल से पृथ्वी का पर्यावरण संतुलित रहता है।-प्रो0 जगदीश प्रसाद सेमवाल

प्राख्रतिक जल संसाधनों के संरक्षण और संवर्धन से ही जल संकट का समाधान खोजा जा सकता है- डॉ0 जीतराम भट्ट

दिनांक 23.03.2019

प्रतिवर्ष 22 मार्च को विश्व जल दिवस मनाया जाता है। इसका उद्देश्य है विश्व के सभी विकसित और विकासशील देशों में स्वच्छ एवं सुरक्षित जल की उपलब्धता सुनिश्चित करवाना होता है साथ ही यह जल संरक्षण के महत्त्व पर भी लोगों में चेतना जागृत करना। सर्वविदित है कि जल संसार के सभी प्राणियों को जीवन देता है । ऋग्वेद के 'आपो देवता' सूक्त में जल को माता की संज्ञा दी गई है। अभिलेखों में जल को 'ब्रह्म' की संज्ञा देकर उसे चराचर जगत् का बीज कहा गया है। क्योंकि जल से ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की सृष्टि हुई है तथा इसी जल के प्राकृतिक संरक्षण, संवर्धन और नियंत्रण द्वारा इस पृथ्वी का पर्यावरण संतुलित रहता है। किन्तु उपभोक्तावादी पश्चिमी मानसिकता से ग्रस्त होकर हमने और हमारी विकासवादी सरकारों ने इस मातृतुल्य जल की जो बेकद्री की है । विकास के नाम पर जंगल और जमीन जैसे मूलभूत प्राकृतिक संसाधनों का इतनी निर्ममता से संदोहन किया है उसी का परिणाम है कि आज समूचे भारत का प्राकृतिक जलचक्र गड़बड़ा गया है और हम सब जलसंकट की समस्या से जूझ रहे हैं।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार एवं डॉ0 गोस्वामी गिरधारी लाल शास्त्री प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान के संयुक्त तत्त्वाधान में आयोजित '' स्वच्छ जल एवं जल संरक्षण के उपाय '' विषय पर आधारित परिचर्चा के मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता प्रो0 जगदीश प्रसाद सेमवाल ने व्यक्त किये ।

इस अवसर पर परिचर्चा के बारे में विस्तार से बताते हुए अकादमी के सचिव डॉ0 जीतराम भट्ट ने कहा कि प्राचीनकाल से ही संस्कृतज्ञों का महान योगदान जल के संवर्धन में रहा है । दिल्ली संस्कृत अकादमी जल संरक्षण एवं जल के महत्त्व को समझते हुये संस्कृत साहित्यों में जल के संरक्षण एवं स्वच्छ

जल की उपयोगिता पर संस्कृत साहित्यों में निहित ज्ञान पर एक पुस्तक को प्रकाशित किया जिसमें कई विद्वानों ने आपने लेख दिये । जलविज्ञानम् में कई विद्वानों ने 'प्राचीन भारत में जलविज्ञान जलसंरक्षण और जलप्रबंधन' पर अपना वक्तव्य दिया । जल जागरूकता अभियान के उसी संदर्भ में 'भारतीय जलविज्ञान' पर यह परिचर्चा सार्थक रहेगी । डॉ0 भट्ट ने आगे कहा कि पिछले आठ हजार वर्षों से भारत पर्यावरण संरक्षण, जल संग्रहण तथा जल प्रबन्धन से सम्बन्धित वैज्ञानिक तकनीकों के द्वारा अपनी जल संकट की समस्याओं को सुलझाता आया है। आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के पास जल संकट का कोई समाधान है ही नहीं। केवल प्राकृतिक जल संसाधनों के संरक्षण और संवर्धन द्वारा ही इस जल संकट का समाधान खोजा जा सकता है। इस विज्ञान और प्रौद्योगिकी के आधुनिक युग में भी जल संकट की ज्वलंत समस्या का निदान और समाधान खोजना है तो संस्कृत साहित्य की शरण में जाना होगा जहां सुरक्षित है आठ-दस हजार साल पुराना भारतीय जलसंचेतना, जलसंरक्षण और जलप्रबंधन का स्वर्णिम वैज्ञानिक इतिहास।

इस अवसर पर डॉ0 क्षेम चन्द ने कहा कि वेद में मानव जीवन को 'कृषि – जीवन' कहा गया है और इसीलिए , जलश्रोतों से हमारा रागात्मक सम्बन्ध रहा है । नदियों को हमने देवी-स्वरूपामाता की संज्ञा से अभिहित किया है । 'ऋग्वेद' की इस ऋचाओं में सरस्वती नदी का वर्णन मिलता है । इसी प्रकार से जल – चिकित्सा बहुत ही प्रभावी चिकित्सा पद्धति है , समस्त रोगों का निदान इससे सम्भव है। मनुष्य को चाहिये कि वह सागर, वर्षा, नदी, सरोवर आदि के जल को आवश्यकतानुसार चिकित्सा में उपयोग कर के खेती के संसाधन की तरह, जल का प्रयोग करके, निरोग, वेगवान, प्रखर, एवम् बलशाली बने और समाज के हित में अपनी प्रतिभा एवम् अपने बल का समुचित उपयोग कर सके । इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे ।

तीन दिवसीय संस्कृत शिक्षण कार्यशाला समापन समारोह

कार्यशालायें शिक्षकों को नई उर्जा देने का कार्य करती है – डॉ0 जीतराम भट्ट

छात्रा अध्यापकों को विषय विशेषज्ञों के माध्यम से संस्कृत शिक्षण की नई विधियों से अवगत कराया गया । डॉ0 जीतराम भट्ट

दिनांक 29.03.2019

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा करोलबाग, नई दिल्ली में दिल्ली के संस्कृत छात्र शिक्षकों के लिये आयोजित 'तीन दिवसीय संस्कृत शिक्षण प्रशिक्षण कार्यशाला' का आयोजन किया गया ।कार्यशाला का शुभारम्भ 27.03.2019 को किया गया था । इस तीन दिवसीय संस्कृत शिक्षण कार्यशाला के आज समापन के अवसर पर दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव डॉ0 जीतराम भट्ट ने कहा कि दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा दिल्ली के विभिन्न विश्वविद्यालयों से बी.एड करने वाले छात्र-छात्राओं के

लिये आयोजित की जाती है कि उन्हें प्रशिक्षण के दौरान एवं जब वे अपने जीवन में शिक्षक के लिये नियुक्त हो तो उन्हें किस प्रकार से अपने आप को तैयार रखना इस बारे में विस्तार से बताया जाता है । इस कार्यशाला में आये सभी संस्कृत शिक्षकों को संस्कृत शिक्षण के नये आयामों से अवगत कराया गया । इस तीन दिवसीय कार्यशाला में इन शिक्षकों के लिये अलग अलग विषयों पर नई जानकारी दी गई जिसमें अनौपचारिक चर्चा, संस्कृत माध्यम से संस्कृत शिक्षण, प्रश्नप्रत्र का प्ररूप एवं आदर्श प्रश्न प्रत्र, अनुप्रयुक्त व्याकरण, अपठित गद्यांश, पद्यांश, पाठ्यक्रम शिक्षण, संस्कृत में रोजगार आदि विषयों पर अनेक प्रकार की प्रविधियों को बताया गया । प्रयोगिक संस्कृत शिक्षण के प्रकार एवं लाभ, निबन्ध एवं कहानी लेखन आदि पर भी प्रशिक्षण की जानकारी दी गई । जिसके लिये विशेष शिक्षकों को आमंत्रित किया गया था । डॉ0 भट्ट ने आगे कहा कि मैंने अपने विद्यार्थी जीवन में संस्कृत को बहुत महत्त्व दिया है । संस्कृत के श्लोकों को याद कर संस्कृत में निहित ज्ञान विज्ञान के आधार पर आज भी जीवन को जीने का प्रयास करता हूँ। जिससे मुझे काफी सफलता भी मिलती है । संस्कृत भाषा का साहित्य अनेक अमूल्य ग्रन्थों का सागर है, इतना समृद्ध साहित्य किसी भी दूसरी भाषा का नहीं है और न ही किसी अन्य भाषा की परम्परा अविच्छिन्न प्रवाह के रूप में इतने दीर्ध काल तक नहीं चल पाई है । संस्कृत भाषा अति प्राचीन होने पर भी इस भाषा में शब्द निर्माण की क्षमता सबसे प्रबल है ।

डॉ0 जीतराम भट्ट ने कहा कि संस्कृत शिक्षकों के सर्वांगीण विकास के लिये समय समय पर संस्कृत शिक्षकों के लिये इस प्रकार की कार्यशालाओं का आयोजन किया गया है । प्रति वर्ष शिक्षा के क्षेत्र में नई नई प्रविधियों का प्रयोग किया जा रहा है । इस प्रकर की कार्यशालाओं के माध्यम से अकादमी संस्कृत शिक्षकों के ज्ञान को नवीन करना चाहती है । इस कार्यशाला में तीन दिनों तक संस्कृत शिक्षकों का को विभिन्न प्रकार की संस्कृत शिक्षण की तकनीकियों पर प्रशिक्षण दिया गया कि किस प्रकार से संस्कृत शिक्षा को आधुनिकता से जोड़ा जा रहा है और आप शिक्षक इन तकनीकी माध्यमों का प्रयोग कर छात्रों को लाभान्वित हुये होंगे। अकादमी द्वारा दिल्ली के महाविद्यालयों में बी.एड कर रहे ८0 शिक्षक शिक्षिकायें ने इस कार्यशाला में भाग लिया ।

इस अवसर पर दिल्ली संस्कृत अकादमी के सभी छात्र अध्यापकों ने अपने अनुभवों को साझा किया और कार्यशाला में ली गई जानकारी के बारे में अवगत कराया। सभी छात्र शिक्षकों को कार्यशाला में प्रशिक्षण के लिये अकादमी की ओर से प्रमाण पत्र दिये गये।

इस अवसर पर अनेक संस्कृत प्रेमी महनुभाव भी उपस्थित थे।

S. Mukherjee & Associates
(CHARTERED ACCOUNTANTS)

304, Prestige Chamber, 15A/1, W.E.A.
Karol Bagh, New Delhi-110 005
Tel. : 011-25740586, 25768411
Mob. : 9811444223
E-mail : ca.smukherjee@yahoo.com

DELHI SANSKRIT ACADEMY
GOVT. OF NCT OF DELHI
PLOT NO.5, JHANDEWALAN, KAROL BAGH, NEW DELHI-110005

FORM G.F.R.-19-A

UTILISATION CERTIFICATE UNDER ESTABLISHMENT EXPENSES (MH2205) GENERAL HEAD FOR THE YEAR 2019-2020

S.No	LETTER NO. & DATE	AMOUNT
1.	UNSPENT BALANCE AS ON 01.04.2019	8,54,062.38
2.	No.F.11/8/2019/ACL/363-369 DATED 14.06.2019	67,50,000
3.	No.F.11/08/2019/3931-3937 DATED 07.11.2019	1,26,46,000
4.	No.F.11/8/2019/ACL/7446 DATED 27-03-2020	67,50,000
	TOTAL	**2,70,00,062.38**

Certified that out of total grant of Rs.2,70,00,062.38/-(i.e. opening unspent balance of Rs.8,54,062.38/-and Rs.2,61,46,000/-sanctioned during the year 2019-2020) under Establishment Expenses MH 2205 (General Head) in favor of **Delhi Sanskrit Academy** under the Language Department, Govt. of NCT of Delhi as per detail given in the margin and income from the other sources amounting to Rs.2,69,279.26/-. A sum of Rs.2,24,89,909.47/- under Establishment Expenses (MH 2205) General Head has been utilized during the year 2019-2020 for the purposed which it was sanctioned and balance of Rs.47,79,432.17/- from General Head recoverable from the DELHI SANSKRIT ACADEMY Delhi and being carried over in the next Financial Year 2019-2020.

Certified that I have certified myself that the condition on which the grant-in-aid sanctioned has been fulfilled and I have exercised the following checks to see that the money actually utilized for the purpose for which it was sanctioned.

<u>kind of checks exercised</u>

1) Checking of Vouchers
2) Books of Accounts for the period from 01-04-2019 to 31-03-2020.
3) Checking of Bank Accounts.

As per our Audit Report of even date attached
For S.Mukherjee & Associates
Chartered Accountants
Firm Reg. No. 010603N

Counter Signed

CA. S. Mukherjee	**(Rohit kr Sethi)**	**(Saurabh kr Mishra)**	**(Dr. Jeet Ram Bhatt)**
Partner	A.A.O	Deputy Secretary (Admn.)	Secretary

M.No. 087605
Place : New Delhi
Date : 19/10/2020

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार, दिल्ली		
वर्ष 2019–2020 का सामान्य मद (कार्यक्रम) का तलपट		
मद	डेबिट	क्रेडिट
विविध सम्पत्तियां	4610086.13	0
पूंजी संचय	0	6196969.51
प्रतिभूति	0	19130
अग्रिम धन	0	0
अनुदान	0	26146000
डाक व्यय	125000	0
विविध व्यय	145678	0
मार्ग व्यय	37538	0
चैक निरस्तीकरण	0	554379.2
पुस्तकालय	46060	
दूरभाष	115039.67	0
पैट्रोल	21647	0
वाहन रख रखाव	4460	0
हाल सुरक्षा धन	0	0
लेखा परीक्षा शुल्क	24780	0
मानदेय	186000	0
विद्युत बिल	414500	0
कार्यालय सामग्री/स्टेशनरी	536118	0
कार्यालय रख रखाव	538196	0
डाक टिकिट शेष	14511	0
हस्तांतरण प्रतिक्षा प्राप्ति	0	4550
कार्यालय उपकरण	179960	0
समाचार पत्र	30441	0
न्यायालय सुरक्षाधन	702160	0
बैंक व्यय	16697	0
विद्यालय/महाविद्यालय संस्कृत सेवा सम्मान	73400.72	0
पुरुषोत्तम हिन्दी भवन न्यास समिति	0	0
चिकित्सा व्यय	0	0
गढ़वाली, कुमाऊनी, जौनसारी भाषा अकादमी	0	0
सामान्य मद वेतन	0	0
त्रिदिवसीय अ.भा. संस्कृत सम्मेलन	1832310.24	0
अ.भा. संस्कृत कवि सम्मेलन (स्वतंत्रता दिवस)	1138540.08	0
कानूनी व्यय	22000	0
संस्कृत उत्सव	4217723.4	
संस्कृत कवि सम्मेलन (गणतंत्र दिवस)	730929.08	0
संस्कृत लोक उत्सव	600	0
जीवन सुरक्षा के प्राथमिक चिकित्सा जानकारी	33000	0
जीवन सुरक्षा के लिए जीवन सुरक्षा पर संगोष्ठी	16600	0
हिन्दी भाषा साहित्य प्रचार–प्रसार के लिए संगणक की भूमिका पर संगोष्ठी	11400	0
दैनिक जीवन में आयुर्वेद का उपयोग विषय पर संगोष्ठी	17568	0
धन्वंतरी जयन्ती (संगोष्ठी)	2900	0
महात्मा गांधी जयंती संगोष्ठी	22435	0
राष्ट्रीय एकता में संस्कृत भाषा की उपयोगिता पर संगोष्ठी	10700	0
गुरुनानक देव जी के 550 वर्ष पर संगोष्ठी	16550	0
भारतीय संविधान के मौलिक कर्तव्यों पर संगोष्ठी	42002	0

खेल प्रतियोगिता गुरुकुलीय स्तर	349199	0
अ.भा.लघु कथा/नाटक लेखन प्रतियोगिता	217436.36	0
वाद विवाद प्रतियोगिता (शा./आ./स्ना./स्नात)	6000	0
संस्कृत काव्यालि प्रतियोगिता वि० स्तर	361038	0
व्याकरण सूत्र अन्त्याक्षरी प्रति (मध्यमा स्तर)	75879	0
काव्याली प्रतियोगिता (सा० महाविद्यालय स्तर)	54172	0
श्लोक संगीत प्रतियोगिता (वि० स्तर)	1347832.44	0
श्लोक संगीत प्रतियोगिता (मध्यमा स्तर)	70420	0
एकल श्लोक संगीत प्रतियोगिता (मध्यमा स्तर)	25417	0
एकल श्लोक संगीत प्रतियोगिता (विद्यालय स्तर)	376061	0
एकांकी नाटक प्रतियोगिता (मध्यमा स्तर)	91457	0
वाद निबंध लेखन प्रतियोगिता (शा./आ./स्ना./स्नातको.)	72976	0
लोक संगीत प्रतियोगिता (स्ना./स्नातकोत्तर)	83596	0
व्याकरण सूत्र अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता (शा./आ)	79906	0
संस्कृत वार्ता प्रतियोगिता (शा./आ./स्नात./स्नातकोत्तर)	56390	0
एकल श्लोक संगीत प्रतियोगिता (शा./आ./स्नात. /स्नातकोत्तर)	64654	0
संस्कृत वेदमंत्र अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता (मध्यमा/शा./आ. स्तर)	63469	0
कथा निबंध लेखन प्रतियोगिता (मध्यमा स्तर)	60692	0
अक्षर श्लोक प्रतियोगिता (मध्यमा स्तर)	50039	0
संस्कृत भाषण प्रतियोगिता (मध्यमा स्तर)	50764	0
वाद-विवाद प्रतियोगिता (मध्यमा स्तर)	55019	0
संस्कृत श्लोक अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता (मध्यमा स्तर)	386881.72	0
श्लोक उच्चारण प्रतियोगिता विद्यालय स्तर	302421	0
संस्कृत वाद -विवाद प्रतियोगिता विद्यालय स्तर	290263	0
संस्कृत भाषण प्रतियोगिता (विद्यालय स्तर)	263622	0
शलाका प्रतियोगिता	41432	0
संस्कृत प्रश्नमंच प्रतियोगिता (स्नातक/स्नातकोत्तर स्तर)	58963	0
चल चित्र गीत संस्कृत अनुवाद प्रतियोगिता (स्नातक/स्नातकोत्तर स्तर)	63202	0
केन्द्रीय संस्कृत प्रतियोगिता	501154.36	0
अक्षर श्लोक प्रतियोगिता (शा./आ./स्ना./स्नातकोत्तर स्तर)	1271	0
संस्कृत भाषण प्रतियोगिता (स्नातक/स्नातकोत्तर स्तर)	47988	0
प्राचीन काव्यों पर आधारित प्रतियोगिता (शा./आ./स्ना. /स्नातकोत्तर स्तर)	64995	0
श्लोक अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता (स्नातक/स्नातकोत्तर स्तरीय)	39589	0
चित्र आधारित संस्कृत कथा लेखन प्रतियोगिता	4499	0
अखिल भारतीय श्लोक समस्यापूर्ति प्रतियोगिता	25179	0
अखिल भारतीय नवोदित संस्कृत कवि प्रतियोगिता	22860	0
पाण्डुलिपि लेखन प्रतियोगिता	20483	0
अ.भा. संस्कृत शोध निबंध लेखन प्रतियोगिता	9000	0
व्यावहारिक संस्कृत अध्ययन केन्द्र	137870	0
संस्कृत अध्ययन केन्द्र	108950	0
ज्योतिष अध्ययन केन्द्र	165634	0
भारतीय प्रशासनिक सेवा परीक्षा	170105.36	0
आयुर्वेद अध्ययन केन्द्र	363612.36	0

योग अध्ययन केन्द्र	147376	0
पुरस्कार वितरण समारोह	405962	0
संस्कृत छात्रवृत्ति	1769140	0
संस्कृत प्रतिभा पुरस्कार	1973701	0
संस्कृत दिवस समारोह	630387.36	0
पुस्तक मेला	116728.44	0
सांस्कृतिक कार्यक्रम	206930.36	0
विविध कार्यक्रम	54869	0
संस्कृत वार्तावली	7361	0
संस्कृत मंजरी	339888.72	0
अकादमी प्रकाशन	7788	0
उपनिषद खण्ड	18000	0
वार्षिकी	44761	0
नागरिक घोषणा पत्र	17711	0
संस्कृत अध्ययन केन्द्र से प्राप्त आय	0	139800
अकादमी प्रकाशन से प्राप्त आय		74498
विविध आय	0	24631.26
कैश	41285	0
बैंक शेष	4738147.17	0
योग	33159957.97	33159957.97

As per our Audit Report of even date attached
For S.Mukherjee & Associates
Chartered Accountants
Firm Reg. No. 010603N

CA.S.Mukherjee
Partner
M.No. 087605
Place : New Delhi
Date : 19/10/20

(Rohit Kr Sethi)
A.A.O

(Saurabh Kr Mishra)
Deputy Secretary (Admn.)

(Dr. Jeet Ram Bhatt)
Secretary

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार, दिल्ली

सामान्य मद (कार्यक्रम) के अन्तर्गत वर्ष 2019–2020 का प्राप्ति एवं भुगतान खाता

प्राप्ति	राशि 2019–20	राशि 2018–19	भुगतान	राशि 2019–20	राशि 2018–19
प्रारम्भिक शेष			विविध सम्पत्तियाँ	215335	339840
नगद 130957			कार्यालय व्यय	2182719.67	2446165.25
बैंक 723105.38	854062.38	665517.88	प्रतिभूति	15000	0
अनुदान	26146000	31900000	हॉल सुरक्षा धन	0	8000
अग्रिम प्राप्ति	0	0	विज्ञापन संस्कृत पत्रिका	0	0
संस्कृत अध्ययन से आय	139800	175400	संस्कृत सम्मेलन	3677299.4	5090859.25
अकादमी प्रकाशन से आय	74498	63954	संस्कृत सम्मान	73400.72	1521001
विविध आय	24631.26	32200	संगोष्ठी व्याख्यान माला	180516	689290
हॉल सुरक्षा धन	8000	178200	संस्कृत उत्सव	4218323.4	9303141.85
हस्तांतरण प्रतीक्षा प्राप्ति	4350	0	संस्कृत नाटक	91457	173868
श्री पुरुषोत्तम हिन्दी भवन न्याय समिति	18000	0	संस्कृत अध्ययन केन्द्र/शिविर	1093547.72	2349979.35
			छात्रवृत्ति	1769140	2510678
			प्रतिभा पुरस्कार	1973701	1836386
			सांस्कृतिक कार्यक्रम	206930.36	87300
			संस्कृत विविध कार्यक्रम	54869	363578.6
			संस्कृत प्रतियोगिता	5664762.88	5490916.55
			संस्कृत प्रकाशन	428148.72	402365.7
			पुस्तकालय	46060	6190
			संस्कृत साहित्य भेंट	0	0
			फिल्म फेस्टीवल	0	0
			पुस्तक मेला	116728.44	55920
			हिन्दी भवन		42480
			समारोह	1036349.36	942859.95
			चिकित्सा व्यय	0	0
			योग	**23044288.67**	**33660819.5**
			घटाया		
			चैक निरस्तीकरण	554379.2	1499610
			योग खर्चा	22489909.47	32161209.5
			अंतिम शेष		
			नगद 41285		
			बैंक 4738147.17	4779432.17	854062.38
योग	27269341.64	33015271.88	योग	27269341.64	33015271.88

As per our Audit Report of even date attached
For S.Mukherjee & Associates
Chartered Accountants
Firm Reg. No. 010603N

CA. S. Mukherjee
Partner
M.No. 087605
Place : New Delhi
Date : 19/10/20

(Rohit kr Sethi)
A.A.O

(Saurabh kr Mishra)
Deputy Secretary (Admn.)

(Dr. Jeet Ram Bhatt)
Secretary

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार, दिल्ली

सामान्य मद (कार्यक्रम) के अन्तर्गत वर्ष 2019–2020 का आय एवं व्यय खाता।

व्यय		राशि 2019–20	राशि 2018–19	आय	राशि 2019–20	राशि 2018–19
प्रारम्भिक डाक टिकट	14511			अनुदान	26146000	31900000
कार्यालय व्यय	2182719.67			चैक निरस्तीकरण	0	0
	2197230.67			संस्कृत अध्ययन केंद्र	139800	175400
डाक टिकट शेष	29116	2168114.67	2446463.25	संस्कृत प्रकाशन से आय	74498	63954
विज्ञापन		0	0	विविध आय	24631.26	32200
सम्मेलन		3701779.4	5090859.25	प्रतिभूति कालातीत जमा	0	0
संस्कृत सम्मान		73400.72	1521001			
संगोष्ठी व्याख्यान माला		180516	689290			
[illegible]		1036349.36	942859.95			
संस्कृत नाटक		91457	173868			
संस्कृत अध्ययन केंद्र/शिविर		1093547.72	2349979.35			
छात्रवृत्ति		1769140	2510678			
प्रतिभा पुरस्कार		1973701	1836386			
सांस्कृतिक कार्यक्रम		206930.36	87300			
विविध कार्यक्रम		54869	363578.6			
प्रतियोगिता		5664762.88	5490916.55			
संस्कृत प्रकाशन		428148.72	402365.7			
पुस्तकालय		46060	6190			
संस्कृत साहित्य भेंट		0	0			
फिल्म फेस्टिवल		0	0			
पुस्तक मेला		116728.44	55920			
संस्कृत सप्ताह		4218323.4	9303141.85			
चिकित्सा व्यय		0	0			
योग		**22823828.67**	**33270797.5**	**योग**	**26384929.26**	**32171554**
घटाना						
चैक निरस्तीकरण		554379.2	1499610			
कुल खर्च		22269449.47	31771187.5			
व्यय से आय की अधिकता		4115479.79	400366.5	आय से व्यय की अधिकता		
योग		26384929.26	32171554	योग	26384929.26	32171554

As per our Audit Report of even date attached
For S.Mukherjee & Associates
Chartered Accountants
Firm Reg. No. 010603N

CA. S. Mukherjee
Partner
M.No. 087605
Place : New Delhi
Date : 19/10/20

(Rohit kr Sethi)
A.A.O

(Saurabh kr Mishra)
Deputy Secretary (Admn.)

(Dr. Jeet Ram Bhatt)
Secretary

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार, दिल्ली

सामान्य मद (कार्यक्रम) के अन्तर्गत वर्ष 2019–2020 का आर्थिक चिट्ठा

दायित्व	राशि 2019–20	राशि 2018–19	सम्पत्तियाँ	राशि 2019–20	राशि 2018–19
पूंजी संचय	6196969.51	5796603.01	सम्पत्तियाँ	4610086.13	4270246.13
जमा व्यय से आय की अधिकता	4115479.79	400366.5	जमा वित्त वर्ष में खरीद	215335	339840
घटाया आय से व्यय की अधिकता			कुल सम्पत्तियाँ	4825421.13	4610086.13
कुल पूंजी संचय	10312449.3	6196969.51	न्यायालय सुरक्षा धन	702160	702160
प्रतिभूति	19130	34130	हॉल सुरक्षा धन	0	8000
हस्तांतरण प्रतीक्षा प्राप्ति	4550	200	हिन्दी भवन	0	42480
			अंतिम शेष		
			नगद 41285		
			बैंक 4738147.17		
			डाक टिकट 29116	4808548.17	868573.38
योग	10336129.3	6231299.51	योग	10336129.3	6231299.51

As per our Audit Report of even date attached
For S.Mukherjee & Associates
Chartered Accountants
Firm Reg. No. 010603N

CA. S.Mukherjee
Partner
M.No. 087605
Place : New Delhi
Date : 19/10/20

(Rohit kr Sethi)
A.A.O

(Saurabh kr Mishra)
Deputy Secretary (Admn.)

(Dr. Jeet Ram Bhatt)
Secretary

कार्यालय व्यय		
क्रम सं.	कार्यालय व्यय	राशि
1	डाक व्यय	125000
2	विविध व्यय	145678
3	मार्ग व्यय	37538
4	दूरभाष	115039.67
5	पैट्रोल	21647
6	वाहन रख रखाव	4460
7	लेखा परीक्षा शुल्क	24780
8	विद्युत बिल	414500
9	कार्यालय सामग्री / स्टेशनरी	500743
10	कार्यालय रख रखाव	538196
11	समाचार पत्र	30441
12	मानदेय	186000
13	बैंक चार्ज	16697
14	कानूनी व्यय	22000
	योग	**2182719.67**

सम्मान		
क्रम सं.	सम्मान	राशि
1	विद्यालय / महाविद्यालय संस्कृत सेवा सम्मान	73400.72
	योग	**73400.72**

सम्मेलन		
क्रम सं.	सम्मेलन	राशि
1	त्रिदिवसीय अ.भा.संस्कृत सम्मेलन	1807830.24
2	अ.भा.संस्कृत कवि सम्मेलन (स्वतन्त्रता दिवस)	1138540.08
3	संस्कृत कवि सम्मेलन (गणतंत्र दिवस)	730929.08
	योग	**3677299.4**

जयंती / संगोष्ठी / परिचर्चा / परिसंवाद		
क्रम सं.	जयंती / संगोष्ठी / परिचर्चा / परिसंवाद	राशि
1	जीवन सुरक्षा के लिए प्रारम्भिक चिकित्सा जरूरी	33000
2	जीवन सुरक्षा के लिए जीवन सुरक्षा पर संगोष्ठी	16600
3	हिन्दी भाषा साहित्य प्रचार प्रसार के लिए संगठक की भूमिका पर संगोष्ठी	11400
4	दैनिक जीवन में आयुर्वेद का उपयोग (संगोष्ठी)	17568
5	धन्वंतरी जयन्ती (संगोष्ठी)	2900
6	महात्मा गांधी जयंती (संगोष्ठी)	22435
7	गुरु नानक देव जी के 550 वर्ष पर संगोष्ठी	16550
8	राष्ट्रीय एकता में संस्कृत भाषा की उपयोगिता (संगोष्ठी)	10700
9	भारतीय संविधान के मौलिक कर्त्तव्यों पर संगोष्ठी	42002
10	संस्कृत वार्तावली	7361
	योग	**180516**

प्रतियोगिताएँ		
क्रम सं.	प्रतियोगिताएँ	राशि
1	खेल प्रतियोगिता (सं.वि/महा स्तर)	349199
2	अखिल भारतीय संस्कृत लघु कथा /लेखन प्रतियोगिता	217436.36
3	वाद विवाद प्रतियोगिता (शा./आ/स्ना./स्नात)	6000
4	संस्कृत काव्यालि प्रतियोगिता वि.स्तर	361038
5	व्याकरण सूत्र अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता (मध्यमा स्तर)	75879
6	काव्यालि प्रतियोगिता (सा. महाविद्यालय स्तर)	54172
7	लोक संगीत प्रतियोगिता (वि.स्तर)	1347832.44
8	लोक संगीत प्रतियोगिता (मध्यमा स्तर)	70420
9	एकल श्लोक संगीत प्रति (मध्यमा स्तर)	25417
10	एकल श्लोक संगीत प्रति (वि.स्तर)	376061
11	सद्य निबंध लेखन प्रतियोगिता (शा/आ/स्ना/स्नात)	72976
12	लोक संगीत प्रतियोगिता (स्नात/स्नातकोत्तर स्तर)	83596
13	व्याकरण सूत्र अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता (शा/आ स्तर)	79906
14	संस्कृत वार्ता प्रतयोगिता (शा./आ./स्ना./स्नातकोत्तर)	56390
15	एकल श्लोक संगीत प्रतियोगिता (शा./आ./स्ना./स्नातकोत्तर स्तर)	64654
16	संस्कृत वेदमंत्र अन्त्याक्षरी प्रति. (मध्यमा/शा./आ. स्तर)	63469
17	सद्य निबंध लेखन प्रतियोगिता (मध्यमा स्तर)	60692
18	अक्षर श्लोक प्रतियोगिता (मध्यमा स्तर)	50039
19	संस्कृत भाषण प्रतियोगिता (मध्यमा स्तर)	50764
20	वाद–विवाद प्रतियोगिता मध्यमा स्तर	55019
22	संस्कृत श्लोक अन्त्याक्षरी प्रति. (शा./आ/मध्यमा स्तर)	386881.72
23	लोकोच्चारण प्रति. (वि.स्तर)	302421
24	संस्कृत वाद–विवाद प्रति. (वि.स्तर)	290263
25	संस्कृत भाषण प्रतियोगिता (वि.स्तर)	263622
26	लाका प्रतियोगिता (मध्यमा/शा./आ. स्तर)	41432
27	संस्कृत प्रश्नमंच प्रतियोगिता (स्नातक/स्नातकोत्तर स्तर)	58963
28	चल चित्र गीत संस्कृत अनुवाद प्रति. (स्नातक/स्नातकोत्तर स्तर)	63202
29	केन्द्रीय संस्कृत प्रतियोगिता	501154.36
30	अक्षर श्लोक प्रतियोगिता (शा./आ./स्ना./स्नातकोत्तर स्तर)	1271
31	संस्कृत भाषण प्रतियोगिता (स्नातक/स्नातकोत्तर स्तर)	47988
32	प्राचीन काव्यों पर आधारित प्रति. (शा./आ./स्ना./स्नातकोत्तर स्तर)	64995
33	लोक अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता (स्ना./स्नातकोत्तर स्तर)	39589
35	चित्र आधारित संस्कृत कथा लेखन प्रतियोगिता	4499
36	अखिल भारतीय श्लोक समस्यापूर्ति प्रतियोगिता	25179
37	अखिल भारतीय नवोदित संस्कृत कवि प्रतियोगिता	22860
38	पाण्डुलिपि लेखन प्रतियोगिता	20483
39	अ.भा.संस्कृत शोध निबंध लेखन प्रतियोगिता	9000
	योग	**5664762.88**

नाटक		
क्रम सं.	नाटक	राशि
1	संस्कृत एकांकी नाटक प्रतियोगिता (मध्यमा स्तर)	91457
	योग	**91457**

संस्कृत अध्ययन केन्द्र		
क्रम सं.	संस्कृत अध्ययन केन्द्र	राशि
1	व्यावहारिक संस्कृत शिक्षण केन्द्र	137870
2	संस्कृत अध्ययन केन्द्र	108950
3	ज्योतिष अध्ययन केन्द्र	165634
4	भारतीय प्रशासनिक सेवा परीक्षा	170105.36
5	आयुर्वेद अध्ययन केन्द्र	363612.36
6	योग अध्ययन केन्द्र	147376
	योग	**1093547.72**

छात्रवृत्ति		
क्रम सं.	छात्रवृत्ति	राशि
1	संस्कृत छात्रवृत्ति	1769140
	योग	**1769140**

संस्कृत प्रतिभा पुरस्कार		
क्रम सं.	संस्कृत प्रतिभा पुरस्कार	राशि
1	संस्कृत प्रतिभा पुरस्कार	1973701
	योग	**1973701**

सांस्कृतिक कार्यक्रम		
क्रम सं.	सांस्कृतिक कार्यक्रम	राशि
1	सांस्कृतिक कार्यक्रम	206930.36
	योग	**206930.36**

संस्कृत विविध कार्यक्रम		
क्रम सं.	संस्कृत विविध कार्यक्रम	राशि
1	संस्कृत विविध कार्यक्रम	54869
	योग	**54869**

पुस्तक मेला		
क्रम सं.	पुस्तक मेला	राशि
1	पुस्तक मेला	116728.44
	योग	**116728.44**

समारोह		
क्रम सं.	समारोह	राशि
1	पुरस्कार वितरण समारोह	405962
2	संस्कृत दिवस समारोह	630387.36
	योग	**1036349.36**

पुस्तकालय		
क्रम सं.	पुस्तकालय	राशि
1	पुस्तकालय	46060
	योग	**46060**

प्रकाशन		
क्रम सं.	प्रकाशन	राशि
1	संस्कृत मंजरी	339888.72
2	अकादमी प्रकाशन	7788
3	उप निषद खण्ड	18000
4	वार्षिकी	44761
5	नागरिक घोषणा पत्र	17711
	योग	**428148.72**

संस्कृत उत्सव		
क्रम सं.	संस्कृत उत्सव	राशि
1	संस्कृत उत्सव	4217723.4
2	संस्कृत लोक उत्सव	600
	योग	**4218323.4**

विविध सम्पत्तियाँ		
क्रम सं.	संस्कृत उत्सव	राशि
1	फोटो कॉपी मशीन	179960
2	यू.पी.एस–6	10575
3	प्रिंटर एच.पी–2	24800
	योग	**215335**

As per our Audit Report of even date attached

For S.Mukherjee & Associates

Chartered Accountants

Firm Reg. No. 010603N

S. MUKHERJEE & ASSOCIATES CHARTERED ACCOUNTANTS F.No. 010603N NEW DELHI

CA. S. Mukherjee
Partner
M.No. 087605
Place : New Delhi
Date : 19/10/20

(Rohit kr Sethi)
A.A.O

(Saurabh kr Mishra)
Deputy Secretary (Admn.)

(Dr. Jeet Ram Bhatt)
Secretary

S. Mukherjee & Associates
(CHARTERED ACCOUNTANTS)

304, Prestige Chamber, 15A/1, W.E.A.
Karol Bagh, New Delhi-110 005
Tel. : 011-25740586, 25768411
Mob. : 9811444223
E-mail : ca.smukherjee@yahoo.com

DELHI SANSKRIT ACADEMY
GOVT. OF NCT OF DELHI
PLOT NO.5, JHANDEWALAN, KAROL BAGH, NEW DELHI-110005

FORM G.F.R.-19-A

UTILISATION CERTIFICATE UNDER ESTABLISHMENT EXPENSES (MH2205) SALARY HEAD FOR THE YEAR 2019-2020

S.No	LETTER NO. & DATE	AMOUNT
1.	UNSPENT BALANCE AS ON 01.04.2019	1,16,87,708.63
2.	No.F.11/8/2019/ACL/363-369 DATED 14.06.2019	61,25,000
3.	No.F.11/08/2019/3931-3937 DATED 07.11.2019	5,62,000
4.	No.F.11/8/2019/ACL/7446 DATED 27-03-2020	61,25,000
	TOTAL	**2,44,99,708.63**

Certified that out of total grant of Rs.2,44,99,708.63/-(i.e. opening unspent balance of Rs.1,16,87,708.63/-and Rs.1,28,12,000/-sanctioned during the year 2019-2020) under Establishment Expenses MH 2205 (Salary Head) in favour of **Delhi Sanskrit Academy** under the Language Department, Govt. of NCT of Delhi as per detail given in the margin and income from the other sources amounting to Rs.0/-. A sum of Rs.1,94,63,476.26/-under Establishment Expenses (MH 2205) Salary Head has been utilized during the year 2019-2020 for the purposed which it was sanctioned and balance of Rs.50,36,232.37/- from Salary Head recoverable from the DELHI SANSKRIT ACADEMY Delhi and being carried over in the next Financial Year 2019-2020.

Certified that I have certified myself that the condition on which the grant-in-aid sanctioned has been fulfilled and I have exercised the following checks to see that the money actually utilized for the purpose for which it was sanctioned.

kind of checks exercised

1) Checking of Vouchers
2) Books of Accounts for the period from 01-04-2019 to 31-03-2020.
3) Checking of Bank Accounts.

As per our Audit Report of even date attached
For S.Mukherjee & Associates **Counter Signed**
Chartered Accountants
Firm Reg. No. 010603N

CA. S. Mukherjee	**(Rohit kr Sethi)**	**(Saurabh kr Mishra)**	**(Dr. Jeet Ram Bhatt)**
Partner	A.A.O	Deputy Secretary (Admn.)	Secretary
M.No. 087605			

19/10/20

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार, दिल्ली
वर्ष 2019–2020 का सामान्य वेतन मद का तलपट

मद	डेबिट	क्रेडिट
अनुदान		12812000
वेतन एवं भत्ते	19365307.26	
चिकित्सा व्यय	76796	
एल टी सी	21373	
पूंजी संचय		11687708.63
सामान्य मद समारोह		0
अंतिम शेष बैंक	5036232.37	
योग	**24499708.63**	**24499708.63**

As per our Audit Report of even date attached
For S.Mukherjee & Associates
Chartered Accountants
Firm Reg. No. 010603N

CA. S. Mukherjee
Partner
M.No. 087605
Place : New Delhi
Date : 19/10/20

(Rohit kr Sethi)
A.A.O

(Saurabh kr Mishra)
Deputy Secretary (Admn.)

(Dr. Jeet Ram Bhatt)
Secretary

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार, दिल्ली

सामान्य वेतन मद के अन्तर्गत वर्ष 2019–2020 का प्राप्ति एवं भुगतान खाता

प्राप्ति	राशि 2019–20	राशि 2018–19	भुगतान	राशि 2019–20	राशि 2018–19
प्रारम्भिक शेष	11687708.63	4826104.88	वेतन एवं भत्ते	19365307.26	15919729.25
अनुदान	12812000	23500000	चिकित्सा व्यय	76796	526827
			एल.टी.सी	21373	191840
			बैंक व्यय	0	0
			योग	19463476.26	16638396.25
			अंतिम शेष	5036232.37	11687708.63
योग	24499708.63	28326104.88	योग	24499708.63	28326104.88

As per our Audit Report of even date attached

For S.Mukherjee & Associates

Chartered Accountants

Firm Reg. No. 010603N

CA. S. Mukherjee
Partner
M.No. 087605
Place : New Delhi
Date : 19/10/20

(Rohit kr Sethi)
A.A.O

(Saurabh kr Mishra)
Deputy Secretary (Admn.)

(Dr. Jeet Ram Bhatt)
Secretary

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार, दिल्ली

सामान्य वेतन मद के अन्तर्गत वर्ष 2019–2020 का आय एवं व्यय खाता

व्यय	राशि 2019–20	राशि 2018–19	आय	राशि 2019–20	राशि 2018–19
वेतन एवं भत्ते	19365307.26	15919729.25	अनुदान	12812000	23500000
चिकित्सा व्यय	76796	526827			
एल.टी.सी	21373	191840			
बैंक व्यय	0	0			
योग	19463476.26	16638396.25	योग	12812000	23500000
व्यय से आय की अधिकता		6861603.75	आय से व्यय की अधिकता	6651476.26	
योग	19463476.26	23500000	योग	19463476.26	23500000

As per our Audit Report of even date attached

For S.Mukherjee & Associates

Chartered Accountants

Firm Reg. No. 010603N

CA. S. Mukherjee
Partner
M.No. 087605
Place : New Delhi
Date : 19/10/20

(Rohit kr Sethi)
A.A.O

(Saurabh kr Mishra)
Deputy Secretary (Admn.)

(Dr. Jeet Ram Bhatt)
Secretary

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार, दिल्ली

सामान्य वेतन मद के अन्तर्गत वर्ष 2019–2020 का आर्थिक चिट्ठा

दायित्व	राशि 2019–20	राशि 2018–19	सम्मपत्तियाँ	राशि 2019–20	राशि 2018–19
पूंजी संचय	11687708.63	4826104.88	बैंक	5036232.37	11687708.63
जमा व्यय से आय की अधिकता		6861603.75			
घटाया आय से व्यय की अधिकता	6651476.26				
योग	5036232.37	11687708.63	योग	5036232.37	11687708.63

As per our Audit Report of even date attached

For S.Mukherjee & Associates

Chartered Accountants

Firm Reg. No. 010603N

CA S. Mukherjee	**(Rohit kr Sethi)**	**(Saurabh kr Mishra)**	**(Dr. Jeet Ram Bhatt)**
Partner	A.A.O	Deputy Secretary (Admn.)	Secretary

M.No. 087605

Place : New Delhi

Date : 19/10/20

S. Mukherjee & Associates
(CHARTERED ACCOUNTANTS)

304, Prestige Chamber, 15A/1, W.E.A.
Karol Bagh, New Delhi-110 005
Tel. : 011-25740586, 25768411
Mob. : 9811444223
E-mail : ca.smukherjee@yahoo.com

DELHI SANSKRIT ACADEMY
GOVT. OF NCT OF DELHI
PLOT NO.5, JHANDEWALAN, KAROL BAGH, NEW DELHI-110005

FORM G.F.R.-19-A

UTILISATION CERTIFICATE UNDER HEAD TEACHING PROGRAMME (MH2202) GENERAL HEAD FOR THE YEAR 2019-2020

S.No	LETTER NO. & DATE	AMOUNT
1.	UNSPENT BALANCE AS ON 01.04.2019	10,20,504.35
2.	No.F.11/8/2019/ACL/363-369 DATED 14.06.2019	3,75,000
3.	No.F.11/8/2019/ACL/7446 DATED 27-03-2020	1,04,000
	TOTAL	**14,99,504.35**

Certified that out of total grant of Rs.14,99,504.35/-(i.e. opening unspent balance of Rs. 10,20,504.35/-and Rs.4,79,000/-sanctioned during the year 2019-2020) under Teaching Programme Establishment Expenses MH 2202 (General Head) in favour of **Delhi Sanskrit Academy** under the Language Department, Govt. of NCT of Delhi as per detail given in the margin and income from the other sources amounting to Rs.16,575/- A sum of Rs.3,07,799.72/- under Teaching Programme (MH 2202) General Head has been utilized during the year 2019-2020 for the purpose which it was sanctioned and balance of Rs.12,08,279.63/- from Teaching Head recoverable from the DELHI SANSKRIT ACADEMY Delhi and being carried over in the next Financial Year 2019-2020.

Certified that I have certified myself that the condition on which the grant-in-aid sanctioned has been fulfilled and I have exercised the following checks to see that the money actually utilized for the purpose for which it was sanctioned.

kind of checks exercised

1) Checking of Vouchers
2) Books of Accounts for the period from 01-04-2019 to 31-03-2020.
3) Checking of Bank Accounts.

As per our Audit Report of even date attached
For S.Mukherjee & Associates **Counter Signed**
Chartered Accountants
Firm Reg. No. 010603N

CA. S. Mukherjee
Partner
M.No. 087605
Place : New Delhi
Date : 19/10/20

(Rohit kr Sethi)
A.A.O

(Saurabh kr Mishra)
Deputy Secretary (Admn.)

(Dr. Jeet Ram Bhatt)
Secretary

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार, दिल्ली
वर्ष 2019–2020 का शिक्षण सामान्य मद का तलपट

मद	डेबिट	क्रडिट
अनुदान		479000
मार्ग व्यय	315	
संस्कृत चंद्रिका	275283.72	
डाक व्यय	30000	
डाक टिकिट शेष	2583	
विविध व्यय	1781	
पूंजी संचय		1023087.35
संस्कृत शिक्षण कार्यशाला	420	
अकादमी प्रकाशन से प्राप्त आय (संस्कृत चंद्रिका)		16575
नगद	87682	
बैंक	1120597.63	
योग	**1518662.35**	**1518662.35**

As per our Audit Report of even date attached
For S.Mukherjee & Associates
Chartered Accountants
Firm Reg. No. 010603N

CA. S. Mukherjee	(Rohit kr Sethi)	(Saurabh kr Mishra)	(Dr. Jeet Ram Bhatt)
Partner	A.A.O	Deputy Secretary (Admn.)	Secretary

M.No. 087605
Place : New Delhi
Date : 19/10/20

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार, दिल्ली

शिक्षण मद सामान्य के अन्तर्गत वर्ष 2019–2020 का प्राप्ति एवं भुगतान खाता

प्राप्ति	राशि 2019–20	राशि 2018–19	भुगतान	राशि 2019–20	राशि 2018–19
प्रारम्भिक शेष			संस्कृत चन्द्रिका	275283.72	170367
नगद – 91034			डाक व्यय	30000	21792
बैंक – 929470.35	1020504.35	262558	मार्ग व्यय	315	30
			विविध व्यय	1781	0
अनुदान	479000	1500000	संस्कृत शिक्षण प्रतियोगिता	0	22801
अकादमी प्रकाशन से आय	16575	30350	त्रिदिवसीय संस्कृत शिक्षक कार्यशाला	0	265737
			पंचदिवसीय संस्कृत शिक्षण कार्यशाला	0	291676.65
			संस्कृत शिक्षण कार्यशाला	420	0
			योग	307799.72	772403.65
			अंतिम शेष		
			नगद – 87682		
			बैंक – 1120597.63	1208279.63	1020504.35
योग	1516079.35	1792908	योग	1516079.35	1792908

As per our Audit Report of even date attached

For S.Mukherjee & Associates

Chartered Accountants

Firm Reg. No. 010603N

CA. S. Mukherjee
Partner
M.No. 087605
Place : New Delhi
Date : 19/10/20

(Rohit kr Sethi)
A.A.O

(Saurabh kr Mishra)
Deputy Secretary (Admn.)

(Dr. Jeet Ram Bhatt)
Secretary

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार, दिल्ली
शिक्षण मद सामान्य के अन्तर्गत वर्ष 2019–2020 का आय एवं व्यय खाता

व्यय		राशि 2019–20	राशि 2018–19	आय	राशि 2019–20	राशि 2018–19
संस्कृत चन्द्रिका		275283.72	170367	अनुदान	479000	1500000
डाक व्यय				अकादमी प्रकाशन से आय	16575	30350
प्रारम्भिक	2583					
जमा खर्च	30000					
शेष	7338	25245	19280			
मार्ग व्यय		315	30			
संस्कृत शिक्षक प्रतियोगिता		0	22801			
त्रिदिवसीय संस्कृत शिक्षक कार्यशाला		0	265737			
पंचदिवसीय संस्कृत शिक्षण कार्यशाला		0	291676.65			
विविध व्यय		1781	0			
संस्कृत शिक्षण कार्यशाला		420	0			
योग		303044.72	769891.65	योग	495575	1530350
व्यय से आय की अधिकता		192530.28	760458.35	आय से व्यय की अधिकता		
योग		495575	1530350	योग	495575	1530350

As per our Audit Report of even date attached
For S.Mukherjee & Associates
Chartered Accountants
Firm Reg. No. 010603N

(S. Mukherjee)
Partner
M.No. 087605
Place : New Delhi
Date : 19/10/20

(Rohit kr Sethi)
A.A.O

(Saurabh kr Mishra)
Deputy Secretary (Admn.)

(Dr. Jeet Ram Bhatt)
Secretary

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार, दिल्ली

शिक्षण मद सामान्य के अन्तर्गत वर्ष 2019–2020 का आर्थिक चिट्ठा

दायित्व	राशि 2019–20	राशि 2018–19	सम्मपत्तियाँ	राशि 2019–20	राशि 2018–19
पूंजी संचय	1023087.35	262629	डाक टिकट शेष	7338	2583
जमा व्यय से आय की अधिकता	192530.28	760458.35	नगद – 87682		
घटाया आय से व्यय की अधिकता			बैंक – 1120597.63	1208279.63	1020504.35
योग	1215617.63	1023087.35	योग	1215617.63	1023087.35

As per our Audit Report of even date attached

For S.Mukherjee & Associates

Chartered Accountants

Firm Reg. No. 010603N

CA. S. Mukherjee
Partner
M.No. 087605
Place : New Delhi
Date : 19/10/20

(Rohit kr Sethi)
A.A.O

(Saurabh kr Mishra)
Deputy Secretary (Admn.)

(Dr. Jeet Ram Bhatt)
Secretary

S. Mukherjee & Associates
(CHARTERED ACCOUNTANTS)

304, Prestige Chamber, 15A/1, W.E.A
Karol Bagh, New Delhi-110 005
Tel. : 011-25740586, 2576841
Mob. : 981144422
E-mail : ca.smukherjee@yahoo.com

DELHI SANSKRIT ACADEMY
GOVT. OF NCT OF DELHI
PLOT NO.5, JHANDEWALAN, KAROL BAGH, NEW DELHI-110005

FORM G.F.R.-19-A

UTILISATION CERTIFICATE UNDER ESTABLISHMENT EXPENSES (MH2202) SALARY HEAD FOR THE YEAR 2019-2020

S.No	LETTER NO. & DATE	AMOUNT
1.	UNSPENT BALANCE AS ON 01.04.2019	1,08,36,887
2.	No.F.11/8/2019/ACL/363-369 DATED 14.06.2019	75,00,000
3.	No.F.11/08/2019/3931-3937 DATED 07.11.2019	41,63,000
4.	No.F.11/8/2019/ACL/7446 DATED 27-03-2020	75,00,000
	TOTAL	2,99,99,887

Certified that out of total grant of Rs.2,99,99,887/-(i.e. opening unspent balance of Rs.1,08,36,887/-and Rs.1,91,63,000/-sanctioned during the year 2019-2020) under Teaching Programme MH 2202 (Salary Head) in favour of **Delhi Sanskrit Academy** under the Language Department, Govt. of NCT of Delhi as per detail given in the margin and income from the other sources amounting to Rs.0/-. A sum of Rs.2,47,87,850/- under Teaching Programme(MH 2202) Salary Head has been utilized during the year 2019-2020 for the purpose which it was sanctioned and balance of Rs.52,12,037/-from Teaching Head recoverable from the DELHI SANSKRIT ACADEMY Delhi and being carried over in the next Financial Year 2019-2020.

Certified that I have certified myself that the condition on which the grant-in-aid sanctioned has been fulfilled and I have exercised the following checks to see that the money actually utilized for the purpose for which it was sanctioned.

kind of checks exercised

1) Checking of Vouchers
2) Books of Accounts for the period from 01-04-2019 to 31-03-2020.
3) Checking of Bank Accounts.

As per our Audit Report of even date attached

For S.Mukherjee & Associates — **Counter Signed**

Chartered Accountants
Firm Reg. No. 010603N

CA. S. Mukherjee	(Rohit kr Sethi)	(Saurabh kr Mishra)	(Dr. Jeet Ram Bhatt)
Partner	A.A.O	Deputy Secretary (Admn.)	Secretary

M.No. 087605
Place : New Delhi
Date : 19/10/20

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार, दिल्ली

वर्ष 2019–2020 का शिक्षण वेतन मद का तलपट

मद	डेबिट	क्रेडिट
पूंजी संचय		10836887
अनुदान		19163000
वेतन एवं भत्ते	24787850	
अंतिम शेष बैंक	5212037	
योग	**29999887**	**29999887**

As per our Audit Report of even date attached
For S.Mukherjee & Associates
Chartered Accountants
Firm Reg. No. 010603N

CA. S. Mukherjee
Partner
M.No. 087605
Place : New Delhi
Date : 19/10/20

(Rohit kr Sethi)
A.A.O

(Saurabh kr Mishra)
Deputy Secretary (Admn.)

(Dr. Jeet Ram Bhatt)
Secretary

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार, दिल्ली

शिक्षण वेतन मद के अन्तर्गत वर्ष 2019–2020 का प्राप्ति एवं भुगतान खाता

प्राप्ति	राशि 2019–20	राशि 2018–19	भुगतान	राशि 2019–20	राशि 2018–19
प्रारम्भिक शेष	10836887	4212012	वेतन एवं भत्ते	24787850	32232308
अनुदान	19163000	38900000	एल.टी.सी	0	42817
			योग	24787850	32275125
			अंतिम शेष	5212037	10836887
योग	**29999887**	**43112012**	योग	**29999887**	**43112012**

As per our Audit Report of even date attached

For S.Mukherjee & Associates

Chartered Accountants

Firm Reg. No. 010603N

CA. S. Mukherjee
Partner
M.No. 087605
Place : New Delhi
Date : 19/10/20

(Rohit kr Sethi)
A.A.O

(Saurabh kr Mishra)
Deputy Secretary (Admn.)

(Dr. Jeet Ram Bhatt)
Secretary

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार, दिल्ली

शिक्षण वेतन मद के अन्तर्गत वर्ष 2019—2020 का आय एवं व्यय खाता

व्यय	राशि 2019—20	राशि 2018—19	आय	राशि 2019—20	राशि 2018—19
वेतन एवं भत्ते	24787850	32232308	अनुदान	19163000	38900000
एल.टी.सी	0	42817			
योग	24787850	32275125	योग	19163000	38900000
व्यय से आय की अधिकता		6624875	आय से व्यय की अधिकता	5624850	
योग	24787850	38900000	योग	24787850	38900000

As per our Audit Report of even date attached

For S.Mukherjee & Associates

Chartered Accountants

Firm Reg. No. 010603N

CA. S. Mukherjee	**(Rohit kr Sethi)**	**(Saurabh kr Mishra)**	**(Dr. Jeet Ram Bhatt)**
Partner	A.A.O	Deputy Secretary (Admn.)	Secretary

M.No. 087605

Place : New Delhi

Date : 19/10/20

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार, दिल्ली

शिक्षण वेतन मद के अन्तर्गत वर्ष 2019–2020 का आर्थिक चिट्ठा

दायित्व	राशि 2019–20	राशि 2018–19	सम्पत्तियाँ	राशि 2019–20	राशि 2018–19
पूंजी संचय	10836887	4212012	बैंक	5212037	10836887
जमा व्यय से आय की अधिकता		6624875			
घटाया आय से व्यय की अधिकता	5624850				
योग	5212037	10836887	योग	5212037	10836887

As per our Audit Report of even date attached

For S.Mukherjee & Associates

Chartered Accountants

Firm Reg. No. 010603N

CA. S. Mukherjee	**(Rohit kr Sethi)**	**(Saurabh kr Mishra)**	**(Dr. Jeet Ram Bhatt)**
Partner	A.A.O	Deputy Secretary (Admn.)	Secretary

M.No. 087605

Place : New Delhi

Date : 19/12/20

दिल्ली-संस्कृत-अकादमी

(दिल्ली सरकार)

प्लॉट सं.- ५, झण्डेवालान, करोलबाग,

नई दिल्ली-११०००५

rawpixel